शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 17 अंक : 1 1 अगस्त 2024

श्रावण, विक्रम संवत् 2081

परामर्श

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

जगदीश प्रसाद सिंघल

शिवानन्द सिन्दनकेरा

जी. लक्ष्मण

महेन्द्र कुमार

❖

सम्पादक

प्रो. शिवशरण कौशिक

❖

संपादक मंडल

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

प्रो. राजेश कुमार जांगिड़

प्रो. ओमप्रकाश पारीक

डॉ. एस.पी. सिंह

भरत शर्मा

❖

प्रबन्ध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक

बसंत जिंदल

❖

प्रेषण प्रभारी : **नौरंग सहाय 'भारतीय'**

प्रकाशकीय कार्यालय
82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राजस्थान) 302001
दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली - 110053

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

वार्षिक शुल्क ₹ 300/-
दस वर्षीय शुल्क ₹ 2000/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

महारानी अहिल्याबाई होल्कर : समृद्धि और धर्मपरायणता की शिल्पकार

❑ देवराज ठाकुर

ऋषिकेश में श्रीनाथ जी के मंदिर, वृंदावन, पुरी, प्रयाग, श्रीशैलम, नासिक, पंढरपुर आदि में मंदिरों का निर्माण, गंगोत्री, हरिद्वार आदि में धर्मशालाएँ और सराय, वाराणसी में गंगा के किनारे घाट, हरिद्वार में अहिल्या घाट, अयोध्या में सरयू के किनारे घाट, मध्य प्रदेश में शिप्रा नदी पर, नासिक में गोदावरी, मथुरा में यमुना आदि पर 13 घाटों का निर्माण, वाराणसी में प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट और दशाश्वमेध घाट, शीतला घाट आदि घाटों का जीर्णोद्धार कराया। ये कदम उनके अपने धार्मिक और आध्यात्मिक झुकाव से प्रेरित थे साथ ही तीर्थयात्रियों की देखभाल और आराम सुनिश्चित करने के लिए भी थे। जीर्णोद्धार कार्य ने उन्हें पूरे देश में सम्मान और नाम दिलाया।

अनुक्रम

3.	संपादकीय	- प्रो. शिवशरण कौशिक
7.	राष्ट्रीय संस्कृति की पुनर्स्थापक एवं राम राज्य ...	- प्रो. गीता भट्ट
9.	अहिल्याबाई का कला प्रेम - वस्त्र कला	- डॉ. विजया यादव
14.	अहिल्याबाई : एक कुशल प्रशासिका	- डॉ. सुमन बाला
18.	अहिल्याबाई होल्कर का कृषि दर्शन	- डॉ. राम बाबू
21.	अहिल्याबाई भारतीय नारी शक्ति का सर्वोत्तम...	- प्रो. हितेश व्यास
23.	अहिल्याबाई का स्त्री शिक्षा चिंतन	- स्वाती
25.	अनुपम त्याग व न्याय की प्रतीक अहिल्याबाई	- डॉ. अंजनी कुमार झा
27.	अहिल्याबाई होल्कर का जीवन-वृत्त	- डॉ. कविता वा. उईके
30.	अहिल्याबाई होल्कर : स्त्री शिक्षा दर्शन	- डॉ. अंजू प्रदीप खेड़कर
32.	देवी अहिल्याबाई होल्कर का स्त्री चिंतन	- सोनाली चितलकर
34.	अहिल्याबाई होल्कर : भारत की दार्शनिक साम्राज्ञी	- डॉ. जसपाल सिंह बरवाल
36.	अहिल्याबाई होल्कर : एक प्रेरक गाथा	- डी. बी. सलगर
44.	Educational and Societal Contributions...	- Dr. Anupam Jash
49.	Ahilyabai Holkar: Her Early Life and ...	- Dr. Anjali K. Patil
52.	Ahilyabai Holkar : Malwa's Legendary ...	- Ankita Satapathy
55.	Life Sketch of Ahilyabai Holkar	- Gulshan Raina
58.	Maharani Ahilyabhai Holkar and Bharat	- Prof. TS Girish Kumar

The Great Source of Inspiration : Punyashlok Devi Ahilyabai Holkar

❑ Dr. Smita Raosaheb Deshmukh

Ahilya Bai was not unaware of the fact that her identity as a woman and a widow deemed her unfit for certain administrative and political tasks, given the time's social and cultural context. Devi Ahilya, who helped preserve and encourage India's spiritual integrity and displayed administrative ingenuity and political impartiality. Breaking the shackles of patriarchy, she took over the role of monarch after her husband's death. Her exceptional leadership skills were evident in the 30 years of peace and financial stability that her kingdom experienced under her reign.

संपादकीय

प्रो. शिवशरण कौशिक
संपादक

शैक्षिक मंथन का यह अंक भारत की महान पुण्यश्लोक माता अहिल्याबाई होल्कर को समर्पित है जिन्होंने मराठा साम्राज्य की प्रतिष्ठा के साथ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक शैक्षिक तथा राजनीतिक परम्पराओं को अगाध रूप से पुष्पित-पल्लवित करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। यही नहीं अपितु समूचे भारत वर्ष के सांस्कृतिक ताने-बाने के साथ भारत के धार्मिक व शैक्षिक पर्यावरण को सम्बल प्रदान किया। अहिल्याबाई होल्कर ने शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। अपने राज्य में विद्यार्थियों को नि:शुल्क शिक्षा देने के लिए अनेक विद्यालयों, पाठशालाओं की स्थापना की। उन्होंने धार्मिक व नैतिक शिक्षा पर अधिक बल दिया।

अहिल्याबाई होल्कर मूलत: 'सर्वजन हिताय' की अवधारणा का पालन करती थीं, इसी क्रम में उन्होंने जाति, धर्म, सम्प्रदाय, लिंग के भेदभाव को भुलाकर 'सबकी शिक्षा-सबको शिक्षा' के सिद्धान्त पर कार्य किया। यह भी उल्लेखनीय है कि अहिल्याबाई ने शिक्षकों (तत्कालीन गुरुओं) को समाज में विशेष सम्मान और उच्च स्थान दिलाने का कार्य किया। वे सदैव नारी शक्ति की प्रतीक देवी माँ दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की साधक रहीं और उन्होंने स्त्रियों में सामर्थ्य, युद्ध कौशल, विद्यार्जन तथा जीविकोपार्जन की क्षमताओं के विकास को अपना ध्येय बनाया। इसीलिए अहल्याबाई अपने समय की न केवल कुशल राजनीतिक प्रशासक थीं, अपितु वे एक सजग समाज सुधारक, विदुषी शिक्षाविद् संवेदनशील संस्कृति उद्धारक तथा दूरदर्शी अर्थशास्त्री भी थीं।

वर्तमान समय में भारत ही नहीं बल्कि विश्व की महिलाएँ समाज-जीवन के विविध क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं और सफलता के मानक स्थापित कर रही हैं। आज महिलाओं की आर्थिक स्वातन्त्र्य के साथ निर्णय लेने की क्षमता तथा आत्म-रक्षा के भाव में अद्भुत प्रगति हुई है जिससे समाज में स्त्रियों का सम्मान बढ़ा है। अहिल्याबाई होल्कर ने स्वयं शासक रहते हुए त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत किया था। राज्य की सम्पत्ति को वे ईश्वर की सम्पत्ति मानकर चलती थीं जो कि भारत की त्याग की भावना का ही विस्तार है। वर्तमान राजनीति में जिस प्रकार से पद-लोलुपता व धन लोलुपता का प्राचुर्य बढ़ रहा है, ऐसी स्थितियों में भारत की तेजस्विनी नारी सम्राट अहिल्याबाई होल्कर के जीवन मूल्य और उनकी राज्य-नीति एक अनुकरणीय उदाहरण है।

अहिल्याबाई ने नैतिकता और धार्मिकता को जीवन के दो महत्त्वपूर्ण मूल्य मानते हुए शिक्षा में समाविष्ट किया था। उनका मानना था कि नैतिकता और धार्मिकता जीवन के दो सारभूत पहलू हैं जो समाज को सही दिशा में ले जा सकते हैं। साथ ही वे शिक्षकों के सम्मान को 'गुरुता' का पर्याय मानती रहीं। उन्होंने कृषि, पशुपालन, कारीगरी तथा अन्य हस्तशिल्प की व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया था। उनके इन शिक्षा-सूत्रों को हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कौशलाधारित शिक्षा-नियमों में स्पष्टता से देख सकते हैं। कौशल विकास का यह दृष्टिकोण अहिल्याबाई को अपने समय की दूरदर्शी तथा युगद्रष्टा शासक बनाता है।

उन्होंने न केवल अपने राज्य में शिक्षा को बढ़ावा दिया बल्कि एक ऐसा आधार भी स्थापित किया जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बना। उनकी शिक्षा-नीति समावेशी थी, जिसमें सभी जाति, धर्म के लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार प्राप्त हो, विशेष रूप से उन्होंने महिलाओं तथा निम्न वर्ग के लोगों की शिक्षा के अवसर सुनिश्चित करने का भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

भारत में राजनीति और शिक्षा नीति पर अनेक महापुरुषों के विचारों को पढ़ा भी जाता है तथा उनका अनुसरण भी किया जाता है। अनेक समाज-चिन्तकों के विचारों को स्वतन्त्रता के पश्चात् बनाई गई शिक्षा-नीतियों में स्थान भी दिया गया है। अहिल्याबाई होल्कर की शिक्षा-नीति भी लोकतान्त्रिक भारत में उनके दूरदर्शी तथा समर्पित नेतृत्व का प्रमाण है। उन्होंने शिक्षा के महत्त्व को समझा और इसे समाज के विकास और सुधार के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में देखा। वे न्यायप्रिय शासक थीं। उन्होंने अपने राज्य में न्याय और शांति की स्थापना के लिए कड़े नियम बनाये। भ्रष्टाचार तथा अन्याय के विरुद्ध लिये गये कड़े निर्णय वर्तमान राजनीति के लिए प्रेरणादायी हैं।

वस्तुत: यह कहना महत्त्वपूर्ण है कि अहिल्याबाई द्वारा समूचे भारत में किये गये धार्मिक-स्थलों, धर्मशालाओं, जलस्रोतों, विद्यालयों आदि के निर्माण व जीर्णोद्धार के पीछे उनका उद्देश्य भारत को एक बनाना, भारत को समर्थ बनाना तथा भारत को समरस बनाना ही था। उनके द्वारा किए गए विकास कार्य तथा राज्य-कार्य देश में आदर्श माने जाते हैं। वे सदैव श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग की कठोर पालन करने वाली कर्म योगिनी बनी रहीं और ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' उनके जीवन का मूल मंत्र बन गया। ❑

सम्माननीय सदस्यगण !
शैक्षिक मंथन के जिन सदस्यों की दस वर्षीय सदस्यता पूर्ण हो चुकी है, वे नियमित अंक प्राप्ति हेतु कृपया शीघ्र ही नवीनीकरण करवाने का अनुग्रह करें।

महारानी अहिल्याबाई होल्कर :
समृद्धि और धर्मपरायणता की शिल्पकार

देवराज ठाकुर
अध्यापक,
एच.एस. हंबल, डोडा,
जम्मू कश्मीर

अहिल्याबाई होल्कर, जिन्हें महारानी अहिल्याबाई होल्कर के नाम से भी जाना जाता है, भारत में मराठा मालवा साम्राज्य की रानी थीं। उनका जन्म 31 मई, 1725 को हुआ था और उन्होंने 1767 से 1795 में अपनी मृत्यु तक शासन किया।

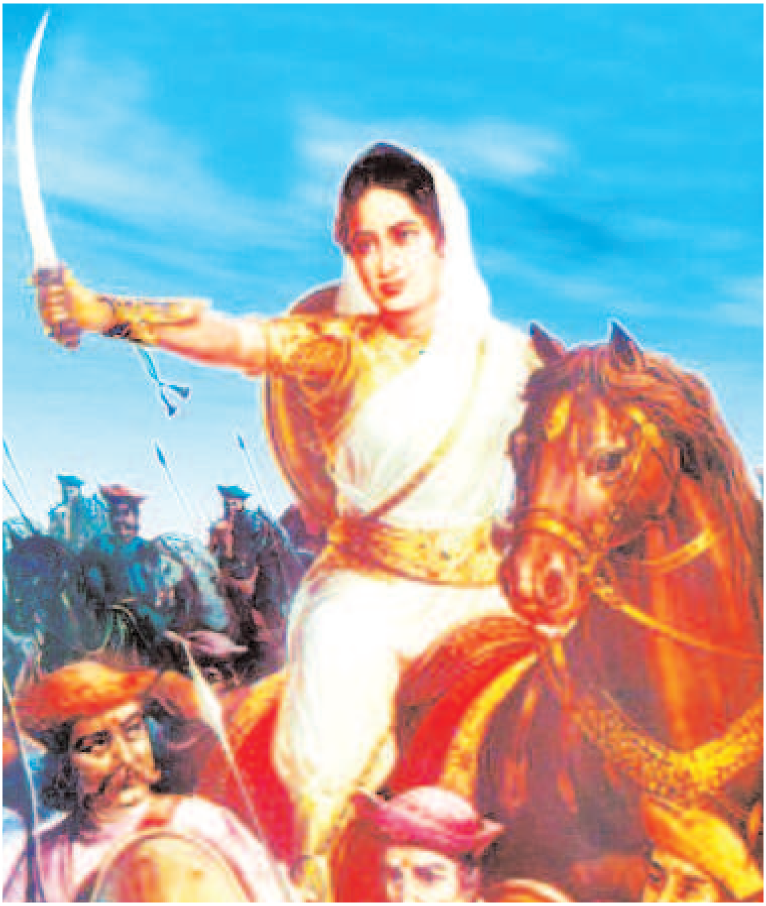

अहिल्याबाई होल्कर को उनके प्रशासनिक कौशल, करुणा और लोक कल्याण के प्रति समर्पण के कारण भारतीय इतिहास में सबसे महान शासकों में से एक के रूप में याद किया जाता है।

अपने शासनकाल के दौरान, उन्होंने बुनियादी ढाँचे में सुधार, कृषि को बढ़ावा देने और कला तथा संस्कृति का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित किया। वह हिंदू मंदिरों के संरक्षण और कई मंदिरों के निर्माण के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। भारत भर में उनके द्वारा निर्मित कई धर्मशालाएँ हैं। उनके द्वारा निर्मित सबसे प्रसिद्ध इमारतों में से एक नर्मदा नदी के तट पर महेश्वर किला है।

अहिल्याबाई होल्कर अपने न्यायपूर्ण और निष्पक्ष शासन के लिए जानी जाती थीं और उनकी प्रजा उनका बहुत सम्मान करती थी। उन्होंने अपने राज्य को बाहरी खतरों से बचाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक मजबूत और सक्षम शासक के रूप में उनकी विरासत ने उन्हें भारतीय इतिहास में सबसे सम्मानित सम्राटों में से एक के रूप में स्थान दिलाया है।

अहिल्याबाई होल्कर के शासनकाल को भारत के मालवा क्षेत्र में शांति, समृद्धि और विकास के काल के रूप में देखा जाता है। उन्हें उनकी विनम्रता, धर्मपरायणता और लोगों के कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता के लिए याद किया जाता है।

अहिल्याबाई होल्कर एक महान भारतीय रानी थीं जिनका जन्म चोंडी, अहमदनगर, वर्तमान महाराष्ट्र में हुआ था और जो अपने कुलीनता के लिए प्रसिद्ध थीं। अपने पति और बेटे की मृत्यु के बाद उन्होंने मराठा साम्राज्य पर शासन किया। उसके शासन काल के दौरान साम्राज्य द्वारा उत्पन्न राजस्व में 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई, इसलिए आप सोच रहे होंगे कि वह अन्य सभी शाही सुविधाओं के साथ आरामदायक महलों में रह रही होगी, लेकिन, यह सच नहीं है। वे एक साधारण व्यक्ति की तरह रहती थी, वे भारतीय शैली की चटाई पर फर्श पर सोती थी और लोगों ने यह भी कहा कि वह पास के तालाब में स्नान करती थी। रानी और उसके रवैये के बीच कोई संबंध नहीं था, जो कोई भी उससे मिलना चाहता है, वह उससे मिल सकता था। यहाँ तक कि एक साधारण

व्यक्ति भी उनसे मिल सकता था! अब आप सोच रहे होंगे कि वह उन सभी पैसों का क्या करती होंगी, इसका उत्तर है उन सभी हिंदू मंदिरों का जीर्णोद्धार और पुनर्निर्माण करना, जिन्हें क्रूर मुगलों ने नष्ट कर दिया था। यह उसके धर्म के प्रति प्रेम और भक्ति को दर्शाता है।

आधुनिक भारत के आरंभ में, अहिल्या बाई होल्कर मराठा साम्राज्य की वंशानुगत कुलीन रानी थीं। उन्होंने महेश्वर को होल्कर राजवंश का घर बनाया। अहिल्या बाई ने अपने पति खांडे राव होल्कर और ससुर मल्हार राव होल्कर के निधन के बाद होल्कर राजवंश के मामलों को संभाला। ब्रिटिश इतिहासकार जॉन की ने रानी को 'दार्शनिक रानी' की उपाधि दी। उन्होंने उनकी प्रशंसा में कहा : 'मालवा की दार्शनिक-रानी अहिल्याबाई होल्कर स्पष्ट रूप से व्यापक राजनीतिक परिदृश्य की एक गहरी पर्यवेक्षक थीं।

मालवा की रानी न केवल एक बहादुर रानी और कुशल शासक थीं, बल्कि एक विद्वान राजनीतिज्ञ भी थीं। अंग्रेजों और उनके एजेंडे के बारे में उनका अवलोकन कुछ ऐसा था जिसे मराठा पेशवा भी नोटिस करने से चूक गए थे। 1772 में पेशवा को लिखे एक पत्र में, उन्होंने सावधानी बरतते हुए कहा : 'बाघ जैसे अन्य जानवरों को ताकत या युक्ति से मारा जा सकता है, लेकिन एक भालू को मारना बहुत मुश्किल है। यह तभी मरेगा जब आप इसे सीधे चेहरे पर मारेंगे, नहीं तो, एक बार इसकी मजबूत पकड़ में आने के बाद; भालू अपने शिकार को गुदगुदी करके मार देगा। अंग्रेजों का यही तरीका है। और इस तरह, उन पर विजय पाना मुश्किल है।'

अहिल्याबाई अपने समय से आगे की महिला थीं, लेकिन उन्हें सबसे बड़ा अफसोस यह रहा कि उनकी बेटी अपने पति यशवंतराव फांसे की मृत्यु के बाद सती हो गई। 30 साल के शासन के बाद 70 साल की उम्र में रानी की मृत्यु हो गई और उनके सेनापति तुकोजी राव होल्कर प्रथम ने उनका स्थान लिया।

महारानी अहिल्याबाई होल्कर को लोकप्रिय रूप से लोगों की देवी या शाही माँ के रूप में जाना जाता है, जिनकी तुलना अक्सर प्लेटो की दार्शनिक 'राजा' की कल्पना से की जाती है और उन्हें पुण्यश्लोक (पुण्य या महान चरित्र वाला) की उपाधि दी जाती है। वे इंदौर के होल्कर मराठा सरदारों से संबंधित एक महान शासक और कुशल योद्धा थीं। दुख की बात है कि हमारी इतिहास की पाठ्यपुस्तकों ने काकतीय रानी रुद्रमादेवी, कित्तूर रानी चेन्नम्मा और इसी तरह के महान ऐतिहासिक पात्रों को ज़्यादा जगह नहीं दिया है।

अहिल्याबाई मंदिरों की एक महान संरक्षक थीं और उन्होंने पूरे भारत में कई घाट और मंदिर बनवाए। नए मंदिरों को जोड़ने, मौजूदा धार्मिक स्थलों में सुधार और रखरखाव की व्यवस्था की। इनमें प्रमुख हैं –

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर, गुजरात के सोमनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर का जीर्णोद्धार, घृष्णेश्वर महाराष्ट्र के औरंगाबाद में ज्योतिर्लिंग मंदिर, बिहार के गया में विष्णुपाद मंदिर तथा ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।

ऋषिकेश में श्रीनाथ जी के मंदिर, वृंदावन, पुरी, प्रयाग, श्रीशैलम, नासिक, पंढरपुर आदि में मंदिरों का निर्माण। गंगोत्री, हरिद्वार आदि में धर्मशालाएँ और सराय। वाराणसी में गंगा के किनारे घाट, हरिद्वार में अहिल्या घाट, अयोध्या में सरयू के किनारे घाट, मध्य प्रदेश में शिप्रा नदी पर, नासिक में गोदावरी, मथुरा में यमुना आदि नदियों पर 13 घाटों का निर्माण। वाराणसी में प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट और दशाश्वमेध घाट, शीतला घाट आदि घाटों का जीर्णोद्धार। ये कदम उनके अपने धार्मिक और आध्यात्मिक झुकाव से प्रेरित थे और तीर्थयात्रियों की देखभाल और आराम सुनिश्चित करने के लिए भी जीर्णोद्धार कार्य ने उन्हें पूरे देश में सम्मान और नाम दिलाया।

ऋषिकेश में श्रीनाथ जी के मंदिर, वृंदावन, पुरी, प्रयाग, श्रीशैलम, नासिक, पंढरपुर आदि में मंदिरों का निर्माण, गंगोत्री, हरिद्वार आदि में धर्मशालाएँ और सराय, वाराणसी में गंगा के किनारे घाट, हरिद्वार में अहिल्या घाट, अयोध्या में सरयू के किनारे घाट, मध्य प्रदेश में शिप्रा नदी पर, नासिक में गोदावरी, मथुरा में यमुना आदि पर 13 घाटों का निर्माण, वाराणसी में प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट और दशाश्वमेध घाट, शीतला घाट आदि घाटों का जीर्णोद्धार कराया। ये कदम उनके अपने धार्मिक और आध्यात्मिक झुकाव से प्रेरित थे साथ ही तीर्थयात्रियों की देखभाल और आराम सुनिश्चित करने के लिए भी थे। जीर्णोद्धार कार्य ने उन्हें पूरे देश में सम्मान और नाम दिलाया।

इनके अलावा उन्होंने गंगोत्री से एकत्रित गंगा जल की आपूर्ति की व्यवस्था की, जिसकी कई मंदिरों में आपूर्ति की गई जैसे सोमनाथ में ज्योतिर्लिंग, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, रामेश्वरम, घृष्णेश्वर, वैद्यनाथ, विश्वनाथ, भीमाशंकर आदि। तिरुपति में भगवान वेंकटेश्वर, केरल में पद्मनाभ स्वामी, द्वारकाधीश, पंढरपुर में पांडुरंगा मंदिर आदि हैं। राजस्थान में एकलिंगजी मंदिर, नाथद्वारा श्रीनाथ जी जैसे अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल सम्मिलित हैं।

अभी भी इंदौर में अहिल्याबाई होल्कर ट्रस्ट इस व्यवस्था की देखभाल करता है। स्वयं एक उच्च शिक्षित महिला होने के नाते उन्होंने महिला शिक्षा की वकालत की जिसे अपने समय से बहुत आगे का कदम माना जाता है। उन्होंने सती प्रथा को हतोत्साहित किया और इस अमानवीय प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई। विधवाओं को अपने पति की संपत्ति रखने में मदद की और यह सुनिश्चित किया कि उन्हें एक बेटा गोद लेने की अनुमति दी जाए।

व्यापारियों और यात्रियों के आराम के लिए कुएँ और विश्रामगृह बनवाए। सड़क के दोनों ओर पेड़ लगवाए। राज्य के राजस्व को शासक परिवार के निजी इस्तेमाल से अलग रखा। वे सभी के लिए सुलभ थीं, खास तौर पर उन लोगों के लिए जिन्हें उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, जैसे गरीब, बेघर और अनाथ। उन्होंने अपने शासन में भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं किया। लघु उद्योग को बढ़ावा दिया, बुनाई और कपड़ा उद्योग को बढ़ावा दिया। आज महेश्वर बुनाई और हथकरघा उनके प्रयासों के कारण पूरे भारत में प्रसिद्ध है।

उन्होंने कलाकारों और लेखकों को प्रोत्साहित किया। उनके समय में मोरोपंत जैसे साहित्यकार मौजूद थे। उन्होंने मूर्तिकारों और कलाकारों के लिए वेतन सुनिश्चित किया।

उनके शासन में, इंदौर एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ और आज मध्य प्रदेश की वित्तीय राजधानी के रूप में खड़ा है। उनकी सैन्य और कूटनीतिक कुशलता भी जानी जाती है। उन्होंने मालवा की राजधानी इंदौर (जो भौगोलिक दृष्टि से सभी तरफ से खुला था) से महेश्वर (नर्मदा नदी के तट पर अधिक रणनीतिक लाभ के लिए) स्थानांतरित की। महेश्वर प्रशासनिक केंद्र बना रहा और इंदौर को वाणिज्यिक केंद्र के रूप में विकसित होने दिया।

वे आसन्न ब्रिटिश खतरे को भांप सकती थी और पेशवा को संभावित ब्रिटिश खतरे की चेतावनी दे सकती थी। 1765 में उनके ससुर द्वारा लिखे गए एक पत्र से उनकी सैन्य और युद्ध क्षमताओं का संकेत मिलता है। उन्होंने पहाड़ी और जंगल में रहने वाले समूहों के मुद्दे को समझदारी से संभाला, जो अक्सर कारवां को निशाना बनाते थे। उन्हें कृषक के रूप में बसने के लिए राजी किया और उन्हें अपने क्षेत्र से गुजरने वाले माल पर उचित किराया वसूलने का अधिकार भी दिया।

यह भी कहा जाता है कि महारानी बहुत ही सरल और पवित्र तरीके से रहती थी। इंदौर में होल्कर महल बड़ा है, लेकिन महेश्वर में अहिल्याबाई का महल एक शाही व्यक्ति के लिए छोटा और मामूली है– यह एक पारंपरिक घर की तरह है।

उनके शासन का मॉडल, सॉफ्ट पावर (भारत भर में सांस्कृतिक प्रतीकों का सम्मान), प्रशासनिक और सैन्य कौशल दोनों को बढ़ावा देता है, जिससे उन्हें भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय स्थान प्राप्त होता है। ❑

राष्ट्रीय संस्कृति की पुनर्स्थापक एवं राम राज्य की प्रतिष्ठापक

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर

प्रो. गीता भट्ट

निदेशक,
नॉन-कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय

देवी अहिल्याबाई होलकर भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय व्यक्तित्व हैं जिन्हें आज के भारत को प्रेरणा स्रोत के रूप में आसक्त करना चाहिए। 18वीं शताब्दी में मालवा क्षेत्र को नेतृत्व देने वाली देवी अहिल्याबाई का शासन काल दृष्टान्त योग्य है। उनके तीस वर्षों (1765-1795) के शासन में, मालवा के क्षेत्र में शांति, समृद्धि और स्थायित्व की झलक थी। मुग़ल साम्राज्य के पतन और ब्रिटिश द्वारा भारत में अपने अधिकार और सत्ता के विस्तार के समय देवी अहिल्याबाई ने खतरों और आंतरिक विवादों से अपने साम्राज्य की रक्षा की और अपनी प्रजा की सुरक्षा और कल्याण को सुनिश्चित किया। बॉम्बे के गवर्नर, जॉन मैल्कम, ने अपनी पुस्तक 'ए मेमॉयर ऑफ सेंट्रल इंडिया' में अहिल्याबाई के महत्त्वपूर्ण योगदान को स्वीकारते हुए कहा कि उनकी शासन काल का युग, इतिहास का गौरवपूर्ण अध्याय था, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। अहिल्याबाई बुद्धिमत्ता, साहस और न्याय की प्रतीक थीं, जिस कारण वह अपने समकालीनों के इतर भारत की तत्कालीन भूराजनैतिक परिस्थितियों में प्रासंगिक रहीं।

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में एक समान सजगता, उनके नेतृत्व की क्षमता को रेखांकित करती है। अहिल्या बाई का अपनी प्रजा की भलाई और समृद्धि के प्रति समर्पण और मातृत्व भाव, भारतीय इतिहास में उन्हें 'लोकमाता' का स्थान देता है। भाग्य के कुठाराघात ने देवी अहिल्याबाई के जीवन में कठिन परिस्थितियों को जन्म दिया। उन्होंने अपने समक्ष पति, बेटे, बेटी और पोते को खो दिया था। इस वियोग को सह कर, देवी अहिल्या ने श्रद्धा भाव और निष्ठा से अपने राज्य की देखभाल करने की जिम्मेदारी ली।

वह मालवा राज्य को समृद्ध और सुरक्षित बनाने के ध्येय से कार्य करने लगीं। उनके शासनकाल में, इंदौर एक छोटे गाँव से समृद्ध शहर में विकसित हुआ। बाद में उन्होंने महेश्वर को राज्य की राजधानी के रूप में विकसित किया। देवी के कार्यकाल में महेश्वर न केवल व्यावसायिक गतिविधियों का केंद्र बना, बल्कि कला और संगीत को प्रोत्साहन देने, कलाकारों को आश्रय देने का स्थान बन गया। उनके राज्य के प्रांतों में पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासियों द्वारा यात्रियों को लूटकर अपनी आजीविका कमाने की घटनाऐं देवी अहिल्या के ध्यान में आई तो उन्होंने आदिवासियों को राज्य व्यवस्था का भाग बनाने के लिए, पहाड़ियों से गुजरने वाले यात्रियों की सुरक्षा करने का कार्य आदिवासियों को ही दे दिया। राज्य द्वारा इस कार्य के लिए आदिवासियों को शुल्क देने की व्यवस्था के साथ, देवी अहिल्या ने उन्हें सड़कों की रक्षा करने और अपने-अपने क्षेत्रों में चोरी किए गए सामानों को वापस करने की जिम्मेदारी लेने के बदले वन भूमि, खेती करने के लिए आवंटित की। एक उदार हृदय प्रशासिका होने के साथ, मंदरूप सिंह जैसे कुख्यात अपराधियों को दण्डित कर, अनुशासन और दण्ड के भय को देवी अहिल्या ने स्थापित किया। सामाजिक न्याय उनकी शासन के समग्र दृष्टिकोण में अन्तर्निहित था।

देवी अहिल्या का शासन प्रारूप परोपकारी था। मालवा में न्याय प्रक्रिया को निष्पक्ष और पूर्वाग्रह से मुक्त रखने के लिए, अहिल्याबाई सभी आरोपों, शिकायतों और उनसे जुड़े तथ्यों

के साथ अदालतों और मंत्रियों के समक्ष समाधान की अपेक्षा से रख देती थीं। मुखबिरों का तंत्र सभी सूचनाएँ रानी को देता था और वह स्वयं प्रजा की सुनवाई के लिए सदैव उपलब्ध रहती थीं। मालवा के सेनापति तुकाजी होलकर ने एक बार राज्य की नीति के अनुसार, इंदौर में दाविचंद नामक एक साहूकार की संपत्ति का बड़ा हिस्सा नि:संतान होने के कारण, उनकी मृत्यु के बाद जब्त कर लिया। दिवंगत साहूकार की पत्नी ने देवी अहिल्याबाई को जब अपनी दरिद्र परिस्थिति के बारे में बताया तो देवी ने तुरंत अपने सेनापति को आदेश दिया कि विधवा को राज्य की नीति से छूट मिलनी चाहिए ताकि वह निराश्रित ना हो। देवी ने ऐसे कानून को संशोधित करने का निर्णय लिया जो स्त्रियों के पारिवारिक संपत्ति पर अधिकार छीन ले।

उपरोक्त घटना के विपरीत, दो दिवंगत व्यापारियों की निसंतान विधवाओं ने देवी अहिल्या बाई को अपनी सारी संपत्ति देने के लिए राज्य से संपर्क किया। जब देवी अहिल्याबाई को विषय वस्तु से अवगत कराया गया, तो उन्होंने दोनों महिलाओं को अपने दरबार में बुलाया और उनसे स्वयं सार्वजनिक भवन बनाने, दान करने और अभावग्रस्त लोगों की मदद करने पर अपनी संपत्ति खर्च करने की सलाह दी ताकि दोनों को जीवन में संतोष और जीने का उद्देश्य मिले। उनके नैतिक बल ने राज्य के शासन को ताकत दी और राज्य अधिकारियों को न्यायपूर्ण और मानवतावादी होने के लिए प्रोत्साहित किया।

न्यायोचित दृष्टिकोण और उसके क्रियान्वयन के प्रति रानी की मुखरता उन्हें समकालीन शासकों से अलग करती थी। उनके नैतिक बल ने राज्य की शासन पद्धति को बल दिया और राज्य अधिकारियों को न्यायपूर्ण और मानवतावादी सोच रखने के लिए प्रोत्साहित किया। जिन राज्य अधिकारियों ने अनुचित माँग कर प्रजा को आसक्त किया, उन्हें रानी द्वारा सख्ती से दण्डित किया गया। जब सिरोंज शहर में शुभखेम दास नामक एक अमीर व्यापारी की नि:संतान मृत्यु हो गई तो राज्य के अधिकारी ने विधवा और उसके परिवार को तीन लाख रुपये देने की धमकी दी अन्यथा वह राज्य के हिस्से के रूप में संपत्ति जब्त कर लेगा। परिवार व्यापारी के भतीजे को गोद लेने के लिए इच्छुक थे परन्तु उन्हें अधिकारी ने अनुमति नहीं दी। जब पीड़ित परिवार देवी अहिल्या के पास पहुँचा, तो उन्होंने तुरंत संबंधित अधिकारी को पद से हटा दिया और गोद लेने की पुष्टि की। रानी अपनी प्रजा के प्रति अत्यधिक करुणा और मातृत्व का भाव रखती थीं। गर्मी के दिनों में राज्य कर्मी यात्रियों को पानी की आपूर्ति के लिए सड़कों पर तैनात रहते थे और ठंड में बड़ी संख्या में आश्रितों को कपड़े उपलब्ध कराते थे। देवी अहिल्या बाई के राज्यकर्मी महेश्वर के खेतों में काम कर रहे बैलों को पानी पिलाने के लिए तत्पर रहते थे।

देवी अहिल्याबाई भारत की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और आध्यात्म के केंद्र – धार्मिक स्थलों को जीवंत रखने के प्रति समर्पित थीं। इस परोपकार के भाव से उन्होंने न केवल बाहरी आक्रमणों से नष्ट हुए मंदिरों को पुनर्जीवित किया, बल्कि लोगों में अपनी आस्था और परम्पराओं के प्रति समर्पण की नैतिक शक्ति को उद्धृत किया। देवी अहिल्या ने विनम्रता के साथ अन्य रियासतों से भी संपर्क कर पवित्र स्थलों पर घाटों के पुनर्निर्माण, धर्मशालाओं के निर्माण का आग्रह किया।

देवी अहिल्याबाई भारत की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और आध्यात्म के केंद्र – धार्मिक स्थलों को जीवंत रखने के प्रति समर्पित थीं। इस परोपकार के भाव से उन्होंने न केवल बाहरी आक्रमणों से नष्ट हुए मंदिरों को पुनर्जीवित किया, बल्कि लोगों में अपनी आस्था और परम्पराओं के प्रति समर्पण की नैतिक शक्ति को उद्धृत किया। देवी अहिल्या ने विनम्रता के साथ अन्य रियासतों से भी संपर्क कर पवित्र स्थलों पर घाटों के पुनर्निर्माण, धर्मशालाओं के निर्माण का आग्रह किया।

1818 में केदारनाथ की यात्रा करने वाले कैप्टन टी.डी. स्टुअर्ट ने अपने संस्मरण में बताया कि जहाँ वनस्पति का कोई अवशेष नहीं था वहाँ जिस धर्मशाला में उन्होंने प्रवास किया और जलाशय का उपयोग किया वह तीर्थयात्रियों के लिए देवी अहिल्या द्वारा निर्मित था। महारानी और उनके अधिकारियों के बीच हुए पत्राचार से पता चलता है कि उन्होंने सात पवित्र शहरों सप्त-पुरी (अयोध्या, मथुरा, काशी, कांची, अवंतिका पुरी, द्वारावती) और चार-धाम (बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वरम, द्वारिका) में नए मंदिर बनाने और पुराने मंदिरों के पुनरुत्थान में योगदान दिया था। द्वारका, जगन्नाथ पुरी, प्रयाग, पुष्कर, काशी विश्वनाथ, हरिद्वार, कालहस्ती, उडिपी और रामेश्वरम उन सैकड़ों पवित्र स्थानों में प्रमुख हैं जहाँ देवी अहिल्या ने उनके रखरखाव में उदारतापूर्वक योगदान दिया। देवी अहिल्या ने 'नैमिषारण्य' मंदिर का जीर्णोद्धार किया जो उस समय एक मुस्लिम शासक 'अवध' के निजाम के राज्य का हिस्सा था।

राज्य के अभिलेखागार में उद्धृत देवी अहिल्याबाई और राज्य अधिकारी परशुराम गोसावी के पत्राचार दर्शाते हैं, कि उन्हें अयोध्या में श्री राम मंदिर परिसर के पास मंदिर बनाने के लिए भेजा गया था। देवी अहिल्या ने अयोध्या में भैरव मंदिर, नागेश्वर और सरयु घाटों के रखरखाव और निर्माण के लिए दान दिया। उन्होंने अपने उद्यम, न्यायपूर्ण शासन, धर्मनिष्ठता, नैतिक संयम, नेतृत्व की गुणवत्ता और करुणा भाव से 'राम राज्य' को आत्मसात किया। प्रसिद्ध मराठी कवि मोरोपंत ने देवी अहिल्या बाई होल्कर की तुलना पवित्र नदी गंगा के साथ की। देवी अहिल्या बाई होल्कर को इतिहास में 'अब तक के सबसे पवित्र और अनुकरणीय शासकों में से एक' के रूप में सराहा गया। मध्य भारत में मालवा साम्राज्य की रानी की आभा, उपस्थिति और शासन ऐसा था कि उन्हें सभी 'देवी' के रूप में पूजते थे – देवत्व का अवतार मानते थे। उनकी त्रि जन्म शताब्दी पूरे देश भर में मनाई जा रही है। आइए, हम इस अवसर पर देवी अहिल्याबाई होल्कर के दूरदर्शी और उत्कृष्ट प्रशासक होने के साथ, मानवीय मूल्यों की द्योतक होने वाले जीवन से प्रेरणा, मार्गदर्शन लेते हुए राष्ट्र को प्रेरित करें। ❑

अहिल्याबाई का कला प्रेम - वस्त्र कला

डॉ. विजया यादव
एसोसिएट प्रोफेसर
स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज,
गुजरात यूनिवर्सिटी,
अहमदाबाद, गुजरात

भारत के प्रत्येक प्रांत में एक अनूठी शिल्प परंपरा है, जिसमें वे स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हैं। चूँकि इस क्षेत्र में बड़ी मात्रा में श्रम की आवश्यकता होती है, यह क्षेत्र देशभर में लाखों कारीगरों को रोजगार प्रदान करता है। कारीगरों और श्रमिकों ने हस्तशिल्प को पूर्ण आजीविका के रूप में अपनाया है, जबकि कृषि में लगे गरीब लोग हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र को आय के वैकल्पिक स्रोत के रूप में अपनाया है। कृषि में कमी के दौरान उन्हें इस क्षेत्र से रोजगार मिलता है। किसान परिवारों में पुरुषों के खेत छोड़ने के बाद महिलाएँ भी इस क्षेत्र में शामिल हो जाती हैं और लाभकारी रोजगार के साधन के रूप में इसका लाभ उठाती हैं। हस्तशिल्प और कपड़ा उद्योग ग्रामीण भारत में आजीविका का एक प्रमुख स्रोत है।

यह क्षेत्र विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें निर्यात की बहुत उज्ज्वल संभावनाएँ हैं। अपने अनूठे डिजाइन और रंगीन बनावट के कारण भारतीय हस्तशिल्प और वस्त्रों की विदेशों में काफी माँग है। भारत के हस्तशिल्प उत्पाद, जैसे शॉल, आभूषण, घेला, लकड़ी का काम और कढ़ाई वाली वस्तुएँ, अंतरराष्ट्रीयस्तर पर बहुत लोकप्रिय हैं।

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास के प्रसिद्ध मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता के स्थलों पर भी हस्तशिल्प पाए गए हैं। नाचती हुई लड़की की मूर्तियाँ, आभूषण आदि से पता चलता है कि हस्त शिल्प सिंधुघाटी सभ्यता के समय से ही भारतीय परंपरा का हिस्सा रहा है और शायद पहले भी रहा हो। लगातार राजवंशों और राजवंशों ने इस शानदार परंपरा को आगे बढ़ाया, जिसमें विशेष सामग्रियों का उपयोग कर के व्यक्तिगत शैली का स्पर्श जोड़ा गया, जिसमें सहारनपुर की कढ़ाई का काम, आंध्रप्रदेश का भिदरी काम, इंडो-फारसी शैली की पुष्प व्यवस्था, कांचीपुरम रेशम में पाए जाने वाले बढ़िया सुई वर्क शामिल थे। राजस्थान की कठपुतलियाँ (कठपुतली) आदि भी शामिल हैं।

भारतीय कपड़ा उद्योग की विरासत सिंधुघाटी सभ्यता से मिलती है, जहाँ कपड़ा बुनने के लिए घर में बने ऊनी करघों का इस्तेमाल किया जाता था। हर क्षेत्र की एक अलग पोशाक-परंपरा होती है। दक्षिण में काचीपुरम रेशम की शानदार साड़ियाँ, उत्तर-पूर्व की मुगा और टसर रेशम, शानदार बनारसी साड़ियाँ, चंदेरी सूती और रेशम, कश्मीर की पश्मीना और शाहतुश शॉल, राजस्थान और कच्छ के बढ़िया कढ़ाई वाले कपड़े, पंजाब की फुलकारी का काम आदि कहानी कहते हैं। भारतीय कपड़ा उद्योग की गौरवशाली परंपरा का भारतीय रेशम और जूट के कपड़े दुनियाभर में प्रसिद्ध हैं और विश्वस्तर पर इनकी काफी माँग है।

यह लोगों की दैनिक जरूरतों का ख्याल रखता है। और उनकी सुंदरता की चाहत को पूरा करती है। जो चट्टानों पर नक्काशी करके अपनी भावनाओं को

रचनात्मक ढंग से व्यक्त करते थे। इस कला ने लोक परंपराओं और सौंदर्य की अभिव्यक्ति में कौशल, तकनीक और विभिन्न कलारूपों के साथ सदियों-सदियों का सफर तय किया है।

भारत के कलाकारों को हमेशा शिल्प कौशल, डिजाइन और रंग के बेहतर और सुंदर उपयोग के लिए पहचाना जाता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई ईस्वी सन् की है। दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में भी, भारतीय कलाकारों की उत्कृष्टता दुनियाभर में स्थापित और मान्यता प्राप्त थी।

उस समय कुटीर उद्योग ने ग्रामीण कारीगरों को रोजगार उपलब्ध कराने के साथ-साथ समानांतर ग्रामीण अर्थव्यवस्था बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अब भी पिछड़े वर्ग के क्षेत्र और कुटीर क्षेत्र कारीगरों की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं, रोजगार प्रदान करते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएँ और समाज के कमजोर वर्ग के लोग शामिल हैं। हस्तशिल्प को उचित ही लोगों की कला कहा जाता है। भारत में यह कला केवल एक उद्योग के रूप में बढ़ रहा है। ऐसा प्रयास महारानी अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में किया था।

अहिल्याबाई

भारत में कई महिला शासक, योद्धा महिलाएँ और कवि रानियाँ हुई हैं, लेकिन अहिल्याबाई होल्कर अपने 30 साल लंबे शासनकाल के दौरान अपनी उपलब्धियों के लिए किसी भी अन्य की तुलना में अधिक स्नेह और सम्मान पाती हैं। वह अपनी धर्मपरायणता, अपनी प्रशासनिक क्षमता, अपने सभी लोगों में गहरी रुचि और पूरे देश में पवित्र स्थलों पर असाधारण मात्रा में निर्माण के लिए विख्यात थीं। 18 वीं शताब्दी में मालवा पर उनके शासन को आज भी उदार और प्रभावी सरकार के एक मॉडल के रूप में उद्धृत किया जाता है।

अहिल्याबाई का जन्म 1725 में महाराष्ट्र के भिड़ जिले के चोंडी गाँव में हुआ था। उनके पिता, मानकोजी शिंदे, गाँव के पाटिल थे, जो गौरवशाली धनगर समुदाय के सदस्य थे। तब महिलाएँ स्कूल नहीं जाती थीं, लेकिन अहिल्याबाई के पिता ने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया। उनकी माँ भी एक पढ़ी-लिखी और धर्मपरायण महिला थीं।

अहिल्याबाई ने कभी भी पर्दा नहीं किया, बल्कि वह रोजाना सार्वजनिक रूप से उपस्थित रहती थीं और जिस किसी को भी उनकी बात सुनने की जरूरत होती, वह हमेशा उनके लिए उपलब्ध रहती थीं। प्रशासक और इतिहासकार, सर जॉन मैल्कम ने उनकी मृत्यु के लगभग 40 साल बाद उनकी क्षमताओं के बारे में बहुत उत्साह से लिखा : ''उनकी सरकार का पहला सिद्धांत मध्यम मूल्यांकन और ग्राम अधिकारियों और भूमि के मालिकों के मूल अधिकारों के लिए लगभग पवित्र सम्मान रहा है। उन्होंने प्रत्येक शिकायत को व्यक्तिगत रूप से सुना; और हालांकि उन्होंने लगातार मामलों को इक्विटी और मध्यस्थता की अदालतों में भेजा, और निपटान के लिए अपने मंत्रियों के लिए, वह हमेशा उपलब्ध रहती थी। न्याय के वितरण से जुड़े सभी बिंदुओं पर उसकी कर्तव्य की भावना इतनी मजबूत थी कि अपील करते समय सब से महत्त्वहीन मामलों की जाँच में उसे न केवल धैर्यवान बल्कि निडर के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उसके निर्णय पर कायम थे।'' एक समकालीन अमेरिकी इतिहासकार, स्टीवर्ट गॉर्डन कहते हैं कि एक शासक के रूप में उनकी क्षमता का एक निश्चित प्रमाण यह था कि मालवा में उनके क्षेत्र नहीं थे। एक शासक के रूप में उनकी क्षमता का प्रमाण यह था कि चारों ओर युद्धों के बावजूद, उनके शासनकाल के दौरान मालवा में उनके क्षेत्रों पर स्थानीय लड़ाइयों द्वारा हमला नहीं किया गया था या उन्हें बाधित नहीं किया गया था। गॉर्डन के अनुसार, ''अहिल्याबाई का शासन काल 18वीं शताब्दी के सब से स्थिर शासनकाल में से एक था।'' और मैल्कम कहते हैं कि उन्होंने अपने पूरे शासनकाल में, लगभग उस आदमी के लिए, मंत्रियों और प्रशासकों का एक ही समूह रखा। अहिल्याबाई की उपलब्धियों में इंदौर का एक छोटे से गाँव से एक समृद्ध और सुंदर शहर के रूप में विकास शामिल था; हालाँकि, उनकी अपनी राजधानी निकटवर्ती महेश्वर में थी, जो नर्मदा नदी के तट पर एक शहर था। उन्होंने मालवा में किले और सड़कें भी बनवाईं, त्योहारों को प्रायोजित किया और कई हिंदू मंदिरों में नियमित पूजा के लिए दान दिया। मालवा के बाहर, उन्होंने हिमालय से लेकर दक्षिण भारत के तीर्थ स्थलों तक फैले क्षेत्र में दर्जनों मंदिर, घाट, कुएँ, तालाब और विश्राम गृह बनवाए। भारतीय संस्कृति कोश में काशी, गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, हरद्वार, कांची, अवंती, द्वारका, बद्रीनारायण, रामेश्वर और जगनाथपुरी को उनके द्वारा अलंकृत स्थलों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। जब

महेश्वरी साड़ियों का इतिहास लगभग 250 वर्ष पुराना है। होल्कर वंश की महान शासक देवी अहिल्या बाई होल्कर ने महेश्वर में सन 1767 में कुटीर उद्योग स्थापित करवाया था। गुजरात एवं भारत के अन्य शहरों से बुनकरों के परिवारों को उन्होंने यहाँ लाकर बसाया तथा उन्हें घर, व्यापार आदि की सुविधाएँ प्रदान कीं। पहले केवल सूती साड़ियाँ ही बनाई जाती थीं, परन्तु बाद के समय में सुधार आता गया तथा उच्च गुणवत्ता वाली रेशमी तथा सोने व चांदी के धागों से बनी साड़ियाँ भी बनाई जाने लगीं।

अहिल्याबाई ने बैंकरों, व्यापारियों, किसानों और खेती करने वालों को समृद्धि के स्तर तक बढ़ते देखा तो उन्हें भी खुशी हुई, लेकिन उन्होंने यह नहीं सोचा कि उनका उस धन पर कोई वैध दावा है, चाहे वह करों के माध्यम से हो या सामंती अधिकार के माध्यम से। वास्तव में, उसने अपनी सभी गतिविधियों को एक खुशहाल और कानूनी लाभ से वित्त पोषित किया होगा। अहिल्याबाई होल्कर की स्मृति का सम्मान करने के लिए, 1996 में इंदौर के प्रमुख नागरिकों ने उनके नाम पर एक पुरस्कार की स्थापना की, जो प्रतिवर्ष एक उत्कृष्ट सार्वजनिक हस्ती को दिया जाता था। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने पहला पुरस्कार नानाजी देशमुख को दिया।

महेश्वर में अहिल्याबाई की राजधानी साहित्यिक, संगीत, कलात्मक और औद्योगिक उद्यम का स्थल थी। उन्होंने प्रसिद्ध मराठी कवि मोरोपंत और महाराष्ट्र के शाहीर अनंत फंडी का मनोरंजन किया और संस्कृत विद्वान खुशाली राम को भी संरक्षण दिया। शिल्पकारों, मूर्तिकारों और कलाकारों को उनकी राजधानी में वेतन और सम्मान मिलता था, और उन्होंने महेश्वर शहर में एक कपड़ा उद्योग भी स्थापित किया था।

महिलाओं के लिए आशा, कौशल और हस्तकला

अहिल्या बाई धीरे-धीरे अपनी प्रजा के दैनिक जीवन से ही जन-जन के कवि बन गये। जैसे-जैसे उन्होंने लोगों की शिकायतें सुनीं, उनकी निडरता और भी मजबूत हो गई कि उनके राज्य में हर परिवार को सम्मान के साथ आजीविका मिलेगी। उन्होंने लोगों से सीखा कि किस तरह से शासन सुनिश्चित किया जा सकता है। उसे पता चला कि लगभग हर कोस की दूरी पर गुरहानपुर नामक एक नगर है, जो हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने हथकरघे के साथ बुरहानपुर और पास में स्थित माडू के कुशल हथकरघा कारीगरों

को भेजा। हस्तशिल्प और विभिन्न अनुभवों का वर्णन करते हुए दो दिलचस्प बातें कही जानी चाहिए। पहला उस महिला से है जिसने इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है। इस महिला ने अपने साथ हजारों पुरुषों और महिलाओं को आजीविका मुहैया कराने का सपना देखा था। जहाँ तक अहिल्याबाई की बात है, वह महाराष्ट्र के बीड नामक कस्बे की मूल निवासी थीं।

मध्यप्रदेश के महेश्वर में अहिल्याबाई महल के पास में ही रीवा सेंटर है। जो देश के लगभग 65 लाख हथकरघा बुनकरों के लिए आशा की किरण है। 1795 में महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने अपने राज्य के लोगों को स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए यहाँ बुनाई की कला सीखी। होल्कर राज्य के शासक महाराजा मल्हार राव ने राज्य के दौरे के दौरान तीज त्योहार के दौरान उन्हें देखा। महाराजा को एहसास हुआ कि अहिल्याबाई एक कुशल महिला थीं, इसलिए उन्होंने अहिल्याबाई को अपने छोटे बेटे खंडेराव होल्कर की पत्नी के रूप में चुना। कुछ वर्ष बाद खंडेराव होल्कर की अचानक मृत्यु हो गई। युवा अहिल्याबाई सती होने को तैयार थीं। जब वह अग्नि में प्रवेश करने को हुआ तो महाराजा ने उसे रोक दिया। उन्होंने कहा, ''अहिल्या, मेरी बेटी, तुम्हें जीवित रहना चाहिए, महेश्वर और हमारे राज्य के उत्तराधिकारियों को तुम्हारी ज़रूरत है'', इसलिए अहिल्याबाई होलकर अपने बेटे की संरक्षक बन गईं और 1767 से 1795 तक अप्रत्यक्ष रूप से महेश्वर पर शासन किया।

उन्होंने हथकरघा पर माहेश्वरी साड़ी बनाई। वर्तमान में यहां लगभग 1750 हस्तशिल्प हैं। अहिल्याबाई ने उन्हें महेश्वर के पुरुषों और महिलाओं को हथकरघा कातने और उससे वस्त्र बनाने की कला सिखाने का आदेश दिया। महेश्वर के लोग कौशल हासिल करने में तेज थे, लेकिन उन्हें बर्टनपुर और मांडू से एक विशेष और अभिनव उत्पाद का उत्पादन करने की आवश्यकता थी, जो उनकी यू एस पी यानी प्रमुख विक्रय बिंदु बन सके। उन्हें बुनाई की एक नई किस्म विकसित करने की जरूरत थी, जो महेश्वर की विशेष कला के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करे, अहिल्याबाई ने अपने किले के तटबंध से बहती हुई नर्मदा नदी की साफ और नीलीधारा देखी।

यहाँ के बुनकर ऊर्जावान और नवीन विचारों से भरपूर हैं। उन्हें अपने कौशल के

माध्यम से सम्मान के साथ जीविकोपार्जन करने पर गर्व है। इनमें से कुछ अपना काम करते हैं तो कुछ कुशल बुनकरों के लिए काम करते हैं। लगभग सभी बुनकरों के पास अपने स्वयं के अनूठे डिज़ाइन होते हैं। इस प्रकार महारानी अहिल्याबाई ने 1765 में स्थायी रोजगार का साधन उपलब्ध कराया। अहिल्याबाई के दर्शन महेश्वर शहर के विभिन्न घाटों, मंदिरों, उनके शाही महल और विशिष्ट पत्थर की नक्काशी में हर जगह देखे जा सकते हैं जो बाजार के बुनकरों के लिए एक डिजाइन मार्गदर्शक बन गए हैं। लोग इस डिज़ाइन का उपयोग कर के माहेश्वरी साड़ियाँ बनाते थे। महेश्वर को महलों और मंदिरों की अनूठी वास्तुकला पर गर्व है जिसके माध्यम से प्रजावत्सल महारानी अपनी प्रजा को दैनिक रोटी प्रदान करती थीं। आज 250 साल बाद भी ये सभी डिज़ाइन महेश्वर के लोगों के लिए मौजूद और प्रेरणादायक हैं, जिसके कारण महेश्वर के लोगों को अब भूखा नहीं सोना पड़ता है। तीन दशक पहले महेश्वर में 25 से भी कम रेलिंग बची थीं। शाही परिवार के वंशज रिचर्ड होल्कर ने 1979 में रीवा सोसाइटी की स्थापना की, जब बुनकरों ने शहर छोड़ दिया और आजीविका कमाने के लिए अन्य केंद्रों में चले गए। इसका उद्देश्य महेश्वर के मृत ताड़ क्षेत्र को जीवन देना था। उन्होंने देश का दौरा किया और होलकर के पारंपरिक डिजाइनों के संरक्षण का प्रदर्शन किया। इसके साथ ही, उन्होंने नौवारी (नौगज) साड़ियों को छह गज में बदल दिया, जिसके बाद खरीद के ऑर्डर आने लगे। महेश्वर में वर्तमान में 1750 हैंडहोल्ड हैं।

महारानी द्वारा शुरू की गई परंपरा को उनके वंशजों ने कायम रखा है। सेंटर के परिसर में महिलाएँ हथकरघा का काम करती हैं, 120 श्रमिकों में से 60 प्रतिशत महिलाएँ हैं। उनके बच्चे अस्तबल में झूलते हैं। इसके अलावा, रेवा एक स्कूल भी चलाती है। सोसायटी के परिसर से सटा हुआ अहिल्या स्कूल है, जहाँ सभी बुनकरों के बच्चे पढ़ सकते हैं। यहाँ दोपहर का भोजन उपलब्ध कराया जाता है। यहाँ एक स्वास्थ्य केंद्र है जहाँ डॉक्टर और आने वाले विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करते हैं। सोसायटी प्रत्येक कार्यकर्ता को दो कमरे का घर और दो कॉटेज प्रदान करती है। वे सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक काम करते हैं और रुपये कमाते हैं। 100 से 150 रुपये कमाता है। सेवा निवृत्ति पर या विकलांग हो जाने पर उसे 500 से 1000 रुपये की पेंशन मिलती है।

शिल्पकला

ऐसी मान्यता है कि अहिल्या बाई होल्कर के विशेष आग्रह के अनुसार यहाँ के बुनकर (साड़ी बनाने वाले) इन साड़ियों पर तथा अन्य वस्त्रों पर महेश्वर किले की दीवारों पर बनाई गई डिज़ाइन बनाते हैं। महेश्वरी साड़ियों की परंपरा को जीवित रखने के लिए तथा इस कला के विकास के लिए इंदौर राज्य के अंतिम शासक महाराजा यशवंतराव होल्कर के इकलौते पुत्र युवराज रिचर्ड ने 'रेवा सोसाइटी' नामक इस संस्था का निर्माण किया जो आज भी महेश्वर किले में ही महेश्वरी साड़ियों का निर्माण करती है। वर्तमान में लगभग 1000 परिवार इस कुटीर उद्योग से जुड़े हुए हैं।

इतिहास

महेश्वरी साड़ियों का इतिहास लगभग 250 वर्ष पुराना है। होल्कर वंश की महान शासक देवी अहिल्या बाई होल्कर ने महेश्वर में सन 1767 में कुटीर उद्योग

स्थापित करवाया था। गुजरात एवं भारत के अन्य शहरों से बुनकरों के परिवारों को उन्होंने यहाँ लाकर बसाया तथा उन्हें घर, व्यापार आदि की सुविधाएँ प्रदान कीं। पहले केवल सूती साड़ियाँ ही बनाई जाती थीं, परन्तु बाद के समय में सुधार आता गया तथा उच्च गुणवत्ता वाली रेशमी तथा सोने व चांदी के धागों से बनी साड़ियाँ भी बनाई जाने लगीं।

अहिल्याबाई का योगदान

महेश्वर में निर्मित होने वाली महेश्वरी साड़ियाँ देशभर में प्रसिद्ध हैं। देवी अहिल्याबाई की राजधानी बनने के बाद महेश्वर ने विकास के कई अध्याय देखे। एक छोटे से गाँव से इंदौर राज्य की राजधानी बनने के बाद अब महेश्वर को बड़ी तेज़ी से विकसित किया जा रहा था। सामाजिक, धार्मिक, भौतिक तथा सांस्कृतिक विकास के साथ ही साथ देवी अहिल्याबाई ने अपनी राजधानी को औद्योगिक रूप से समृद्ध करने के उद्देश्य से अपने यहाँ वस्त्र निर्माण प्रारंभ करने की योजना बनाई। उस समय पूरे देश में वस्त्र निर्माण तथा हथकरघा में हैदराबादी बुनकरों का कोई जवाब नहीं था। अतः देवी अहिल्याबाई ने हैदराबाद के बुनकरों को अपने यहाँ महेश्वर में आकर बसने के लिए आमंत्रित किया तथा अपना बुनकरी का पुश्तैनी कार्य यहीं महेश्वर में रहकर करने का आग्रह किया। अंततः देवी अहिल्या के प्रयासों से हैदराबाद से कुछ बुनकर महेश्वर आकर बस गए तथा यहीं अपना कपड़ा बुनने का कार्य करने लगे। इन बुनकरों के हाथ में जैसे जादू था, वे इतना सुन्दर कपड़ा बुनते थे की लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे। इन बुनकरों को प्रोत्साहित करने के लिए देवी अहिल्याबाई इनके द्वारा निर्मित वस्त्रों का एक बड़ा हिस्सा स्वयं ख़रीद लेती थीं, जिससे इन बुनकरों को लगातार रोजगार मिलता रहता था। इस तरह ख़रीदे वस्त्र महारानी अहिल्याबाई स्वयं के लिए, अपने रिश्तेदारों के लिए तथा दूर-दूर से उन्हें मिलने आने वाले मेहमानों तथा

आगंतुकों को भेंट देने में उपयोग करती थीं। इस तरह से कुछ ही वर्षों में महेश्वर में निर्मित इन वस्त्रों, ख़ासकर महेश्वरी साड़ियों की ख्याति पूरे भारत में फैलने लगी, तथा अब महेश्वरी साड़ी अपने नाम से बहुत दूर-दूर तक मशहूर हो गई।

शिल्प व नक्काशी

इन बुनकरों से देवी अहिल्याबाई का विशेष आग्रह होता था कि वे इन साड़ियों पर तथा अन्य वस्त्रों पर महेश्वर किले की दीवारों पर बनाई गई डिज़ाइनें बनाएँ और ये बुनकर ऐसा ही करते थे। आज भी महेश्वरी साड़ियों की किनारियों पर महेश्वर किले की दीवारों के शिल्प वाली डिज़ाइनें मिल जायेंगी। देवी अहिल्याबाई चली गईं, राज रजवाड़े चले गए, सब कुछ बदल गया, लेकिन जिस तरह आज भी महेश्वर का किला अपनी पूरी शानो-शौकत से नर्मदा नदी के किनारे खड़ा है, उसी तरह महेश्वर की वे प्रसिद्ध साड़ियाँ आज भी अपने उसी स्वरूप उसी निर्माण पद्धति, उसी सामग्री तथा उसी रंग व रूप एवं डिज़ाइन में निर्मित होती हैं तथा महेश्वर के अलावा देश के अन्य कई हिस्सों में महेश्वरी साड़ी के नाम से बहुतायत में बिकती हैं। महेश्वरी साड़ियों की परंपरा को जीवित रखने के लिए तथा इस कला के विकास के लिए इंदौर राज्य के अंतिम शासक महाराजा यशवंत राव होल्कर के इकलौते पुत्र युवराज रिचर्ड ने 'रेवा सोसाइटी' नामक एक संस्था का निर्माण पहले केवल सूती साड़ियाँ ही बनाई जाती थीं, लेकिन धीरे-धीरे इसमें सुधार आता गया और उच्च गुणवत्ता वाली रेशमी साड़ियाँ आदि भी बनाई जाने लगीं।

सेलिब्रिटी जेसे लोग आमिर खान ने साड़ी बुनकर हुकम सिंह से साड़ी खरीदकर इस वस्त्र कला को प्रोत्साहित किया और स्मृति के रूप में, पारम्परिक रूप में नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए ऐसे हाई प्रोफाइल लोग ऊँची कीमत से खरीदकर पिछड़े वर्ग के बुनकरों को प्रोत्साहित करते हैं।

उपसंहार

भारत 2013-14 से दुनिया में हथकरघा कालीन का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक रहा है। फिलहाल दुनिया के कुल निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत है। जबकि हस्तशिल्प क्षेत्र ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में कारीगरों की एक विस्तृत शृंखला को रोजगार प्रदान करता है और महत्त्वपूर्ण विदेशी मुद्रा प्रदान करता है, यह अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करता है। ❑

अहिल्याबाई : एक कुशल प्रशासिका

डॉ. सुमन बाला

सह आचार्य,
हरिभाऊ उपाध्याय महिला
शिक्षक महाविद्यालय,
हटूँडी, अजमेर, राजस्थान

भारतवर्ष के इतिहास पर दृष्टि डालें तो अनेक ऐसी वीरांगनाओं के चित्र मानस पटल पर उभरते हैं जिन्होंने अपनी कर्तव्यपरायणता से इतिहास के पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। हमारा इतिहास ऐसे अनेक नारी पात्रों के महती योगदान से भरा हुआ है। इन वीरांगनाओं में किसी ने अपनी वीरता और किसी ने अपनी कर्तव्यपरायणता और निष्ठा, किसी ने आध्यात्मिकता तो किसी ने उच्च जीवन मूल्यों, किसी ने अस्तित्व की रक्षा, तो किसी ने अपने कुल गौरव की रक्षा, किसी ने त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति के रूप में ऐसे आदर्श स्थापित किए और इतिहास में अमर हो गई। ऐसे ही अनेक नारी पात्रों के उल्लेखनीय योगदान से हमारा इतिहास भरा हुआ है। इन वीरांगनाओं में कुछ नारी पात्र तो ऐसे हैं जिनके सदृश विश्व में कहीं भी ऐसे उदाहरण देखने को नहीं मिलते हैं। ऐसी ही एक वीरांगना अहिल्याबाई होल्कर हुई हैं जो भारतीय इतिहास के नारी पात्रों में एक दिव्य ज्योति सदृश हैं और जो सदैव भारतीय इतिहास को आलोक प्रदान करती रहेंगी। अहिल्याबाई होल्कर ने अति सामान्य परिवार में जन्म लेकर अपनी बहादुरी, समझ-बूझ, मानवीय मूल्यों और परिश्रम से न केवल राजवंश की प्रतिष्ठा को शिखर पर पहुँचाया अपितु अपने राज्य के बाहर हिमालय से लेकर दक्षिण भारत तक दर्जनों मंदिर, घाट, कुएँ, बावड़ियाँ और धर्मशालाएँ बनवाकर जनहित के कार्य किए।

आज से 300 वर्ष पूर्व अहिल्याबाई होल्कर ने मराठा साम्राज्य के मालवा राज्य पर 28 वर्षों तक कुशल शासन किया। उनका शासनकाल आज भी इतिहास में प्रभावी और परोपकारी शासन के 'रोल मॉडल' के रूप में माना जाता है। 18वीं शताब्दी में मराठा साम्राज्य पेशवा नेतृत्व में तंजावुर से पेशावर तक फैला हुआ था जिसके उत्तरी भाग के इंदौर में होलकर के मजबूत नेतृत्व में साम्राज्य बहुत फला-फूला। मल्हाररावहोलकर मध्य भारत में मालवा के पहले मराठा सूबेदार और इस राज्य के संस्थापक थे। इसके पश्चात इनकी पुत्रवधू अहिल्याबाई होल्कर ने मालवा पर शासन किया और अपने कुशल एवं परोपकारी शासन की बदौलत 'पुण्यश्लोका अहिल्याबाई' कहलाई, जो दोष रहित चरित्र के लिए प्रयोग किया जाता है। अहिल्याबाई होल्कर में नारी के वे समस्त गुण थे जो एक नारी को नारायणी बनाते हैं। वैसे तो पुरुष व नारी अपने-अपने नैसर्गिक गुण लेकर जन्म लेते हैं और इन गुणों को विकसित कर ही वे सशक्त बनते हैं। अहिल्याबाई होल्कर में नारी के वह सभी गुण थे जिनका वर्णन गीता के श्लोक में किया गया है। यथा -

'कीर्ति: श्री वाक्चनारीणाम,
स्मृति मेधाधृति क्षमा''

इस श्लोक में वर्णित नारी का पहला गुण कीर्ति और यश अहिल्याबाई होल्कर में था। उनके 28 वर्षों के शासनकाल में मालवा राज्य की ख्याति संपूर्ण भारतवर्ष में फैल गई। जिस समय अहिल्याबाई होल्कर ने राज सिंहासन संभाला, उस समय इंदौर एक छोटा सा नगर था परंतु कुछ समय पश्चात ही उनके कुशल नेतृत्व में यह एक उत्तम नगर बन गया। अहिल्याबाई की कीर्ति सुनकर देशांतरों से अनेक व्यापारी अनेक प्रकार की वस्तुएँ यहाँ लाते और बेचते थे। अहिल्याबाई इन बाहर से आए हुए लोगों का भी विशेष ध्यान रखती थी और उनकी वस्तु के अनुसार व्यापार की व्यवस्था उनके राज्य में होती थी। इससे

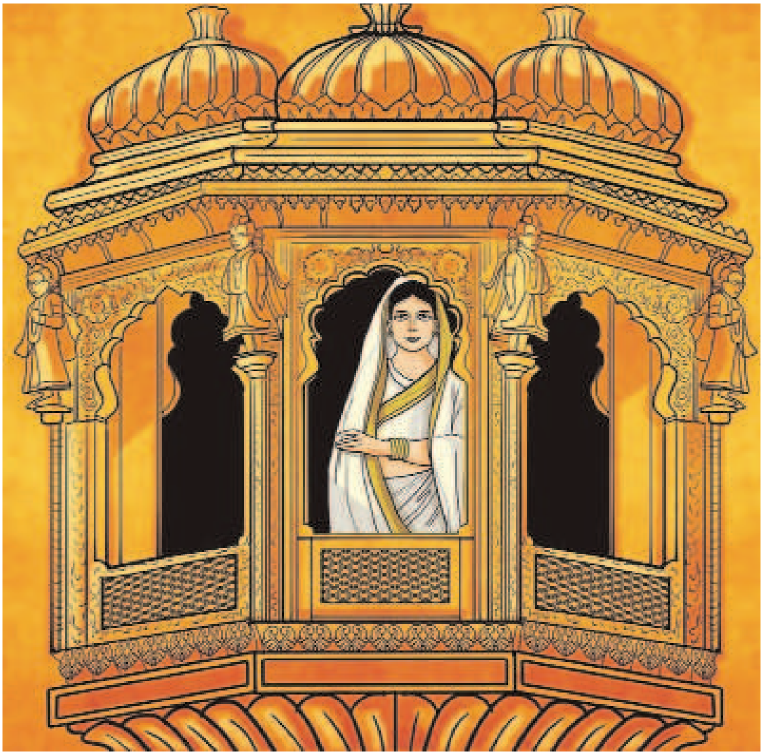

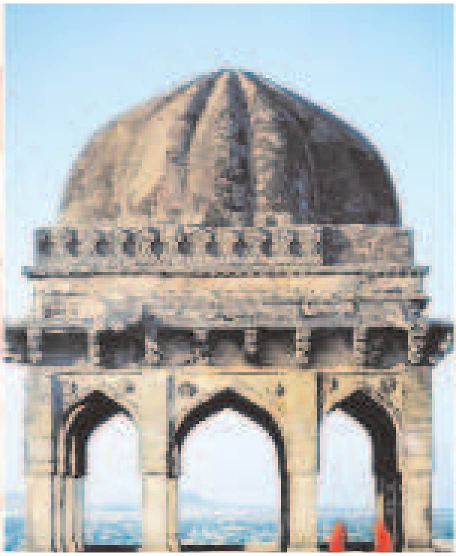
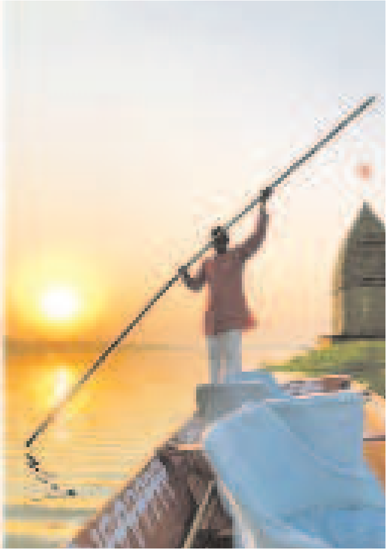

उनके राज्य की उन्नति और वाणिज्य की वृद्धि लगातार हुई और इसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी अपनी पुस्तक 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लिखा था ''अहिल्याबाई का शासन उस काल का प्रसिद्ध शासन था जिसमें निपुण आदेश एवं अच्छा शासन प्रचलित था और लोग समृद्ध थे। वह बहुत योग्य शासिका और व्यवस्थापिका थी जो अपने काल में बहुत अधिक सम्माननीय थी। अपनी मृत्यु के बाद भी वह कृतज्ञ लोगों द्वारा एक संत के रूप में मानी जाती थी।''

गीता के श्लोक के अनुसार नारी का दूसरा गुण श्री यानी लक्ष्मी, धन संपदा है। हालांकि अहिल्याबाई जितना न्याय करने से प्रसन्न और संतुष्ट रहती थी उतना वह धन संग्रह करके प्रसन्न नहीं थी फिर भी अहिल्याबाई मराठा साम्राज्य की सबसे धनी शासिका थी। वह अपने सुख के लिए इस संपदा से खर्च नहीं करती थी। वह महल की बजाय एक-दो मंजिले मकान में रहती थी और प्रतिदिन उसमें भी दरबार करती थी। उनकी सादगी से उनकी प्रजा बहुत प्रभावित थी। अहिल्याबाई के राज्य के जब दो लक्ष्मी पुत्र स्वर्गवासी हुए और उनके घरों की विधवाओं के अतिरिक्त कोई उत्तराधिकारी नहीं था तब उन विधवाओं ने पुत्र गोद लेने की बजाय अपनी संपूर्ण संपत्ति अहिल्याबाई को देने का निश्चय किया। अहिल्याबाई ने उन्हें अपनी संपत्ति को दान, धर्म, देवालय, कुएँ बावड़ी आदि बनवाने में लगाने की सलाह दी। अहिल्याबाई के पास जब होलकर घराने का कोष आया तब उन्होंने विंध्याचल पर्वत जैसे अनेक दुर्गम स्थानों पर अपरिमित धन व्यय करके बड़ी-बड़ी सड़कें, मंदिर, धर्मशालाएँ, कुएँ, बावड़ियाँ आदि बनवाई थी। उनका दान केवल अपने राज्य के निवासियों तक ही सीमित नहीं था अपितु पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक प्रत्येक तीर्थ स्थल के लिए था। अहिल्याबाई ने कई देवालय हिमालय पर्वत पर बहुत अधिक धन खर्च करके बनवाए और उनका नियमित खर्च चलाने के लिए नियमित रूप से वार्षिक खर्च बाँध दिया था। उन्होंने दक्षिण के बहुत से मंदिरों में नित्य गंगाजल से मूर्ति स्नान करने के हितार्थ गंगा तथा गंगोत्री के जल की कावडें भिजवाने का भी बहुत उत्तम प्रबंध लाखों रुपए खर्च करके कर दिया। इसके अलावा निर्धनों की भोजन व्यवस्था, किसानों, जानवरों एवं प्राणियों के लिए स्थान-स्थान पर पानी की व्यवस्था, गरीबों, अनाथ, ब्राह्मणों एवं आश्रित जनों को वस्त्र व्यवस्था और पशु-पक्षियों हेतु खेत मोल लेकर दाना चुगने की व्यवस्था उनके द्वारा की गई थी जिसके कारण उनका प्रताप और गौरव दूर-दूर तक फैला था।

अहिल्याबाई होल्कर में गीता के श्लोक का नारी का तीसरा गुण वाकचातुर्य का ज्ञान हमें उनके शासनकाल में हुई कई घटनाओं से होता है। अहिल्याबाई ने अपने भंडार के संपूर्ण धन पर राजगद्दी पर बैठते समय ही तुलसी दल रखकर उसको कृष्णार्पण कर दिया था। राघोबा दादा ने लोभवश अहिल्याबाई को कहला भेज दिया कि इस समय मुझे कुछ धन की अत्यंत आवश्यकता है इस कारण मुझ को कुछ रुपए तुरंत भेज दीजिए। अहिल्याबाई उनकी प्रकृति को जानती थी इसलिए उन्होंने प्रतिउत्तर भेज दिया कि ''मैंने अपने संपूर्ण संचित धन पर तुलसी दल रखकर भगवान को अर्पण कर दिया है। अब इस धन में से एक कौड़ी भी लेने का मुझे अधिकार नहीं रहा है। तथापि आप ब्राह्मण हैं; यदि दान लेना चाहे तो प्रसन्नता पूर्वक मैं आपको संपूर्ण धन गंगाजल और अक्षत लेकर संकल्प करने को उद्यत हूँ।'' राघोबा दादा ने नाराज होकर उन्हें या तो धन भिजवाने या युद्ध करने की चेतावनी दी। इस पर अहिल्याबाई 500 स्त्रियों के साथ वीरवेश धारण कर युद्ध क्षेत्र में पहुँच गई। उन्हें केवल राघोबा दादा के धन के तृषित

मन को अपने वाक चातुर्य और युक्ति से लज्जित करना था। जब राघोबा दादा के सैनिकों ने स्त्रियों से लड़ने को मना कर दिया और दादा ने अहिल्याबाई सेना के बारे में पूछा तो उन्होंने बड़े नम्र भाव से उत्तर दिया कि ''मेरे पूर्वज पेशवाओं के सेवक थे उन्हीं के अन्न से इस डदेह का निर्माण और रक्षा हुई है इसलिए मैं अनीति का अवलंब करके अपने मालिक पर कभी शस्त्र चलाने हेतु सेना को रण क्षेत्र में उपस्थित नहीं कर सकती और हाँ मैं धर्म नहीं त्याग सकती और न संकल्पित धन को यूं सहज में ही लूटने दूँगी। आपके सम्मुख उपस्थित हूँ आप भले ही मुझे मार कर संपूर्ण राज्य के अधिकारी हो जाए परंतु प्राण रहते हुए तो एक पैसा भी न लेने दूँगी।'' अहिल्याबाई के इस वाक्चातुर्य पूर्ण उत्तर को सुनकर राघोबा दादा लज्जित होकर वापस चले गए।

गीता के श्लोक के अनुसार नारी का चतुर्थ गुण स्मृति है। अध्ययन बताते हैं कि महिलाओं में कई पक्षों में पुरुषों से अधिक स्मृति पाई जाती है इसलिए निरक्षर महिला भी गायन, लोकगीत, पूजा-पद्धति, मंत्रोचार इत्यादि कंठस्थ करके संस्कृति का संवहन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बहुत ही सुगमता से कर सकती है। अहिल्याबाई होल्कर अपनी प्रजा के प्रत्येक वर्ग की भलाई का ध्यान रखती थी। कब किस से किस विषय पर परिचर्चा करनी है, कब दान धर्म पुण्य कार्य करने हैं, कब राज्य के लिए योजनाएँ बनानी हैं और राज कार्य प्रबंध कब और किस प्रकार करना है यह उनको याद दिलाने की आवश्यकता नहीं होती थी। अहिल्याबाई संपूर्ण राजकार्य, प्रजापालन, धार्मिक, सामाजिक और परमार्थ कार्य बड़ी कुशलता से कर लेती थी। धार्मिक और परमार्थ दोनों प्रकार के कार्यो को वह विधि पूर्वक, उचित तरीके से भलीभांति और निर्विघ्न संपादित करती थी।

अहिल्याबाई की मेधा यानी बौद्धिक क्षमता का लोहा अन्य राज्य के राजा और स्वयं पेशवा भी मानते थे। अहिल्याबाई की सभा में अन्य राजाओं के दूत रहा करते थे। वे उनकी बुद्धिमानी और नम्रता से सर्वदा प्रसन्न रहा करते थे। अहिल्याबाई संपूर्ण परिस्थितियों को समझ कर, परिणाम का अनुमान लगाकर, प्रत्येक स्थिति का विश्लेषण करने के पश्चात ही कार्य को अंजाम देती थी। अहिल्याबाई ने बड़ी ही बुद्धिमानी से अपने राजदूत पूना, हैदराबाद, श्रीरंगपट्टन, नागपुर और कोलकाता आदि स्थानों में नियत करके परस्पर की सहानुभूति और मेल मिलाप की उत्तम व्यवस्था उस काल में कर रखी थी। इन स्थानों में यदि राजनीति के कारण किसी प्रकार का वाद-विवाद उपस्थित होता था तो उसको सहज में ही बड़ी बुद्धिमानी से वह निपटा देती थी। उनके शासनकाल में उनके सामान यश और प्रजा पालक राजा कोई नहीं था। अहिल्याबाई अपने प्रताप प्रदर्शन तथा रक्षा के लिए राजा महाराजाओं और नवाबों के समान न तो अधिक सेनाबल और न ही अपना प्रभुत्व तथा कीर्ति के लिए अपरिमित धन का व्यय ही किया करती थी। परंतु धर्म बल को ही वह प्रधान और श्रेष्ठ मानकर उसके अनुरूप ही पवित्र आचरण किया करती थी। उन्होंने जिस बुद्धिमानी से पूना के पेशवा राघोबा दादा का मालवा का पेशवा बनने के ख्वाब को ध्वस्त कर दिया वह उल्लेखनीय है। अचानक महेश्वर जाकर अहिल्याबाई को चुनौती देकर मालवा राज्य को लेने के प्रयास में अहिल्याबाई के मंत्री गंगाधर राव भी राघोबा दादा से मिले हुए थे परंतु अहिल्याबाई का गुप्तचर जाल अत्यंत सघन व चौकस होने के कारण समय पर उन्हें सूचना मिल गई। अहिल्याबाई ने बड़ी बुद्धिमानी और बहादुरी से इस युद्ध की बाजी ही पलट कर रख दी। उन्होंने तुकोजी होलकर को सेनापति बनाकर माधवराव पेशवा से स्वयं प्रशासन और देखभाल की अनुमति ले ली और साथ ही अन्य मराठा प्रभावशाली लोगों से सेना की सहायता जुटाकर राघोबा दादा को बिना युद्ध किए ही लौटने पर मजबूर कर दिया। उनकी बुद्धिमत्ता और भविष्य दृष्टा होने का पता हमें इस बात से भी चलता है कि उन्होंने पहले से ही ब्रिटिश साम्राज्य के खतरे को भाँप लिया था और अपनी सेना को यूरोपियन शैली से लड़ाई लड़ने के लिए पहले से ही प्रशिक्षित कर लिया था। उन्होंने अपनी सेना में एक फ्रांसीसी कमांडर को नियुक्त किया जिसने नए तरह से लड़ाई लड़ने के लिए सेना की चार प्लाटून को यूरोपियन युद्ध शैली में प्रशिक्षित किया था।

अहिल्याबाई होल्कर का त्यागपूर्ण जीवन अन्य शासकों के लिए एक मिसाल है। अहिल्याबाई का रहन-सहन अत्यंत साधारण था। वे हमेशा सादा और सफेद कपड़ा पहनती थी और केवल गले में एक माला धारण करती थी। वे हमेशा सामान्य और सात्विक भोजन करती थी। किसी प्रकार का राजसी ठाठ-बाठ उनके रहन-

अहिल्याबाई होल्कर में न्यायप्रियता, कुशल निर्णय क्षमता, व्यक्तित्व और परिस्थितियों की पहचान क्षमता के साथ-साथ भविष्य द्रष्टा होने के गुण भी विद्यमान थे। अपने पुत्र के द्वारा एक बुनकर की हत्या हो जाने पर उन्होंने अपने ही पुत्र पर जाँच बिठाकर अपनी न्यायप्रियता का परिचय दिया। एक बार मल्हारराव होलकर ने अहिल्याबाई को ग्वालियर में एक गोला बारूद की फैक्ट्री निर्माण करने के लिए लिखा। इसके लिए सैकड़ों मजदूरों, कौशल पर्यवेक्षकों और बैलगाड़ियों की आवश्यकता थी। यह कार्य अहिल्याबाई ने बिना समय गँवाए बड़ी कुशलता से कर दिया जो कि उनकी निर्णय क्षमता और उपयुक्त व्यक्ति चयन के कौशल को दर्शाता है।

सहन में नहीं था। वे साधारण साड़ी पहनकर ही राज्यसभा में जाती थी। वह महल की बजाए एक साधारण से दो मंजिले मकान में निवास करती थी। वह बचपन से ही ईश्वर पूजन और पुराण श्रवण के पश्चात ही भोजन करती थी। 29 वर्ष की विधवा होने पर उन्होंने परहित में जीवन भर संघर्ष किया। उन्होंने कभी भी राज्य की संपदा को अपने सुख के लिए उपयोग नहीं किया और हमेशा धार्मिक और त्याग पूर्ण जीवन जिया।

अहिल्याबाई होल्कर में क्षमा करने का गुण हमें उनके जीवन के अनेक दृष्टांतों से देखने को मिलता है। भील जाति के लोग एक बार जब पथिकों और ग्रामीणों को कष्ट देने लगे और वे उनका माल-असबाब और धन-दौलत छीन लिया करते थे जिसका नाम उस समय में 'भीलकौड़ी' पड़ गया था। पहले तो अहिल्याबाई ने उन लोगों के मुखिया को बुलाकर समझाया परंतु न मानने पर उनसे कठोरता से बर्ताव कर उन्हें घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। जब विवश होकर सब भीलों ने उनकी अधीनता स्वीकार कर प्राण रक्षा की भीख मांगी तब अहिल्याबाई ने उन्हें न केवल उन्हें क्षमादान दिया अपितु उन्हें आश्रय देकर कृषि और वाणिज्य करने के लिए धन से भी उनकी सहायता की। इस प्रकार उन्होंने भीलों की जीविका का प्रबंध कर उनकी उद्दण्डता को ही मिटा दिया।

अहिल्याबाई होल्कर में न्यायप्रियता, कुशल निर्णय क्षमता, व्यक्तित्व और परिस्थितियों की पहचान क्षमता के साथ-साथ भविष्य द्रष्टा होने के गुण भी विद्यमान थे। अपने पुत्र के द्वारा एक बुनकर की हत्या हो जाने पर उन्होंने अपने ही पुत्र पर जाँच बिठाकर अपनी न्यायप्रियता का परिचय दिया। एक बार मल्हारराव होलकर ने अहिल्याबाई को ग्वालियर में एक गोला बारूद की फैक्ट्री निर्माण करने के लिए लिखा। इसके लिए सैकड़ों मजदूरों, कौशल पर्यवेक्षकों और बैलगाड़ियों की आवश्यकता थी। यह कार्य अहिल्याबाई ने

बिना समय गँवाए बड़ी कुशलता से कर दिया जो कि उनकी निर्णय क्षमता और उपयुक्त व्यक्ति चयन के कौशल को दर्शाता है। उनके शासनकाल में किसान खुशहाल थे, राजनयिक संगठित थे, कला, संगीत और साहित्य भी फल-फूल रहा था, बुनकर, कलाकार, मूर्तिकार राज्य से सहायता और सम्मान प्राप्त कर अपने-अपने क्षेत्र में विकास कर रहे थे। उनके द्वारा पुष्पित और पल्लवित महेश्वर का खादी और रेशम उद्योग आज भी भारतवर्ष में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में विधवा महिलाओं को संपत्ति का अधिकार प्रदान कर एक मिसाल कायम की जिस अधिकार के लिए आज भी महिलाएँ संघर्षरत हैं। उन्होंने जीवन भर अपने सिद्धांतों एवं प्रजा के हितों की रक्षा के लिए हर प्रकार के कष्ट सहने में किंचित मात्र भी संकोच नहीं किया। उनका साम्राज्य सही मायनों में एक आदर्श साम्राज्य था। जॉन मालकम जिन्होंने अहिल्याबाई की मृत्यु के पश्चात उनके जीवन को अपनी पुस्तक 'मध्य भारत का एक संस्मरण' में प्रलेखित करते हुए लिखा था कि "अहिल्याबाई एक सर्वाधिक पवित्र और सर्वाधिक अनुकरणीय शासिका थी जो हमेशा रहेगी।" जॉन केय नामक एक ब्रिटिश इतिहासकार ने उन्हें 'दार्शनिक महारानी' कहा। अहिल्याबाई की निडरता और स्पष्ट बोलने का साहस उन्हें जहाँ शासकों की पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा करता है वहीं उनकी विनम्रता और धार्मिकता उन्हें देवत्व प्रदान करती। 1772 में पेशवा की ब्रिटिश साम्राज्य से नजदीकी बढ़ाने के खतरे से आगाह करते हुए अहिल्याबाई ने उन्हें लिखा था कि "एक चीता जाल और शारीरिक बल द्वारा मारा जा सकता है परंतु एक भालू में वह क्षमता है जो बाहुपाश से ही हमें मार सकता है।" आज भी महेश्वर के राज महल के बाहर उनके द्वारा खुदवाए हुए यह शब्द "मैं अपनी प्रजा की खुशी के लिए प्रतिबद्ध हूँ। मैं अपने किए गए कार्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी हूँ। मैं भगवान के प्रति जो कुछ भी मैंने किया उसके प्रति उत्तरदायी हूँ" आज भी अहिल्याबाई की पवित्र प्रजापालक छवि को उद्घाटित करते हैं। ❑

अहिल्याबाई होल्कर का कृषि दर्शन

डॉ. राम बाबू
सहायक प्राध्यापक,
गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

भारत भूमि पर हर युग एवं काल में अनेक वीर-वीरांगनाओं ने जन्म लिया है। जिन्होंने अपने व्यक्तित्त्व एवं कर्तव्यों के माध्यम से उस काल में अमिट छाप छोड़ी है। उनके पुरुषार्थ आज भी वैश्विक पटल पर प्रेरणापुंज का कार्य करते हैं। ऐसी ही एक तेजस्विनी नारी महारानी अहिल्याबाई होलकर थीं। जिन्होंने न सिर्फ एक आदर्श शासन की मिशाल पेश की बल्कि प्रजा के कल्याण के लिए अपना सर्वश्व न्यौछावर कर दिया। प्रजा यानि समाज के विभिन्न वर्गों के हितों को ध्यान में रखकर योजनाएँ बनाने एवं उनके उचित एवं सफल क्रियान्वयन के आधार पर ही किसी भी शासन व्यवस्था के आदर्श और अनुकरणीय कहा जा सकता है।

अहिल्याबाई होलकर ने अपने समय में कृषि और किसानों के कल्याण के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाया, वह अत्यंत प्रगतिशील और किसानों की उन्नति में सहायक था। उनके शासनकाल में किसानों को लेकर बहुत सी महत्त्वपूर्ण नीतियाँ बनाई गई, जिससे किसानों के जीवन में सुधार और कृषि उत्पादन को बढ़ाने में मदद मिली। उनके जीवन को प्रेरणापुंज मानते हुए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु ने कहा था ''अहिल्याबाई होलकर एक प्रेरणादायक महिला नेता थीं, जिन्होंने स्त्री शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के लिए अथक प्रयास किए।''

भारत के इतिहास में महारानी अहिल्याबाई को न केवल उनके साहस के लिए जाना जाता है बल्कि महिला सशक्तिकरण, समाज सुधार और किसानों

अहिल्याबाई होलकर की दूरदर्शी सोच से सामाजिक कल्याण के अनेक कार्य हुए, जिसमें कृषि आधारित कुटीर उद्योग को बढ़ावा देना और वस्त्र निर्माण के लिए हथकरघा में बुनकरों को अपने राज्य में ही आमंत्रित किया जाना तथा महेश्वर साड़ियों पर किले की दीवारों के शिल्प वाली डिजाइनें बनाने के लिए बुनकरों को प्रेरित करना उनकी दूरदृष्टि का प्रमाण और वर्तमान सरकार के 'लोकल टू वोकल' प्रोजेक्ट का मार्गदर्शक प्रतीत होता है। इसके अलावा उन्होंने दलित, आदिवासी और पिछड़े समाज के लोगों को शिक्षित करने और इन सभी जाति के लोगों को प्रशिक्षण दिलाने के साथ उद्योगों में काम पर लगाने का कार्य किया, वर्तमान सरकार की कौशल विकास योजना का जैसे प्रेरक सम्भावित होता है।

के लिए कल्याणकारी नीतियों के लिए आज भी याद किया जाता है। प्रस्तुत आलेख में हम अहिल्याबाई के सामाजिक कल्याण, कुटीर उद्योग की अवधारणा, महिला सशक्तिकरण तथा उनके किसानों के प्रति दृष्टिकोण एवं कृषि दर्शन पर चर्चा करेंगे। साथ ही वर्तमान सरकार की कृषि एवं किसान कल्याण की नीतियों में उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करेंगे।

दूरदर्शी सोच एवं सामाजिक कल्याण

अहिल्याबाई ने अपनी दूरदर्शी सोच के साथ सामाजिक, धार्मिक, भौतिक, सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ अपनी राजधानी को औद्योगिक रूप से समृद्ध करने के लिए वहाँ वस्त्र-निर्माण योजना की बनाई। उस समय वस्त्र निर्माण और हथकरघा में हैदराबादी बुनकरों का अच्छा बोलबाला था। अपने यहाँ स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने हैदराबाद के बुनकरों को आमंत्रित किया और उन्हें अपना पुश्तैनी कार्य महेश्वर में रहकर करने का आग्रह किया ताकि स्थानीय कृषि उत्पाद जैसे कपास, पटसन आदि की मांग बढ़े और किसानों को इसका लाभ मिले। इसके साथ ही उन्होंने बुनकरों को सुझाव दिया की वे साड़ियों तथा अन्य वस्त्रों पर महेश्वर किले की दीवारों पर बनाई गई डिजाइनें बनाएँ जिससे उनके कार्य को एक नई पहचान मिले। परिणामस्वरूप आज भी महेश्वर साड़ियों पर किले की दीवारों के शिल्प वाली डिजाइनें मिलती है, जिनकी देशभर में एक अलग पहचान एवं बाजार में मांग है।

दलित, आदिवासी और पिछड़े समाज की भलाई

अहिल्याबाई होल्कर ने अपने राज्य क्षेत्र में दलितों, आदिवासियों और पिछड़ों के उद्धार के लिए अनेक कार्य किए। इस कालखंड में घोर छुआछूत का सामना कर रहे दलितों के उत्थान के साथ ही उन्होंने आदिवासी कबीलों को भी जंगलों का जीवन छोड़ गाँव में बसने और किसानों के रूप कार्य करने के लिए सहमत किया। उनकी बेटी मुक्ताबाई की शादी भी यशवन्त नाम के एक आदिवासी से हुई। इसके साथ ही उन्होंने दलित, आदिवासी और पिछड़े समाज के लोगों को शिक्षित करने ओर कपड़ा उद्योग में इन सभी जाति के लोगों को प्रशिक्षण दिलाने और काम पर लगाने का कार्य किया।

कुटीर उद्योग की अवधारणा की शुरुआत

अहिल्याबाई होलकर ने सन् 1767 में यानि आज से 250 वर्ष पहले कुटीर उद्योग स्थापित किया। गुजरात, हैदराबाद तथा भारत के अन्य शहरों के बुनकरों को यहाँ लाकर बसाया और उन्हें व्यापार, घर आदि चलाने के लिए अनेक सुविधाएँ प्रदान की। परिणामस्वरूप जहाँ पहले केवल सूती साड़ियाँ ही बनाई जा रही थी वहाँ उच्च गुणवत्ता वाली रेशम तथा सोना व चांदी के धागों से बनी साड़ियाँ बनने लगी और स्थानीय कृषि आधारित व्यापार एवं रोजगार को बढ़ावा मिलने लगा।

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कार्य

महारानी अहिल्याबाई ने समाज में महिलाओं को समान स्थान दिया। उन्होंने बताया कि महिलाएँ किसी भी स्थिति में पुरुषों से कम नहीं। इसके साथ ही महिलाओं के मान-सम्मान को बढ़ाने के उद्देश्य से नारी शिक्षा पर जोर दिया। इससे पहले महिलाओं को केवल घरों में थोड़ा बहुत पढ़ाने का चलन था, जिसे आगे स्कूल शिक्षा तक बढ़ाने में विस्तार मिला। अहिल्याबाई ने अपने नेतृत्व में महिला सेना बनाई और महिलाओं को प्रशिक्षण देने के साथ युद्ध में कुशल बनाया। महिलाओं के लिए विशेषकर समाज सेवा के लिए खुद को समर्पित कर दिया। उन्होंने विधवा महिलाओं के कानून में ख़ास बदलाव किया। इससे पहले यह कानून था कि अगर कोई महिला विधवा हो जाती तो उनका पुत्र न हो तो उसकी पूरी संपत्ति राजकोष में जमा की जाती थी लेकिन उन्होंने कानून को बदलकर विधवा महिलाओं को अपने पति की संपत्ति लेने का हकदार बनाया और

उनकी शिक्षा पर विशेष जोर दिया।

किसानों के प्रति दृष्टिकोण एवं कृषि दर्शन

महारानी अहिल्याबाई होल्कर के पिता किसान थे जिसके कारण कृषि को लेकर उनकी समझ बचपन से ही काफी विस्तृत थी। उन्होंने अपने शासन काल में कृषि और किसानों के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया। उन्होंने बंजर पड़ी जमीनों पर भी खेती कराने के लिए नई तकनीक का प्रयोग कराया। इसके साथ ही मिट्टी को स्वस्थ रखने के उद्देश्य से फसल बदलाव की प्रक्रिया अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित किया।

अहिल्याबाई के शासन में ख़ास बात ये थी यदि कोई किसान गरीब है या उसकी खेती सूखे की स्थिति से पीड़ित है, तो उस किसान से किसी प्रकार का कोई कर नहीं लिया जाता और आगे खेती करने के लिए बीज सहित अन्य जरूरत का सामान उपलब्ध कराया जाता था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किसान पारंपरिक फसलों की खेती के साथ-साथ कपास, नील एवं तम्बाकू की खेती करें ताकि उनकी आमंदनी बढ़ सके। इस बीच उन्होंने कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए राज्य में किसानों की समस्याओं को समझने और उनकी भलाई के लिए अनेक कदम उठाए, जिन्हें निम्न रूप से देखा जा सकता है।

सिंचाई व्यवस्था - खेती के लिए सिंचाई की समस्या से जूझ रहे किसानों के लिए अहिल्याबाई ने नहर खुदाई, जल संरक्षण के लिए जलाशय और तालाबों का निर्माण कराया ताकि किसानों को सिंचाई का पानी उचित मात्र में उपलब्ध हो सके। इसके बाद राज्य में जल संरक्षण से न केवल फसलों की गुणवत्ता में सुधार आया, बल्कि सूखे का सामना करने वाले किसानों काफी राहत मिली।

किसानों के कल्याणकारी नीतियाँ - अहिल्याबाई ने किसानों की कृषि संपत्ति को डाकुओं तथा माफियाओं से उनके अधिकारों की रक्षा की। इसके साथ ही कृषि कर में किसानों को बड़ी राहत प्रदान की। उनकी कृषि नीतियों ने किसानों के आर्थिक दबाव को कम किया और कृषि के प्रति उत्साह को बढ़ावा मिला।

सहयोग और प्रोत्साहन - रानी अहिल्याबाई ने किसानों को नई कृषि तकनीकों से परिचित कराने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए विशेषज्ञों को भेजा। प्रशिक्षण मिलने के बाद किसानों को फल और सब्जियाँ उगाने के लिए प्रेरित किया, ताकि उनकी आमंदनी बढ़ाई जा सके।

कृषि प्रशिक्षण - अहिल्याबाई होल्कर ने अपने राज्य में कृषि प्रदर्शनियों का आयोजन कराया ताकि किसान एक-दूसरे से सीख सकें और नए कृषि विधियों को अपनाकर उत्पादन में बढ़त कर सकें।

किसानों की उपज का उचित भाव - रानी अहिल्याबाई ने किसानों के कर्ज माफ करने और उनके लिए उचित मूल्य पर फसलों की बिक्री को सुनिश्चित करने का प्रयास किया। उन्होंने किसानों को उनकी उपज के लिए उचित मूल्य दिलाने में सहायता की।

कृषि के प्रति समग्रता का दृष्टिकोण - अहिल्याबाई होलकर ने कृषि को केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज के विकास का एक महत्त्वपूर्ण कारक माना। उन्होंने अपने शासन काल में ऐसा माहौल बनाया, जहाँ किसानों को उनकी मेहनत का उचित लाभ मिल सके जिससे उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार हो सके।

निष्कर्ष - अहिल्याबाई होल्कर की दूरदर्शी सोच से सामाजिक कल्याण के अनेक कार्य हुए, जिसमें कृषि आधारित कुटीर उद्योग को बढ़ावा देना और वस्त्र निर्माण के लिए हथकरघा में बुनकरों को अपने राज्य में ही आमंत्रित किया जाना तथा महेश्वर साड़ियों पर किले की दीवारों के शिल्प वाली डिजाइनें बनाने के लिए बुनकरों को प्रेरित करना। उनकी दूरदृष्टि का प्रमाण और वर्तमान सरकार के 'लोकल टू वोकल' प्रोजेक्ट का मार्गदर्शक प्रतीत होता है। इसके अलावा उन्होंने दलित, आदिवासी और पिछड़े समाज के लोगों को शिक्षित करने और इन सभी जाति के लोगों को प्रशिक्षण दिलाने के साथ उद्योगों में काम पर लगाने का कार्य किया। वर्तमान सरकार की कौशल विकास योजना का जैसे प्रेरक सम्भावित होता है। वहीं किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिया जाना और उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था हो या फिर सिंचाई के लिए पानी एवं नई खेती की तकनीकों को बढ़ावा देना कृषि एवं किसानों के कल्याण की वर्तमान योजनाओं को आयना दिखाती प्रतीत होती हैं। जिससे किसानों की मेहनत का उचित लाभ मिलने के साथ उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार होना सुनिश्चित किया जा सकता है। ❑

अहिल्याबाई भारतीय नारी शक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण

प्रो. हितेश व्यास

एसोसिएट प्रोफेसर, एम.जे. कॉलेज ऑफ कॉमर्स, एम. के. भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर, गुजरात

यदि किसी व्यक्ति के जीवन कार्य का अवलोकन करना हो तो उसके जीवन काल की विभिन्न अवस्थाओं को जानना व समझना होगा।

अहिल्याबाई भारतीय नारी शक्ति का प्रतीक हैं, उनके बचपन और विवाह के बाद के जीवन की स्थितियों में काफी अंतर है।

पूर्वार्द्ध

कहा, चौंडी गाँव की एक भोली और निडर लड़की, जिसके साथ पेशवा श्रीमंत माधवराव और सूबेदार मल्हारराव होल्कर अपने गाँव के दौरों के दौरान संपर्क और संवाद में आते हैं।

बालिका अहिल्या को बचपन से ही बहिर्मुखी व्यक्तित्व, प्रभावशाली वाक्पटुता और आत्मरक्षा की शिक्षा प्राप्त थी। पेशवा श्रीमंत माधवराव को अपने तीर से बुलबुल को मारने के लिए न कहकर, दुश्मन के प्रति अपनी रक्तपिपासुता दिखाते हुए, वह निडरता प्रदर्शित करता है।

उनकी यह यात्रा भारत के संपूर्ण इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसके बाद 1733 में उनकी शादी होलकर के बेटे खांडेराव से हो गई। खंडेराव अपनी पत्नी के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा करता है और फिजूलखर्ची, नशे की लत और अनैतिक जीवन व्यतीत करता है, एक शाम अहिल्या अपने पति की सेवा करने के लिए खंडेराव के महल में आती है। फिर भी खंडेराव मदिरा और रूपांगना में व्यस्त है। फिर वह अपने पति का अपमान करते हुए सबकुछ छोड़ देती है और कहती है, 'अगर तुम सेनापति नहीं बनना चाहते तो इसे छोड़ दो और चरवाहे का काम करो' और अगर तुम्हें मेरी जरूरत हो तो पहले दो दिन का उपवास करो और फिर हम आएंगे कह कर चली जाती है। इस समय दृढ़ संकल्प और समर्पण की भावना को व्यक्त होती है। अपनी दुनिया में अपने पति के दु:ख के साथ, उसे एक बेटा, मालेराव और एक बेटी, मुक्ता प्राप्त होती है।

बालिका अहिल्या को बचपन से ही बहिर्मुखी व्यक्तित्व, प्रभावशाली वाक्पटुता और आत्मरक्षा की शिक्षा प्राप्त थी। पेशवा श्रीमंत माधवराव को अपने तीर से बुलबुल को मारने के लिए न कहकर, दुश्मन के प्रति अपनी रक्तपिपासुता दिखाते हुए, वह निडरता प्रदर्शित करता है।

आघाते

अहिल्याबाई व्यथित है क्योंकि उसका बेटा भी उसके घरेलू जीवन से भटक गया है। 17 मार्च 1754 को जेजुरी के युद्ध में खंडेराव की मृत्यु हो गई। तभी पति के पीछे सती होने से ससुर मल्हार राव उसे रोकते हैं। राजनीति, शिक्षा और सामाजिक कार्य के विषयों को पढ़ाना शुरू करती है। फिर छह वर्ष के अल्प अंतराल में ही सास गौतमबाई, ससुर मल्हारराव और पुत्र मालेराव की मृत्यु हो जाती है। इसके अलावा पुत्री मुक्ता के पुत्र नथुबा, पति यशवन्तराय की भी मृत्यु हो जाती है। उस समय वह अपनी बेटी को सती होने से नहीं रोकती, जिससे पता चलता है वह माता-पिता और शासक की भूमिका एक साथ निभाति हैं।

उत्तरार्द्ध

अपने पति की मृत्यु के बाद, अपने ससुर के साथ शिक्षा और राजनीति में प्रशिक्षित अहिल्याबाई राज्य के खजाने, वित्तीय प्रणाली, सैन्य प्रणाली, शासन, राजनीति और कल्याणकारी कार्यों में व्यस्त हो गईं। 1764 और 65 में सेना के लिए तोप, गोला-बारूद और अन्य हथियारों के निर्माण का कार्य संभाला। इसमें उत्पादन प्रबंधन, गुणवत्ता सटीकता, समय की आवश्यकता, समय सूचकता का पालन, युद्ध सामग्री प्रबंधन, भंडारण, रखरखाव के साथ-साथ उत्पादन लागत और लेखांकन आदि को सटीक रूप से लागू कराती है, जो एक अच्छे नेता और प्रबंधक के गुणों को प्रदर्शित करता है।

इसके अलावा 1765 में उन्होंने राज्य का लगभग दो लाख रुपये का कर्ज भी चुका दिया। मल्हार राव की मृत्यु के बाद राजगद्दी की धुरा संभाली। अपने असंतुष्ट सूबेदारो और सेनापतिओं के आंतरिक मतभेदों को भी चतुराई से संभालता है। अपने सिंहासन को उखाड़ फेंकने की साजिश के बारे में जानने पर, तुरंत पेशवा और अन्य राज्यों के राजाओं को पत्रों के माध्यम से जानकारी दी और पूरी साजिश को विफल कर दिया। इस समय उनकी चातुर्य, रणनीतिक निर्णय लेने की क्षमता और विवेकशीलता प्रदर्शित होती है।

उन्होंने राज्य में लोगों के कल्याण के लिए कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए, लोगों की ज़रूरतें पूरी की गईं और राज्य की सीमाएँ सुरक्षित की गईं। जैसे राज्य की सीमा पर व्यापारियों के आने-जाने के रास्ते में किए जाने वाले लूटपाट को रोकने के लिए भीलों से बातचीत करना तथा संधि के माध्यम से उन्हें रोजगार तथा सीमा सुरक्षा का कार्य सौंपना। जो उन्हें एक अच्छे रणनीतिकार और समय पर निर्णय लेने वाले के रूप में भी स्थापित करता है।

अपनी सेना के विस्तार के दौरान, उन्होंने पंढरपुर, वालेपर, सीमावर्ती हटकर, सेलार, भरवाडोस, पख्ते आदि के लोगों को शामिल करके एक संतुलित सेना का गठन किया। सैनिकों के प्रशिक्षण, विकास और भत्ता प्रणाली की भी व्यवस्था करती है। 1775 में होल्कर संस्थान के 12 सेवकों का सम्मान किया। इसके अलावा 1789 में उन्होंने आर्थिक लेन-देन के लिए 15 नियम दिए (जो बाद में हड्निनि के नियम बन गए)। इस प्रकार यह मानव संसाधन और वित्तीय क्षेत्र में भी उनकी खूबियों को दर्शाता है।

उन्होंने अपने राज्य में डाक व्यवस्था, पुस्तक निर्माण एवं संवर्धन, पर्यावरण संरक्षण आदि सुशासन के कार्य किये हैं। अहिल्याबाई ने पूरे भारत में हिंदू धर्म के प्रतीक कई मंदिरों, शिवालयों और द्वादश ज्योतिर्लिंगों का जीर्णोद्धार कराया। उन्होंने कई स्थानों पर भोजन क्षेत्र, मुसाफ़र आराम कक्ष/सराय और झीलें बनवाईं। ये संपूर्ण कार्य उनकी सामाजिक, धार्मिक और सामूहिक भक्ति को दर्शाता है।

इस प्रकार 31 मई 1725 को जन्मी और 20 मई 1737 को विवाहिता, और 13 अगस्त 1795 को वीरगति को प्राप्त, अहिल्याभाई भारतीय नारी शक्ति का प्रतीक हैं। उनके 58 वर्षों के गृहस्थ जीवन और 29 वर्षों के राजनीतिक जीवन के असंख्य कार्य और गुण भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हैं। ❑

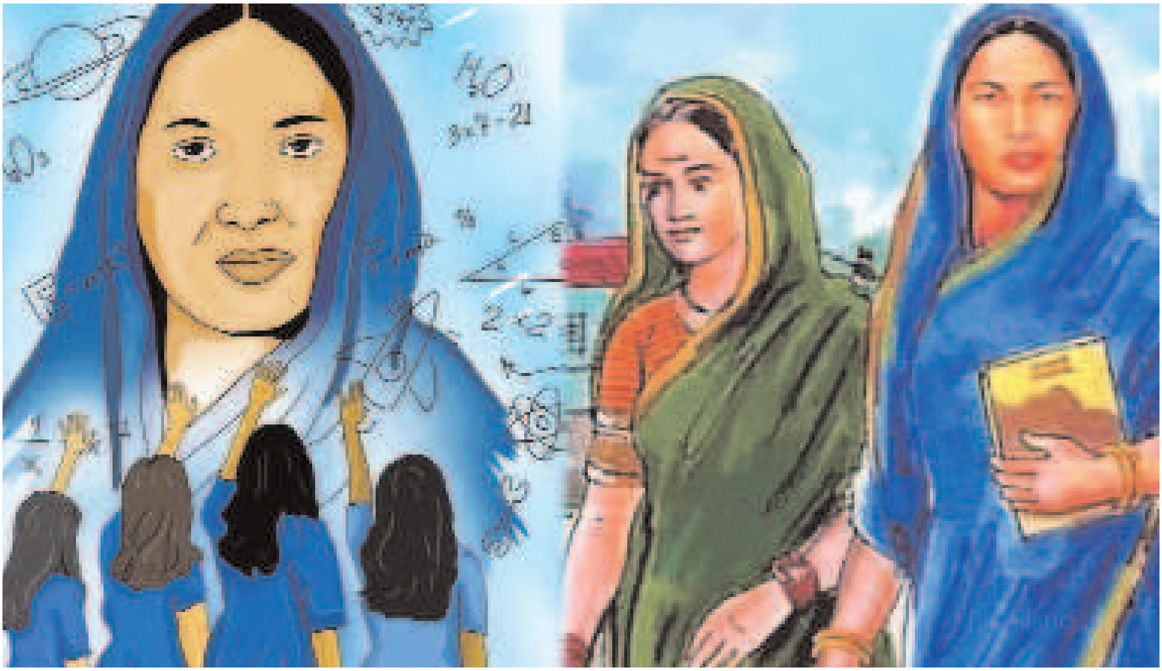

अहिल्याबाई का स्त्री शिक्षा चिंतन

स्वाती
स्नातकोत्तर-समाज शास्त्र,
पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय,
पटना, बिहार

नारी जीवन हमेशा से कठिनाइयों एवं चुनौतियों से भरा रहा है। इतिहास हो या वर्तमान नदी सदैव बेड़ियों में जकड़ी रही हैं। हाँ, हम यह कह सकते हैं बदलते समय के साथ बेड़ियों का रूप बदल रहा है या फिर क्षेत्र कम हो रहे हैं। परंतु देखा जाए तो नारी का सशक्तिकरण सदियों पहले भी एक मुद्दा थी और आज भी है। फिर हम अनुमान तो लगा ही सकते हैं कि 300 साल पहले कुरीतियों से भरे हमारे इस समाज में स्त्री का क्या स्थान होगा। ऐसे समय में एक स्त्री का शासक होना बहुत बड़ी बात है। वैसे तो भारत का इतिहास उन महिलाओं के अद्भुत उदाहरणों से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने साहस, दूरदर्शिता और अपने चरित्र की ताकत के माध्यम से देश का नेतृत्व किया। लेकिन, मालवा की दयालु और बहादुर रानी अहिल्याबाई होल्कर हमेशा दूसरों से अलग रहेंगी। जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों एवं स्त्री के लिए स्थापित मापदंडों को लांघते हुए इतिहास में एक शक्तिशाली रानी के रूप में उभरी।

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 में महाराष्ट्र के अहमद नगर में चौंडी ग्राम के मंकोजी राव शिंदे के घर हुआ। वह बचपन से ही बहुत गुणी बालिका थी। पेशवा मल्हार राव होलकर की एक यात्रा के दौरान मंकोजी राव शिंदे से मुलाकात हुई वहीं पर उन्होंने अहिल्याबाई को देखा। आठ साल की कच्ची आयु कि बालिका के गुणों को देख वो प्रभावित हो गए। मालवा के पेशवा मल्हार राव होल्कर ने अहिल्या का रिश्ता अपने बेटे खंडेराव होलकर से 1773 में कराया। अहिल्याबाई होलकर मालवा आ गयी। दुर्भाग्य बस विवाह के कुछ ही बाद साल कुंभार के युद्ध में उनके पति वीरगति को प्राप्त हुए। पति की मौत के बाद अहिल्या ने सती होने का निर्णय लिया। परंतु उनके ससुर ऐसी गुणी और बुद्धिमाती अल्प आयु कि बालिका का सती होना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सामाजिक मान्यताओं से ऊपर उठकर ना केवल सती होने से उन्हें रोका बल्कि उन्हें राज्य का बागडोर भी सौंप दिया। अहिल्याबाई होलकर तत्पश्चात रानी अहिल्याबाई होलकर के रूप में प्रसिद्ध हुई। महारानी अहिल्याबाई की पहचान एक विनम्र एवं उदार शासक के रूप में थी। उनमें जरूरमदों, गरीबों और असहाय व्यक्ति के लिए दया और परोपकार की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने समाज सेवा के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। अहिल्याबाई हमेशा अपनी प्रजा और गरीबों की भलाई के बारे में सोचती रहती थी, इसके साथ ही वे गरीबों और निर्धनों की संभव मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती थी।

रानी अहिल्याबाई होल्कर ने जो खुद कष्ट एवं बंदिशें को झेला था। उसके समाप्ति के लिए उन्होंने कई कदम उठाए।

सामाजिक कुरीतियाँ जो दरअसल संपूर्ण समाज के लिए है ही नहीं, बल्कि देखा जाए तो हर सामाजिक कुरीतियाँ स्त्रियों से ही जुड़ी हुई है। कुरीति कुछ भी हो सती प्रथा हो, विधवा का संपत्ति हरण हो, बाल विवाह हो या शिक्षा का अधिकार छीना गया हो हर कुरीतियों में केवल और केवल महिला ही भुक्त भोगी होती हैं। फिर जब एक स्त्री खुद इन सब कुरीतियों का सामना कर सामने आई हो, तो जाहिर सी बात है कि वह अपने अगले पीढ़ी को इन सब घटनाओं से बाहर निकलना चाहेगी और समाज में बदलाव लाने के लिए कदम उठाएगी। ऐसे ही महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने विभिन्न क्षेत्र जैसे नारी की शिक्षा हो विधवा का अधिकार हो सती प्रथा हो इन सब के खिलाफ आवाज उठाई और साथ में एक रानी के पद पर होते हुए वह जो कर सकती थी वह सब उन्होंने किया। देवी अहिल्या ने महिलाओं को आगे लाने का महत्त्वपूर्ण काम किया। उन्हें समाज में उचित स्थान दिया। उनके मान-सम्मान का बड़ा ध्यान रखा। अपने शासन काल में, उन्होंने नदियों पर जो स्नान घाट बनवाएँ उनमें महिलाओं के लिए स्नान की अलग व्यवस्था की। दान-दक्षिणा में महिलाओं का विशेष ध्यान रखा। महिलाओं के लिए विशेषकर समाज सेवा के लिए खुद को समर्पित कर दिया। उन्होंने विधवा महिलाओं की स्थिति पर भी काम किया और उनके लिए कानून में बदलाव भी किया था। उन्होंने विधवा महिला को अपनी पति की संपत्ति लेने का हकदार बनाया।

अहिल्याबाई होल्कर महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थीं। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा के दरवाजे खोलने का काम किया और स्वयं भी पढ़ने की इच्छा जताई। शिक्षा किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार लाने के लिया उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि जीने जीने के लिए भोजन, जल और वायु। रानी अहिल्या बाई होलकर लड़कियों को पढ़ाने लिखाने का जो घरों में थोड़ा सा चलन था, उससे विस्तार दिया। अहिल्याबाई ने शिक्षा को समाजिक सुधार का माध्यम माना और इसे समाज में समानता और न्याय के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपकरण माना। उन्होंने लोगों को शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूक किया और विशेष रूप से महिलाओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने राज्य में कई स्कूल और शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कीं, जहाँ लड़कियों को शिक्षित किया जाता था। उन्होंने विधवाओं को पति की संपत्ति लेने का अधिकार देने के लिए कानूनी सुधार किए, जिससे महिलाओं के सशक्तिकरण में मदद मिली। साथ ही उन्होंने ने विधवा महिलाओं के लिए भी शिक्षा का प्रसार किया, जो उस समय के लिए काफी अनूठा कदम था। उन्होंने ने मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति की, ताकि वहाँ शास्त्रों का मनन-चिंतन और प्रवचन हो सके। उन्होंने भारत भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों पर मंदिर बनवाए, घाट बनवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण कराया, ताकि लोगों को शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिले। उन्होंने महिलाओं को सेना में भर्ती होने का सौभाग्य प्रदान किया।

अहिल्याबाई होल्कर महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थीं। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा के दरवाजे खोलने का काम किया और स्वयं भी पढ़ने की इच्छा जताई। शिक्षा किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार लाने के लिया उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि जीने जीने के लिए भोजन जल और वायु। रानी अहिल्या बाई होलकर लड़कियों को पढ़ाने लिखाने का जो घरों में थोड़ा सा चलन था, उससे विस्तार दिया। अहिल्याबाई ने शिक्षा को समाजिक सुधार का माध्यम माना और इसे समाज में समानता और न्याय के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपकरण माना। उन्होंने लोगों को शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूक किया और विशेष रूप से महिलाओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित किया।

सेना का नेतृत्व वे पति की मृत्यु के बाद स्वयं करती थीं। उन्होंने अपने नेतृत्व में महिला सेना बनाई। सेना की महिलाओं को प्रशिक्षण दिया और युद्ध कौशल भी सिखाए। अहिल्याबाई का एक प्रमुख कार्य था महेश्वर निवास, जिसे उन्होंने गठित किया था। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने विधवाओं, बालिकाओं और गरीबों की मदद की और उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य की देखभाल की।

अपने जीवन में तमाम परेशानियाँ झेलने के बाद जिस तरह महारानी अहिल्याबाई ने अपनी अदम्य नारी शक्ति का इस्तेमाल किया था, वो काफी प्रशंसनीय है। जिन्होंने अपनी उन्नति से ऊपर समाज की जरूरतों को रखा। वह समाज को उच्च स्तर पर ले जाने में संपूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। और अहिल्याबाई कई महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन गईं। वे मराठा साम्राज्य की विख्यात महारानी और माध्यमकालीन भारतीय समाज के एक प्रमुख सामाजिक सुधारक थीं।

स्त्री थी वो अगम्य साहसी,
रानी थी वो महाराष्ट्र राज्य की।
कष्ट बिपदा को जो लांघी थी,
फिर बेबस लचारो के सहायता
करने का वो ठानी थी।
और नारी को मान दिया,
शिक्षा और अधिकार दे कर
उन्हें सम्मान दिया।
खुद को भूमि का तारा सा चमकाया,
नारी के साहस का परचम लहराया। ❑

अनुपम त्याग व न्याय की प्रतीक अहिल्याबाई

डॉ. अंजनी कुमार झा

विभागाध्यक्ष, मीडिया विभाग,
महात्मा गाँधी केंद्रीय
विश्वविद्यालय, बिहार

अहिल्याबाई होल्कर कुशल शासिका और अनुपम त्याग की प्रति मूर्ति थीं। उनकी प्रशासनिक क्षमता, राजनीतिक दूरदर्शिता अद्भुत थी। आधुनिक सोच को बढ़ाने में उनकी बड़ी भूमिका रही। सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए उनका संघर्ष अकल्पनीय है। साहस और न्याय प्रियता की प्रतिमूर्ति अहिल्या का संपूर्ण जीवन प्रजा की सेवा में बीता। महाराष्ट्र के मनकोजी शिंदे के घर दो पुत्रों के पश्चात इनका जन्म 31 मई,1725 को हुआ। संस्कार के प्रति सचेत अहिल्या शिव की भक्ति थी। बाल्यावस्था से ही लगनशील अहिल्या ने पढ़ना लिखना पिता से सीखा। जन्म के समय ज्योतिषी ने कहा था, बालिका महारानी बनेगी, जो सच निकली। एक बार मालवा के सूबेदार मल्हार राव होलकर उस रास्ते से गुजर रहे थे तो देखा कि खूब बारिश में भी एक बच्ची भगवान शिव की मिट्टी से मूर्ति बनाने में तल्लीन है जबकि सहेलियाँ जा चुकी थीं। पूछने पर बताया कि अपनी धुन की पक्की हूँ जो काम हाथ में लेती हूँ उसे पूरा करके ही दम लेती हूँ। मल्हार राव काफी प्रभावित हुए। एक बार उसी राह से गुजरते वक्त नरेश ने देखा कि कई ग्रामीण इकट्ठे हैं और जल समस्या से दु:खी हैं। जल स्रोत शिवजी के मंदिर स्थल पर मिला। किन्तु खुदाई करने से लोग डर रहे थे। वह जिद करने लगी कि अगर पानी का स्रोत इसी मंदिर स्थल पर है तो मंदिर के बजाय बावड़ी बनाई जाए। उनके मन में यह बात बैठ गई कि अहिल्या को बहू बनाना है, वह घड़ी आखिर आ ही गई और उन्होंने यह प्रस्ताव रखा। इस तरह 1733 में (10 वर्ष की आयु में) उनका विवाह हुआ। ससुर के संरक्षण में हाथी-घोड़े की सवारी की। शस्त्र संचालन सीखी। उस जमाने में महिला को शिक्षा नहीं दी जाती थी। उन्हीं की जिद के कारण यह व्यवस्था भी की गई। उनकी ईमानदारी और समर्पण के कारण काफी समय बाद सास और पति ने भी स्नेह देना शुरू किया। दरबार में प्रवेश के साथ कई निर्णयों में भागीदारी होने से पूरे सूबे ही नहीं, बल्कि पेशवा भी हैरान हो गये। जीवन भर षड्यंत्रों से जुझारूपन के कारण मुकाबला करने में सफल रही। उनकी वीरता, सदाशयता का सभी लोह मानते थे। कई बार उनकी अवहेलना की गई। महल में विरोध होता रहा, पर ससुर का आशीर्वाद और पति का स्नेह हमेशा मिलता रहा। सास भी उनके फैसले पर मुहर लगाने लगी। वे पूरे मालवा में लोकप्रिय हो गई। पति की मृत्यु के बाद पुत्र ने बागडोर संभाली, किन्तु नियंत्रण न कर पाने के कारण उनका मार्गदर्शन काफी महत्त्वपूर्ण रहा। पुत्र की मृत्यु के बाद विधवा के कारण उन्हें शासन करने में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

उन्हीं के काल में बावड़ी व्यवस्था में सुधार हुआ। मुगल काल के खंडित मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया। केदारनाथ, रामेश्वरम्, हरिद्वार, बैद्यनाथ, ओंकारेश्वर समेत अनेक मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया। काशी मंदिर के जीर्णोद्धार को लेकर

नवाब ने आना-कानी की तो उन्हें भी सबक सिखाने में कोई कोताही नहीं बरती। नारी शिक्षा के प्रति काफी सजग रहीं। पति की मृत्यु के बाद पुत्र ने बागडोर संभाली, किंतु वह कुशल शासक नहीं बन सका। पुत्र की मृत्यु के पश्चात वह रानी बनीं पर पेशवा ने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वह विधवा थीं। पेशवा के चाचा रघुनाथ राव होलकर जब हमला करने की नीयत से नर्मदा तक पहुँच गए तो उनके मार्मिक पत्र पढ़ विचार बदल दिया। राज्य के चहुँमुखी विकास में उनकी बड़ी भूमिका थी। महेश्वर में साड़ी को बनाने का काम शुरू कराया गया। हैंडलूम स्थापित कराए गए जिससे लोगों को रोजगार मिल सके। कम समय में महेश्वर की साड़ी पूरे भारत में प्रसिद्ध हो गई। सन् 1766 में मल्हार राव की मृत्यु के बाद उन पर मुश्किलों का पहाड़ टूट गया। पति की मृत्यु पहले हो चुकी थी और जब पुत्र की मृत्यु हुई तो वह बिल्कुल अकेली हो गई। बाहरी हमले पहले से ज्यादा शुरू हो गए। किसी न किसी बहाने ब्रिटिश रेजीमेंट ने कब्जे की नीयत से उपद्रव करना शुरू किया। अहिल्याबाई ने अपने बल पर फिरंगियों को न केवल खदेड़ा, बल्कि जनता के अंदर राष्ट्रीय भावना को जागृत किया। हिंदू राजाओं को समझाया कि यह अगर हम अभी नहीं करेंगे तो हम गुलाम हो जाएंगे। उनकी भविष्यवाणी बाद में सच साबित हो गई। कालांतर में दामाद भी चल बसा। वे नितांत रूप से अकेले हो गईं। उन्होंने प्रजा हित के लिए सभी चुनौतियों का सामना किया। सफलता पूर्वक राज्य का संचालन कर मालवा को एक अलग पहचान दी। जनता को संतान समझती थी। यही सोचती थी कि जनता को कभी कष्ट न हो। महिलाओं के उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहती थी। सामाजिक विद्रूपताओं को समाप्त करने के लिये सदैव तैयार रही। इनका साथ शुरू में लोगों ने नहीं दिया, किन्तु बाद में जब लोगों को यह बात समझ में आई तो पुरजोर समर्थन दिया। इसी कारण वह अजेय रहीं। मंदिरों में विद्वानों की नियुक्तियाँ कीं। इससे उनका यश चारों ओर फैलने लगी थी। प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना किया। राज्य को समृद्ध बनाने के लिए कई नए आयाम खड़े किए। वह राज्य के कार्य तथा नियम पालन में कठोर रहती थी। पहले तो पति काफी विरोध करते थे, किंतु बाद में वे भी इनका आदर करने लगे। पुत्र इनका विरोध करता ही रहा। जबकि वह अपने पुत्र से बेहद प्यार करती थी। इसके बावजूद उन्होंने कुशाग्र बुद्धि के कारण राज्य को आत्मनिर्भर बनाया। मालवा को न केवल आर्थिक रूप से संपन्न बनाया बल्कि इसे साँस्कृतिक रूप से भी मजबूत किया। अपने शासनकाल में सड़कों की दशा सुधारने, प्याऊ, धर्मशाला, नहर बनाने के साथ सेना को काफी मजबूत किया। कृषि और व्यापार पर विशेष फोकस किया। एक समृद्ध राज्य की कल्पना को साकार किया। अहिल्या ने 1757 में होल्कर राज्य की बागडोर संभाली थी। उनमें एक कुशल शासक के सभी गुण विद्यमान थे। उन्हें लोकमाता की उपाधि दी गई। बाहरी आक्रमण के साथ डाकुओं से भी राज्य की रक्षा की। अपनी प्रजा को संतान समझ कर किसानों का लगान कम किया। उद्योग धंधों को विकसित किया। डाकुओं को क्षमा कर उनके जीवन में नई रोशनी लायी। अनेक बार माफ भी किया। काशी में एक ब्राह्मण का घर जलकर राख हो गया था। रानी के पास आया। भरपूर मदद की। गरीबों, साधु-संतों सभी का ध्यान रखती थी। सैनिकों और कर्मचारियों का वेतन वृद्धि भी करती थी। कल्याण के लिए भी वह कभी पीछे नहीं हटी। सैनिकों को पुरस्कृत करने में वह कभी पीछे नहीं हटी। समाज के सभी वर्गों के लिए उनका दिल धड़कता था। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर के साथ-साथ अनेक मंदिरों का पुनर्निर्माण कराया। ज्योतिर्लिंग में विश्राम गृह, नासिक में भगवान राम के मंदिरों का निर्माण, चिंतामणि गणपति मंदिर निर्माण जैसे कार्य दिल खोलकर किए। कल्याणकारी व परोपकारी कार्यों के लिए सराहनीय प्रयास किया। धार्मिकता इतनी उदार थी कि धर्म व नीति के हर क्षेत्र में उन्होंने अपना नाम अमर कर दिया। इतिहासकार चिंतामणि विनायक वैद्य के मत में, उनकी धार्मिकता इतनी उदार थी कि धर्म व नीति के हर क्षेत्र में उन्होंने अपना नाम अजर-अमर कर दिया। उनका दान-धर्म इतना महान था कि वैसा दान-धर्म आज तक हिन्दुस्थान में किसी ने भी नहीं किया है। ❑

मुगल काल के खंडित मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया। केदारनाथ, रामेश्वरम्, हरिद्वार, बैद्यनाथ, ओंकारेश्वर समेत अनेक मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया। काशी मंदिर के जीर्णोद्धार को लेकर नवाब ने आना-कानी की तो उन्हें भी सबक सिखाने में कोई कोताही नहीं बरती। नारी शिक्षा के प्रति काफी सजग रहीं। पति की मृत्यु के बाद पुत्र ने बागडोर संभाली, किंतु वह कुशल शासक नहीं बन सका। पुत्र की मृत्यु के पश्चात वह रानी बनीं पर पेशवा ने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वह विधवा थीं।

अहिल्याबाई होल्कर का जीवन-वृत्त

डॉ. कविता वा. उईके

फुले-अम्बेडकर
कॉलेज ऑफ सोशल वर्क,
गडचिरोली, महाराष्ट्र

हमारे देश को सुरक्षित रखने के लिए कई महिलाओं ने अपने जीवन का बलिदान दिया। आजादी से पहले के कालखंड पर गौर करे तो मातोश्री जिजाबाई, अहिल्याबाई होल्कर, राणी लक्ष्मीबाई, राणी दुर्गावती, चांदबिवी जैसी महिलाओं का जिक्र मिलता है। उसके बाद के कालखंड में श्रीमती इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, अरुण असफअली, मदर टेरेसा जैसी महिलाओं ने आज के आधुनिक समय में राष्ट्रीय कार्य करके सामाजिक ऋण चुकाने का प्रयास किया है।

ऐसी भारतीय महिलाओं में एक असामान्य महिला थी लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर। अठाराहवीं सदी के भारत में महिलाओं को समाज में बहुत ही अधीनस्थ स्थिति प्राप्त थी। उसे घर की चारदिवारी के भीतर ही रहना पड़ता था। महिलाओं का जीवन सामाजिक बंधन के पिंजरे में कैद था। सतित्व और पवित्रता महिलाओं का धर्म बन गया की उनकी सुरक्षा के लिए अपने पतियों के साथ चिता में जला दिया जाये ऐसी विकट परिस्थिति में अहिल्यादेवी ने होल्कर परिवार को स्वर्ग बना दिया था। यही कारण है कि अहिल्याबाई होल्कर इनका नाम आज भी सभी भारतीय के मन में बसा हुआ हैं। वह दया, क्षमा, शांति की मूर्ति थी इसलिए उन्हें देवी की उपाधि से सन्मानित किया गया था। अगर हम उनके पूरे जीवन के इतिहास पर नजर डाले तो बचपन से लेकर आखरी सांस तक दु:ख ने उनका पीछा नहीं छोड़ा बल्कि उन्होंने अपना पूरा जीवन अपनी प्रजा की भलाई के लिए जीने का फैसला किया। रैयत को एक कल्याणकारी राज्य दिया गया, क्योंकि कर्तव्य, धर्म, रिति-रिवाज और परंपरा को उन्होंने महत्त्वपूर्ण माना था।

अहिल्याबाई का जन्म ई.स. 1725 में नगर जिले के जामखंड तालुका के चौंडी गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम मानकोजी शिंदे और माता का नाम सुशिलाबाई शिंदे।

हालांकि उनका अपना उपनाम शिंदे था। लेकिन ये जाति के धनगर थे। वह चौंडी गाँव का पाटील था। उनके देवता खंडोबा अर्थात् मल्हारी मार्तंड थे। मानकोजी पाटील का चौंडी गाँव में पड़का वाडा था। अहिल्याबाई की माँ धार्मिक थी। अहिल्याबाई को बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति वाली माँ ने शिक्षा दी थी। बचपन से ही उन्हें पुजा, पोथी, पुराण श्रवण, व्रत धर्मग्रंथ का वाचन और ध्यान करना सिखाया गया। अहिल्याबाई अत्यंत प्रतिभाशाली थी उनके गुणों की चर्चा सुनकर मल्हाररावणे अहिल्याबाई को अपनी पुत्रवधू बनाना उचित समझा। इसके पश्चात् खंडेराव का विवाह 1733 में अहिल्यादेवी से हुआ। मल्हारराव के पुत्र खंडेराव को पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी, इसलिए वह प्रशासन से दूर रहे। मल्हारराव को खंडेराव का व्यवहार पसंद नहीं था। खंडेराव अपराधी और नशेडी था

इसलिए मल्हारराव और गौतमा बाई को अपनी पुत्रवधू से अधिक लगाव था। अहिल्याबाई की कुशाग्र बुद्धि को देखकर मल्हारराव ने अहिल्याबाई को राजकाज पढ़ाना शुरू कर दिया था। एक साधारण परिवार में जन्म लेने के बावजूद वो एक गौरवशाली होल्कर साम्राज्य की स्वामिनी बनी। उनके स्वभाव में कोई अहंकार नहीं था। उनकी रहने की स्थिति या बहुत ही आरामदायक थी। अहिल्याबाई के पतिव्रता होने के कारण उनका प्रेम बढ़ता गया। अहिल्याबाई ने खंडेराव होल्कर का कभी अपमान नहीं किया, भले ही उनमें अनेक अवगुण थे।

जिस दिन अहिल्याबाई का खंडेराव के घर पदार्पण हुआ, उसी दिन से घर में हर्ष और उत्साह था। अहिल्याबाई ने खंडेराव को कुछ विद्या सिखायी और उन्हें युद्ध के लिए भी तैयार किया। धीरे-धीरे खंडेराव पर प्रभाव पड़ने लगा और वह शासन प्रशासन में रुचि लेने लगे। मल्हाराव ने उन्हें शासन प्रशासन का कार्य सौंपना शुरू कर दिया।

इस प्रकार से वर्ष 1745 में अहिल्या माता को पुत्र प्राप्ति हुई उनका नाम मालेराव रखा गया। प्रदेश में सर्वत्र आनंदोत्सव मनाया गया। तीन साल बाद एक बेटी का जन्म हुआ। उनका नाम मुक्ताबाई रखा गया। अहिल्याबाई का वैवाहिक जीवन अल्पकालीन था। 31 वर्ष की आयु में ही अहिल्याबाई विधवा हो गयी थी। 24 मार्च, 1754 को कुंभेरी के युद्ध में तोप का गोला लगने से खंडेराव होल्कर की दु:खद मृत्यु हो गयी। उस समय सती प्रथा थी। अंतत: अहिल्याबाई ने सती प्रथा का पालन करते हुए सती होने की तैयारी शुरू की थी। यह देखकर मल्हारराव बहुत दु:खी हो गये। सुभेदार मल्हारराव होल्कर जो पहले से ही अपने बेटे के खोने से दु:खी थे। अहिल्याबाई के प्रति उनके मन मे पुत्रवत् प्रेम था। वो बहुत दु:खी हुए और उन्होंने अहिल्याबाई से कहा "अब तुम ही मेरा बेटा हो जब तुम चली जाओगी तो मुझे कौन सहारा देगा! आज तुम चली गयी और खंडू जीवित है ऐसा मैं समझता हूँ इस बुढ़े की दया आने दो!" अपने बुजुर्ग ससुर के अनुरोध का सम्मान करते हुए अहिल्याबाई ने अपने पति की मृत्यु के दु:ख को एक तरफ रख दिया और राज्य की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली और मल्हारराव की विश्वास को वास्तव मे सार्थक साबित कर दिया।

उन्होंने अपने संस्थान के लिए पर्याप्त धार्मिक काम किया। उन्होंने राज्य और राज्य के लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और इतिहास में अपनी जगह पक्की की। मराठा काल में निपुण महिलाओं की श्रृंखलाओं में पुण्य श्लोक अहिल्याबाई के धार्मिक कार्य का सम्मान करता है। हालांकि, उनके धार्मिक कार्यों और जनकल्याण कार्यों के कारण उनकी छवि उत्थानशील हैं। लेकिन उनका बेटा मालेराव अधिक सनखी था, उसे दूसरों के साथ मजाक करने में मजा आता था शासन और जनता के तरफ उसका ध्यान नहीं था। शून्य से निर्मित होल्कर साम्राज्य के सिंहासन पर चढ़ने के लिए आवश्यक गुण नहीं था। उनमें बहुत बुराई थी। राज्याभिषेक के आठ महीने पूरे होने पर मालेराव ठीक से शासन नहीं कर सके। कुछ ही दिनों में वह बीमार पड़ गये। अपने एक बच्चे को अहिल्या माँ ने सर्वोत्तम औषधि दी। लेकिन उनकी बीमारी बढ़ती ही गई और कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु हो गई।

अहिल्या माता ने अपने प्रिय बच्चे की याद में इंदौर में एक छत्री बनवाई। मालेराव की मृत्यु के बाद अहिल्या माता ने राज्य मामलों की बागडोर संभाली। इस दौरान कई संकट आये। लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। चोर लुटेरों के उत्पात से रैयत स्तब्ध था। आम लोगों का जीना मुश्किल हो गया था, चारों और लुटेरे का आतंक फैल गया। तब अहिल्या माता ने प्रजा को इस संकट से मुक्ति दिलाने और चोरों को स्थायी रूप से बंदोबस्त करने के लिए एक योजना बनाई।

"मैं अपनी एक इकलौती बेटी का विवाह उस वीर से करुँगा जो मेरे राज्य से चोरों और लुटेरे की परेशानी दूर करेगा"।

बस इसी घोषणा के फलस्वरूप एक तेजस्वी वीर खड़ा हुआ और उसने यह सम्मान ग्रहण किया। दरअसल, मुक्ताबाई एक गौरवशाली होल्कर साम्राज्य की शासक अहिल्या माता की बेटी थी। उनका विवाह किसी राजपुरुष से होना था। लेकिन प्रजाहित दक्ष अहिल्या माता ने प्रजा की रक्षा करते हुए अपनी इकलौती पुत्री का बलिदान प्रजा के लिए कर दिया। यह उनकी महानता का बहुत बडा प्रमाण हैं।

खंडेराव और मालेराव के निधन के बाद गद्दी पर कौन बैठेगा? उस समय के धर्मशास्त्र के अनुसार पुत्री या पुत्र कोई हक नहीं मिलता था। "महिला क्या काम कर सकती है यही अवसर हैं सत्ता को हस्तगत करने का" ऐसे विचार सहज ही लोगों के मन में आयेंगे। राघोबा ने इस प्रकार की

अहिल्या माता के राज्य में राजा और प्रजा में माँ बेटे की तरह सम्बध थे। अहिल्या माता प्रजा को अपना संतान मानती थी और उनकी खुशी और संतोष के लिए 24 घंटे काम करती थी। साथ ही उन्होंने जनता की समस्या को भी पूरा सजगता से सुलझाने का प्रयास किया। उन्हें जनता की समस्या के समाधान में किसी भी प्रकार का भेदभाव या पक्षपात नहीं किया। पूरी जिम्मेदारी के साथ सभी का सम्मान, सभी को समान न्याय देते थे। अहिल्या माता न्याय की देवी का अवतार थी। अपने सामान्य जीवन में सदैव पवित्र और प्रेममय रहने वाली अहिल्या माता न्याय के मामले में कठोर थी। क्योंकि अहिल्या माता स्वयं न्याय प्रिय थी इसलिये वे दूसरों पर बहुत क्रोधित रहती थी और कभी किसी के प्रति होने वाले किसी भी तरह के अन्याय को बर्दास्त नहीं करती थी।

ठोस योजना बनाई की, राघोबा सीधे इंदौर पर चढ़ जाये और उसे लुट ले फिर इंदौर को एक दत्तक के रूप में नियुक्त करे और हम दीवान के रूप में जी भर कर लुटे। जैसे ही अहिल्या माता को इस चांडाल चौकड़ी के षड्यंत्र की भनक लगी, उसने अपनी आँखों से आँसू पौंछ लिये। उनका क्रोध उत्पन्न हुआ वे आने वाले सभी संकट से लड़ने और उनका मुकाबला करने के लिए तैयार थे। होल्कर ने तुरंत घोषणा की उन्होंने राज्य की बागड़ोर अपने हाथ में ले ली है। इससे प्रजा बहुत प्रसन्न हुई। अहिल्या माता ने अपने नेतृत्व में महिलाओं की एक सेना तैयार की। उनकी कड़ी मेहनत और निरंतर प्रयासों को देखकर, लोगों और सेना में अविश्वसनीय उत्साह था। वहाँ वो सपना देखते हैं कि राघोबा और चंद्रचुड होल्कर राज्य के स्वामी बन गये और 50 हजार सैनिकों के साथ उज्जैन पहुँचे। जब अहिल्या के द्वारा भेजा गया पत्र राघोबा के हाथ लग गया, पत्र पढ़ने के बाद उनका उत्साह कम हो गया। उनका सपना खत्म हो गया था। यह पत्र अहिल्या माता की अद्भुत प्रतिभा, चातुर्य और कूटनीति की उत्कृष्ट कृति थी। पत्र पढ़कर राघोबा आश्चर्य चकित रह गये। अंतत: अहिल्या माता के सामने हार माननी पड़ी अहिल्या माता ने अपनी बुद्धि और कूटनीति से उनके विद्रोह को दबा दिया।

अहिल्या माता पर एक के बाद एक संकट आते गये वह हर संकट को सफलतापूर्वक पार कर लेती थी। इस धरती पर शासन काल के दौरान युद्ध की घटनाएँ बहुत कम हुई। क्षुद्र कारण से उन्होंने कभी भी युद्ध नहीं किया। क्योंकि उन्हें युद्ध से पहले की विनाश और अगाध क्षती का अंदाजा हो गया था। उन्होंने उनके पास मौजूद तात्कालिक शक्ति और शक्ति का उपयोग लोगों की कल्याण के लिए किया और युद्ध में होने वाली बर्बादी को टाला।

एक आदर्श प्रशासक के लिए आवश्यक सभी गुण अहिल्या माता में मौजूद थे। वह धर्म, पारायण, प्रेममयी और उत्कृष्ट राजनीतिक विशेषज्ञ भी थी। उन्होंने अपने सौजन्यता एवं प्रतिभा के प्रयोग से प्रजा के शत्रु समझे जाने वाले भीलों को मित्र बनाकर आम जनता का जीवन सुरक्षित किया। अहिल्यामाता सचमुच कूटनीतिज्ञ, उदार और विवेकशील थी। उन्होंने बिना किसी रक्तपात के अहिंसा और प्रेम से भीलों पर विजय प्राप्त की थी। जैसे ही अहिल्या माता सिंहासन पर बैठी, उन्होंने सबसे पहले किसानों के साथ पूरी आबादी पर अत्याचार करने वालो करों, कानूनों और नियमों को समाप्त कर दिया और प्रजा के हित में कानून और नियम लागू किए और राज्य का चेहरा बदल दिया। वो जानती थी की संपूर्ण जनता का जीवन कृषि पर निर्भर है और यदि राज्य का विकास करना हैं, तो किसानों को पहले स्थान पर रखना जरुरी हैं। इसलिये उन्होंने किसानों के कल्याण के लिए कई योजना लागू की और उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया। अहिल्या माता ने अनेक स्थानों पर मंदिर, तीर्थ बनवाये तथा अन्नछत्र और सदावर्त स्थापित किए। अहिल्या माता सैनिक की मृत्यु के बाद और उससे पहले सैनिकों के परिवार के भरण-पोषण की सारी जिम्मेदारी उठायी थी। अपनी जान की परवाह किए बिना देश की रक्षा के लिए लड़ने वाले सैनिकों को अहिल्या माता ने कोई असुविधा नहीं होने दी।

अहिल्या माता के राज्य में राजा और प्रजा में माँ बेटे की तरह सम्बध थे। अहिल्या माता प्रजा को अपना संतान मानती थी और उनकी खुशी और संतोष के लिए 24 घंटे काम करती थी। साथ ही उन्होंने जनता की समस्या को भी पूरा सजगता से सुलझाने का प्रयास किया। उन्हें जनता की समस्या के समाधान में किसी भी प्रकार का भेदभाव या पक्षपात नहीं किया। पूरी जिम्मेदारी के साथ सभी का सम्मान, सभी को समान न्याय देते थे। अहिल्या माता न्याय की देवी का अवतार थी। अपने सामान्य जीवन में सदैव पवित्र और प्रेममय रहने वाली अहिल्या माता न्याय के मामले में कठोर थी। क्योंकि अहिल्या माता स्वयं न्याय प्रिय थी इसलिये वे दूसरों पर बहुत क्रोधित रहती थी और कभी किसी के प्रति होने वाले किसी भी तरह के अन्याय को बर्दास्त नहीं करती थी। न्याय देते समय सामने वाले को किसी भी प्रकार का भेदभाव के बिना उचित न्याय देती थी।

राजकाज, धर्मदान, सत्कार्य का क्रम चलता रहा, धीरे-धीरे दिन चढ़ते गये, उम्र दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी वो वृद्धावस्था में प्रवेश कर चुकी थी। 29 साल की उमर में शादी से लेकर बुढांपे तक उनका जीवन दु:ख से भरा रहा। अंतत: माँ बीमार पड़ गयी एक अत्यंत गौरवशाली परोपकारी जीवन का अंत हो रहा था। होल्कर राज्य को अपनी माँ की याद सताने लगी थी। भारत के गौरवशाली इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ समाप्त होने जा रहा था। करीब 70 साल का अहम कार्यकाल खत्म होने वाला था। 13 अगस्त, 1995 को श्रावण का महिना था अहिल्या माता ने सहस्त्र ब्राह्मण के भोजन का संकल्प छोड़ दिया था। बहुत दान पुण्य किया भगवान के पवित्र नामों का जप करना शुरू कर दिया और कुछ ही समय में अहिल्या माता ने पूरी रैयत को विशाल सागर में छोड़कर दुनिया को अलविदा कह दिया।

एक शासक के रूप में अहिल्या माता का असाधारण महत्त्व था। उन्होंने राजनीतिक जीवन को पवित्र कर दिया था। उन्होंने दुनिया को बखुबी दिखाया की धर्म और राजनीति के सही संयोजन से इस दुनिया और परलोक दोनों को अच्छी तरह सुरक्षित हासिल किया जा सकता हैं। उसके लिए आवश्यक सभी गुण अहिल्या माता के शरीर में विद्यमान थे। सारी व्यवहारिक शक्तियाँ उनके जीवन में समाहित थी। अहिल्या माता का जीवन हिन्दू संस्कृति में आदर्श नारीत्व का एक ज्वलंत उदाहरण हैं और इसलिए उनका कार्य भारत के गौरवशाली इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ हैं। ❑

अहिल्याबाई होल्कर : स्त्री शिक्षा दर्शन

डॉ. अंजू प्रदीप खेड़कर
सहायक प्राध्यापक
प्राणीशास्त्र विभाग, विद्याभारती महाविद्यालय, कैंप, अमरावती, महाराष्ट्र

भारतीय इतिहास कई महान योद्धाओं, शूरवीरों और क्रांतिकारियों की उपलब्धियों से भरा हुआ है। इन्हीं शूरवीरों में पुरुषों के साथ-साथ कई महिलाओं के नाम भी शामिल हैं, जो एक कुशल योद्धा के रूप में अपना नाम इतिहास में दर्ज करवा चुकी हैं। महारानी अहिल्याबाई होलकर उस दौर की शासक थी जब महिलाओं के लिए शिक्षा, राजनीति, और शासन में भाग लेना अत्यंत कठिन था। लेकिन उन्होंने समाज की रूढ़िवादी धारणाओं को पार करते हुए न केवल शक्तिशाली राज्य पर शासन किया बल्कि एक कुशल नेता दूरदर्शी विचारक और प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रूप में समाज में अपनी पहचान बनाई।

ऐसी महान वीरांगना का जन्म 31 मई, 1975 को महाराष्ट्र के अहमदनगर शहर के छौंड़ी नामक एक गाँव में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता मंकोजी राव शिंदे, महाराष्ट्र के मालवा क्षेत्र के एक साधारण किसान थे। अहिल्याबाई उनकी एकमात्र पुत्री थीं। रानी अहिल्याबाई को न्याय की देवी के नाम से भी जाना जाता था। वहीं उन्होंने अपने शासनकाल में कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। अहिल्याबाई होलकर उन्हीं योद्धाओं में से एक है। अहिल्याबाई होलकर एक प्रेरणादायक महिला थीं जिनको न्याय की देवी के नाम से भी जाना जाता था। अहिल्याबाई होलकर का पूरा जीवन आज के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। अहिल्याबाई होलकर 18वीं शताब्दी की एक प्रख्यात महिला शासक थीं, जिन्होंने न केवल अपने राज्य को समृद्धि की ऊँचाइयों पर पँहुचाया बल्कि सामाजिक सुधारों में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके जीवन और

> स्त्री शिक्षा में अहिल्याबाई का आर्थिक मदद का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा उन्होंने उन परिवारों को आर्थिक मदद की जो अपनी बेटियों को शिक्षा दिलाने में असमर्थ थे उनको आर्थिक सहयोग प्रदान किया। अहिल्याबाई होल्कर के इन प्रयासों का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके द्वारा शुरू की गई शिक्षण संस्थाओं और कार्यक्रमों ने महिलाओं को न केवल शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाया। उनके समय में महिलओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ी, जिसका असर आनेवाली पीढ़ियों पर भी पड़ा।

शासनकाल का एक महत्त्वपूर्ण पहलू स्त्री शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण और प्रयास था। अहिल्याबाई के समय में सामाजिक परिप्रेक्ष्य अगर देखे तो भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति काफी पिछड़ी हुई थी। महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर बहुत कम मिलते थे और उनकी भूमिका केवल घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती थी। इस सामाजिक पृष्ठभूमि में अहिल्याबाई होल्कर ने एक आदर्श स्थापित किया। अहिल्याबाई का दृष्टिकोण स्त्री शिक्षा के बारें में मानना था की शिक्षा न केवल समाज को सुधारने का एक साधन है बल्कि यह महिलाओं को सशक्त बनाने का भी प्रमुख जरिया है। उन्होंने अपने शासनकाल में महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। अहिल्याबाई का शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करने में प्रमुख योगदान था। अहिल्याबाई ने कई विद्यालय और शिक्षण संस्थान स्थापित किए जहाँ महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिले। उन्होंने सुनिश्चित किया कि इन संस्थानों में महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो।

अहिल्याबाई होलकर ने शिक्षकों के प्रशिक्षण पर भी जोर दिया ताकि वे महिलाओं को सही और प्रभावी तरीके से शिक्षा दे सकें। इसके लिए उन्होंने अपने राज्य में शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए थे। अहिल्याबाई ने महिलाओं के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा को भी महत्त्वपूर्ण माना। उन्होंने महिलाओं को वेदों, पुराणों और अन्य धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा दिलाई जिससे हर महिला समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त कर सकें।

स्त्री शिक्षा में अहिल्याबाई का आर्थिक मद्द का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा उन्होंने उन परिवारों को आर्थिक मदद की जो अपनी बेटियों को शिक्षा दिलाने में असमर्थ थे उनको आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

अहिल्याबाई होल्कर के इन प्रयासों का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके द्वारा शुरू की गई शिक्षण संस्थाओं और कार्यक्रमों ने महिलाओं को न केवल शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाया। उनके समय में महिलओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ी, जिसका असर आनेवाली पीढ़ियों पर भी पड़ा।

अहिल्याबाई के इस स्त्री शिक्षा के प्रति योगदान ने स्त्री शिक्षा को जो महत्त्व दिया, वह आज भी प्रेरणादायक है। उनके प्रयासों ने यह सिद्ध किया की शिक्षा केवल ज्ञान का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में बदलाव लान का एक शक्तिशाली उपकरण है। आज शिक्षा में महिलाएँ जो ऊँचे-ऊँचे स्थान पर है उसमें अहिल्याबाई होलकर का योगदान महत्त्वपूर्ण है। अहिल्याबाई का योगदान आज भी स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शन का स्रोत बना हुआ है और हमें उनके प्रयासों से प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि हम एक समृद्ध और सशक्त समाज का निर्माण कर सकें। इस स्त्री शिक्षा के देवी अहिल्याबाई होलकर को मैं शतशः नमन करती हूँ। ❑

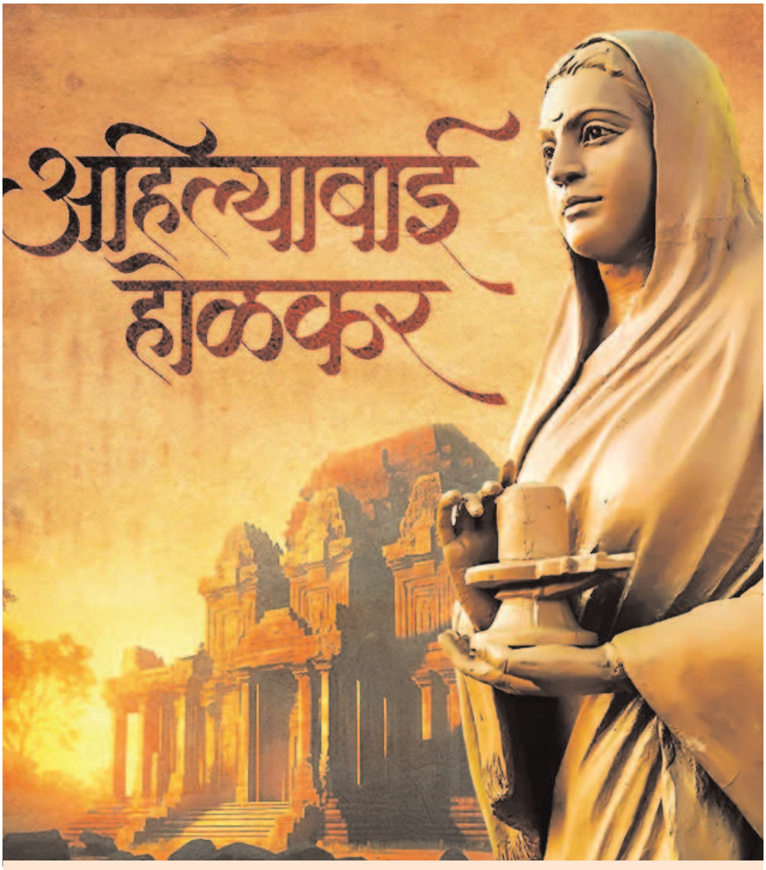

अहिल्याबाई का योगदान आज भी स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शन का स्रोत बना हुआ है और हमें उनके प्रयासों से प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि हम एक समृद्ध और सशक्त समाज का निर्माण कर सकें। इस स्त्री शिक्षा के देवी अहिल्याबाई होलकर को मैं शतशः नमन करती हूँ।

देवी अहिल्याबाई होल्कर का स्त्री चिंतन

सोनाली चितलकर
राजनीति विज्ञान विभाग,
मिरांडा हाउस,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हिन्दुओं में स्त्रियों को पर्दा करने का नियम नहीं था। इसीलिए अहिल्या बाई स्वच्छंद रूप से सभा में बैठ कर अपनी प्रजा की समस्यों का निदान कर पाती थीं। – सर जॉन मॉलकॉम, इतिहासकार

भारत (और अन्य तीसरी दुनिया के देशों) में महिलाओं की एजेंसी और अभिव्यक्ति की अवधारणा एक जेंडर आधारित नारीवादी ज्ञानमीमांसा से जुड़ी हुई है जो इतनी बड़ी और आधिपत्यपूर्ण हो गई है कि इसने 'प्रकृति' या शाक्तित्व की अभिव्यक्ति की स्वदेशी समझ को अस्पष्ट कर दिया है। भारतीय इतिहास हमें सशक्त शक्तित्व के पर्याप्त उदाहरण प्रदान करता है। देवी अहिल्याबाई होल्कर इस शाक्तित्व के विचार की ज्वलंत उद्धरण हैं। देवी अहिल्याबाई होल्कर भारतीय शाक्तित्व को चार मुख्य ध्रुव बिंदुओं से परिभाषित करती हैं- धर्म केन्द्रीयता, करुणा, समाज के प्रति समर्पण एवं कर्तव्य परायणता। इस आलेख में इन चरों बिंदुओं पे प्रकाश डालने का प्रयास है –

धर्म केन्द्रीयता

उनके बिना, तीर्थ खंडहर हो गए होते और भारत में कोई भी मंदिर नहीं होता। वह बहादुर रानी अहिल्याबाई होल्कर थीं। अहिल्या का जन्म महाराष्ट्र के अहमदनगर के चोंडी गाँव में हुआ था। ऐतिहासिक परिदृश्य में उनका आना कुछ हद तक संयोग था। पुणे जाते समय, मल्हार राव होल्कर चोंडी में रुके और मंदिर में आठ वर्षीय अहिल्याबाई को भूखे और गरीबों की मदद करते देखा। उन्होंने उस युवती की दानशीलता और चरित्र की मजबूती से प्रभावित होकर अपने बेटे खंडेराव होल्कर के लिए उसस शादी करने का फैसला किया। 1733 में आठ साल की उम्र में ही उन्होंने खांडेराव होलकर से विवाह कर लिया।

रानी अहिल्याबाई होल्कर भगवान शिव की बहुत बड़ी भक्त थीं। उनके नाम से जारी हर शाही घोषणापत्र पर उनके हस्ताक्षर के साथ 'श्री शंकर' लिखा होता था। त्वदीय वस्तु गोविन्दः तुभ्यमेव समर्पये – का ये सुन्दर भाव देवी अहिल्याबाई होल्कर का जीवन सार था।

प्रख्यात इतिहासकार और सिविल सेवक सर जॉन मैल्कम के अनुसार देवी अहिल्याबाई होल्कर सुबह की प्रार्थना करने और पारंपरिक अनुष्ठान करने के लिए दिन निकलने से एक घंटा पहले उठती थीं, जिसमें काली गाय और तुलसी के पौधे का पवित्र दर्शन शामिल था। फिर वह एक निश्चित अवधि के लिए भागवत, पुराण आदि पवित्र पुस्तकों को सुनती थीं और उसके बाद गरीबों को दान और भोजन देती थीं। वह लगभग दो बजे अपने दरबार में जाती थीं और शाम छह बजे तक राज्य के काम निपटाती थीं। दो या तीन घंटे ध्यान, पूजा और अल्पाहार में व्यतीत करने के बाद, प्रशासनिक और राजकीय मामलों को पुनः शुरू किया जाता और वह रात के ग्यारह बजे तक इस कार्य में लगी रहतीं।

रानी अहिल्याबाई की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर में एक ज्योतिर्लिंग की पुनः स्थापना करना था। मूल मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक था। 1780 में, अहिल्याबाई होल्कर ने पुराने मंदिर के बगल में खोए हुए मंदिर को बदलने का काम अपने हाथ में लिया। 1791 में उन्होंने वाराणसी में पूरे मणिकर्णिका घाट का पुनर्निर्माण करवाया। अहिल्याबाई होल्कर ने पुराने सोमनाथ मंदिर की जगह मुख्य ज्योतिर्लिंग के पास एक और मंदिर बनवाया। किंवदंती के अनुसार उन्हें स्वयंभूलिंग का सपना आया था। इस सपने ने उन्हें मंदिर बनवाने के लिए प्रेरित किया। अहिल्याबाई होल्कर ने धर्म और हिंदू पूजा को बहाल करने के लिए पूरे भारत में प्रयास किए। उन्होंने कई जगहों पर मंदिर बनवाए और उनका जीर्णोद्धार किया; जिनमें श्रीनगर, हरिद्वार, केदारनाथ, बद्रीनाथ, ऋषिकेश, प्रयाग, नासिक, ओंकारेश्वर,

महाबलेश्वर, पुणे, इंदौर, श्रीशैलम, उडुपी और गोकर्ण शामिल हैं। उन्होंने नेपाल के काठमांडू में भी मंदिर निर्माण में योगदान दिया।

करुणा

पश्चिमी प्रतिमान नारीवाद को तर्कवाद की शाखा के रूप में परिभाषित करते हैं। भारतीय महिला इसके विपरीत दयालु और करुणामयी है। देवी अहिल्या बाई भी ऐसी ही भारतीय स्त्री थीं। अहिल्याबाई ने कभी मृत्युदंड नहीं दिया। उन्होंने कैदियों से व्यक्तिगत शपथ ली और उन्हें रिहा कर दिया। जिस कैदी ने दोबारा कोई गलत काम न करने का वचन दिया, उसे रिहा कर दिया गया। ऐसे कई कैदियों ने ईमानदारी से जीवन जीना शुरू कर दिया और उनकी इस उदारता ने परिणाम दिखाए।

कर्तव्य परायणता

उनके पति खांडेराव 1754 में कुंभेर की लड़ाई में मारे गए, जिससे वे 29 साल की उम्र में विधवा हो गईं। जब अहिल्याबाई सती होने वाली थीं, तो उनके ससुर मल्हार राव ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। उस समय मल्हार राव होलकर उनके सबसे करीबी समर्थक थे। कल्पना कीजिए कि एक महिला ने एक युद्ध में अपने पति को खो दिया और फिर कुछ सालों बाद अपने एकमात्र समर्थक को भी खो दिया। बड़ी संख्या में सम्राट युद्ध की तैयारी कर रहे थे। आंतरिक दुश्मन भी मौजूद थे। जब वह आगे बढ़ीं तो बहुत दुश्मनी थी, लेकिन वह डरी नहीं।

जबकि राज्य में कुछ लोगों ने उनके सिंहासन पर बैठने पर आपत्ति जताई, होलकरों की उनकी सेना उनके साथ खड़ी रही और अपनी रानी के नेतृत्व का समर्थन किया। अपने शासनकाल के सिर्फ एक साल बाद, साहसी होलकर रानी को अपने राज्य की रक्षा करते हुए देखा गया - हमलावरों से लड़ते हुए और मालवा को चुराए जाने से रोकने के लिए कीलें लगाते हुए। उन्होंने तलवारों और हथियारों से लैस होकर सेना का नेतृत्व किया। सुबेदार तुकोजीराव होलकर (जो मल्हार राव के दत्तक पुत्र भी थे) उनके सैन्य विश्वासपात्र थे, और उन्होंने उन्हें सेना का प्रमुख चुना।

समाज के प्रति समर्पण

1767 में देवी अहिल्याबाई ने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया। महल, गवर्नमेंट हाउस और नर्बदा घाट का निर्माण अहिल्याबाई द्वारा किए गए पहले काम थे। फिर उनके आदेश से काशी विश्वेश्वर, श्री राम, श्री कृष्ण और श्री विट्ठल के मंदिर एक के बाद एक बनाए गए।

कपड़ा बुनकरों को किले के पास अपनी जमीन आवंटित की गई। समय के साथ महेश्वर राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व का केंद्र बन गया, जहाँ से महान महिला ने सोमनाथ, मथुरा, वाराणसी, पुरी, अयोध्या, गया और अन्य स्थानों पर मंदिरों के पुनर्निर्माण का मार्गदर्शन किया और आम लोगों और तीर्थयात्रियों के लिए घाटों, कुओं, विश्राम गृहों का निर्माण करवाया, जो अशोक महान के समय में भी नहीं देखा गया था। इसके राजनीतिक महत्त्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लगभग सभी महत्त्वपूर्ण राज्यों और शक्तियों के प्रतिनिधि या तो महेश्वर में रहते थे या नियमित रूप से यहाँ आते थे। इस प्रकार माहेश्वरी साड़ियाँ विकसित की गईं जो वर्तमान में सौंदर्य और स्त्रीत्व का प्रतीक हैं।

> **रानी अहिल्याबाई की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर में एक ज्योतिर्लिंग की पुनः स्थापना करना था। मूल मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक था। 1780 में, अहिल्याबाई होल्कर ने पुराने मंदिर के बगल में खोए हुए मंदिर को बदलने का काम अपने हाथ में लिया। 1791 में उन्होंने वाराणसी में पूरे मणिकर्णिका घाट का पुनर्निर्माण करवाया। अहिल्याबाई होल्कर ने पुराने सोमनाथ मंदिर की जगह मुख्य ज्योतिर्लिंग के पास एक और मंदिर बनवाया। किंवदंती के अनुसार उन्हें स्वयंभूलिंग का सपना आया था। इस सपने ने उन्हें मंदिर बनवाने के लिए प्रेरित किया।**

निष्कर्ष

अहिल्याबाई होल्कर की विरासत आस्था, नेतृत्व और सांस्कृतिक संरक्षण की है। उन्होंने हिंदू समाज के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को मजबूत करने के लिए मंदिरों का जीर्णोद्धार और निर्माण करवाया। उनके शासनकाल को मंदिर जीर्णोद्धार के स्वर्णिम युग के रूप में याद किया जाता है। और उनका योगदान पीढ़ियों को प्रेरित करता रहता है।

अहिल्याबाई होल्कर का जीवन आधुनिक महिलाओं के लिए बहुमूल्य सबक देता है। व्यक्तिगत त्रासदी का सामना करने के बावजूद उनका समर्पण जन कल्याण के लिए था। उन्होंने सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए रीति-रिवाजों से नाता तोड़ लिया। एक महिला होने के बावजूद उन्होंने लोगों का विश्वास जीता। कैसे? न्याय के प्रति उनकी मेहनती दृढ़ता और करुणा के कारण। अहिल्याबाई होलर ने दिखाया कि एक महिला नेता मजबूत और दयालु दोनों हो सकती है।

आधुनिक सनातनी महिलाएँ अहिल्याबाई होल्कर की विरासत से प्रेरणा ले सकती हैं। वे उनकी शक्ति, बुद्धि और परोपकार के गुणों को अपना सकती हैं। पुरुष-केंद्रित दुनिया में शासन करते हुए धर्म के प्रति उनकी गहरी भक्ति सीखने के लिए एक और सबक है। अहिल्याबाई होल्कर को सिर्फ एक रानी के रूप में याद नहीं किया जाता है; उन्हें हिंदू परंपराओं की संरक्षक और अटूट भक्ति की एक किरण के रूप में सम्मानित किया जाता है। ❑

अहिल्याबाई होलकर : भारत की दार्शनिक साम्राज्ञी

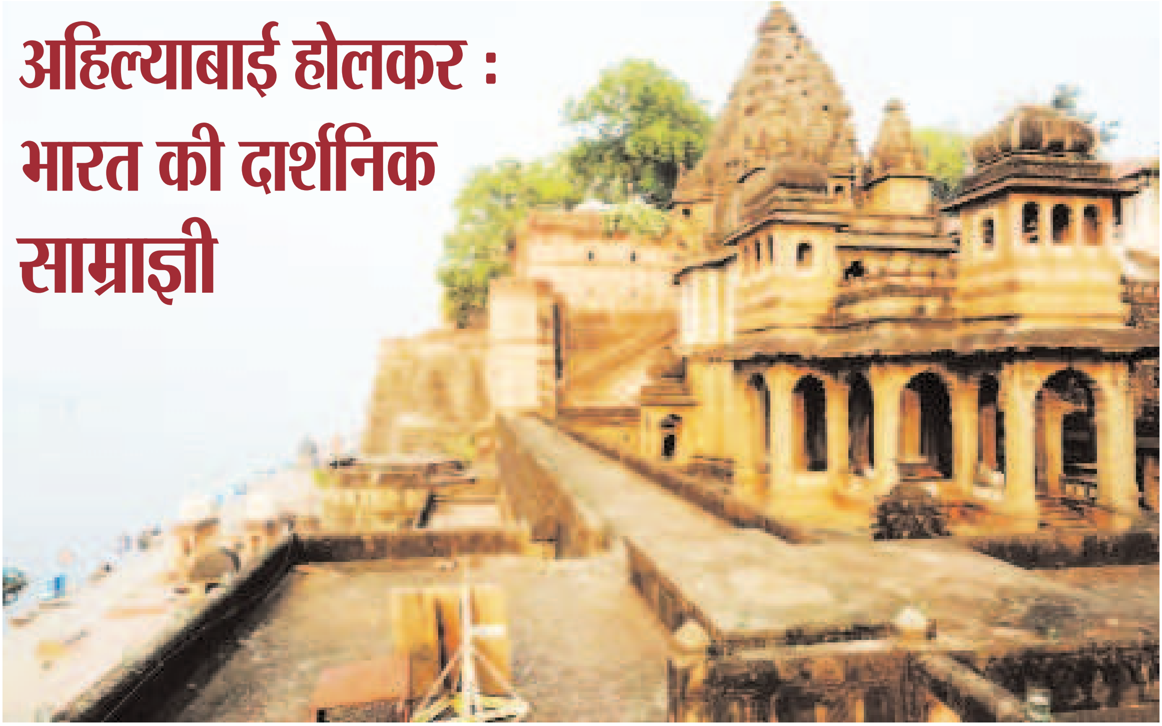

डॉ. जसपाल सिंह बरवाल
बीएड कोऑर्डिनेटर,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा निदेशालय,
जम्मू विश्वविद्यालय

अहिल्याबाई को एक दार्शनिक रानी के रूप में भी जाना जाता है। अहिल्याबाई एक महान् और धर्मपारायण स्त्री थी। वह हिन्दू धर्म को मानने वाली थी और भगवान शिव की बड़ी भक्त थी। संस्कृति और परम्पराओं का देश भारत हमेशा से ही दुनिया भर में आकर्षण का केंद्र रहा है। यहाँ की विविधताओं की वजह से दुनिया भर से लोग यहाँ खींचे चले आते हैं। भारत का अपना एक समृद्ध इतिहास रहा है। यहाँ कई शासकों ने राज किया, तो वहीं यहाँ कई लड़ाइयाँ भी लड़ी गईं। इसके अलावा भारत के इतिहास के पन्नों में कई ऐसी रानियों के नाम भी दर्ज हैं, जिन्होंने अपने पराक्रम और दृढ़ निश्चय से विरोधियों को कड़ी टक्कर दी। रानी अहिल्याबाई इन्हीं में से एक थीं।

भारत की आस्था का विस्तार

रानी अहिल्याबाई ने भारत के भिन्न-भिन्न भागों में अनेक मन्दिरों, धर्मशालाओं और अन्नक्षेत्रों का निर्माण कराया था। कलकत्ता से बनारस तक की सड़क, बनारस में अन्नपूर्णा का मन्दिर, गया में विष्णु मन्दिर उनके बनवाये हुए हैं। इन्होंने घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया, मार्ग बनवाए, भूखों के लिए सदावर्त (अन्नक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाईं, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की। उन्होंने अपने समय की हलचल में प्रमुख भाग लिया। रानी अहिल्याबाई ने इसके अलावा काशी, गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, द्वारिका, बद्रीनारायण, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी इत्यादि प्रसिद्ध तीर्थस्थानों पर मंदिर बनवाए और धर्म शालाएँ खुलवायीं। कहा जाता है कि रानी अहिल्याबाई के स्वप्न में एक बार भगवान शिव आए। वे भगवान शिव की भक्त थीं और इसलिए उन्होंने 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया।

रानी अहिल्याबाई ने कलकत्ता से बनारस तक की सड़क, बनारस में अन्नपूर्णा का मन्दिर, गया में विष्णु मन्दिर बनवाये।

महिला सशक्तीकरण की पक्षधर

भारतीय संस्कृति में महिलाओं को दुर्गा और चण्डी के रूप में दर्शाया गया है। ठीक इसी तरह अहिल्याबाई ने स्त्रियों को उनका उचित स्थान दिया। नारी शक्ति का भरपूर उपयोग किया। उन्होंने यह बता दिया कि स्त्री किसी भी स्थिति में पुरुष से कम नहीं है। वे स्वयं भी पति के साथ रणक्षेत्र में जाया करती थीं। पति के देहान्त के बाद भी वे युद्ध क्षेत्र में उतरती थीं और सेनाओं का नेतृत्व करती थीं। अहिल्याबाई के गद्दी पर बैठने के पहले शासन का ऐसा नियम था कि यदि किसी महिला का पति मर जाए और उसका पुत्र न हो तो उसकी संपूर्ण

संपत्ति राजकोष में जमा कर दी जाती थी, परंतु अहिल्या बाई ने इस कानून को बदल दिया और मृतक की विधवा को यह अधिकार दिया कि वह पति द्वारा छोड़ी हुई संपत्ति की वारिस रहेगी और अपनी इच्छानुसार अपने उपयोग में लाए और चाहे तो उसका सुख भोगे या अपनी संपत्ति से जनकल्याण के काम करे। अहिल्या बाई की विशेष सेवक एक महिला ही थी। अपने शासनकाल में उन्होंने नदियों पर जो घाट स्नान आदि के लिए बनवाए थे, उनमें महिलाओं के लिए अलग व्यवस्था भी हुआ करती थी। स्त्रियों के मान-सम्मान का बड़ा ध्यान रखा जाता था। लड़कियों को पढ़ाने-लिखाने का जो घरों में थोड़ा-सा चलन था, उसे विस्तार दिया गया। दान-दक्षिणा देने में महिलाओं का वे विशेष ध्यान रखती थीं।

महिलाओं का सम्मान

एक समय बुन्देलखंड के चन्देरी मुकाम से एक अच्छा 'धोती-जोड़ा' आया था, जो उस समय बहुत प्रसिद्ध हुआ करता था। अहिल्या बाई ने उसे स्वीकार किया। उसी समय एक सेविका जो वहाँ मौजूद थी जो धोती-जोड़े को बड़ी ललचाई नजरों से देख रही थी। अहिल्याबाई को जब यह आभास हुआ तो उस कीमती जोड़े को उस सेविका को दे दिया। इसी प्रकार एक बार उनके दामाद ने पूजा-अर्चना के लिए कुछ बहुमूल्य सामग्री भेजी थी। उस सामान को एक कमज़ोर भिखारिन जिसका नाम सिन्दूरी था, उसे दे दिया। किसी सेविका ने याद दिलाया कि इस सामान की ज़रूरत आपको भी है परन्तु उन्होंने यह कहकर सेविका की बात को नकार दिया कि उनके पास और हैं।

किसी महिला का पैरों पर गिर पड़ना अहिल्या बाई को पसन्द नहीं था। वे तुरंत अपने दोनों हाथों का सहारा देकर उसे उठा लिया करती थीं। उनके सिर पर हाथ फेरतीं और ढाढस बंधाती। रोने वाली स्त्रियों को वे उनके आँसुओं को रोकने के लिए कहतीं, आँसुओं को संभालकर रखने का उपदेश देतीं और उचित समय पर उनके उपयोग की बात कहतीं। उस समय किसी पुरुष की मौजूदगी को वे अच्छा नहीं समझती थीं। यदि कोई पुरुष किसी कारण मौजूद भी होता तो वे उसे किसी बहाने वहाँ से हट जाने को कह देतीं। इस प्रकार एक महिला की व्यथा, उसकी भावना को एकांत में सुनतीं, समझती थीं। यदि कोई कठिनाई या कोई समस्या होती तो उसे हल कर देतीं अथवा उसकी व्यवस्था करवातीं। महिलाओं को एकांत में अपनी बात खुलकर कहने का अधिकार था। राज्य के दूरदराज के क्षेत्रों का दौरा करना, वहाँ प्रजा की बातें, उनकी समस्याएँ सुनना, उनका हल तलाश करना उन्हें बहुत भाता था। अहिल्याबाई, जो अपने लिए पसन्द करती थीं, वही दूसरों के लिए पसंद करती थीं। इसलिए विशेषतौर पर महिलाओं को त्यागमय उपदेश भी दिया करती थीं। एक बार होल्कर राज्य की दो विधवाएँ अहिल्याबाई के पास आईं, दोनों बड़ी धनवान थीं, परन्तु दोनों के पास कोई सन्तान नहीं थी। वे अहिल्याबाई से प्रभावित थीं। अपनी अपार संपत्ति अहिल्याबाई के चरणों में अर्पित करना चाहती थीं। संपत्ति न्योछावर करने की आज्ञा मांगी, परन्तु उन्होंने उन दोनों को यह कहकर मना कर दिया कि जैसे मैंने अपनी संपत्ति जनकल्याण में लगाई है, उसी प्रकार तुम भी अपनी संपत्ति को जनहित में लगाओ। उन विधवाओं ने ऐसा ही किया और वे धन्य हो गईं।

सार

भारत की इस दार्शनिक रानी को वर्तमान में बहुत आदर सम्मान दिया गया है। इस महान् शासिका के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में इंदौर घरेलू हवाई अडडे् का नाम देवी अहिल्याबाई होल्कर हवाई अड्डा रखा गया है। इसी के साथ इंदौर विश्वविद्यालय को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय नाम दिया गया है। ❑

रानी अहिल्याबाई ने भारत के भिन्न-भिन्न भागों में अनेक मन्दिरों, धर्मशालाओं और अन्नक्षेत्रों का निर्माण कराया था। कलकत्ता से बनारस तक की सड़क, बनारस में अन्नपूर्णा का मन्दिर, गया में विष्णु मन्दिर उनके बनवाये हुए हैं। इन्होंने घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया, मार्ग बनवाए, भूखों के लिए सदावर्त (अन्नक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाईं, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की। उन्होंने अपने समय की हलचल में प्रमुख भाग लिया। रानी अहिल्याबाई ने इसके अलावा काशी, गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, द्वारिका, बद्रीनारायण, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी इत्यादि प्रसिद्ध तीर्थस्थानों पर मंदिर बनवाए और धर्म शालाएँ खुलवायीं।

अहिल्याबाई होल्कर : एक प्रेरक गाथा

डी. बी. सलगर
एनई
कलेक्टर ऑफिस,
लातूर, महाराष्ट्र

मध्य भारत की धरती पर, जहाँ कभी बाहुबली का पराक्रम गूंजता था, वहीं 18वीं शताब्दी में एक ऐसी विभूति का उदय हुआ, जिसने अपनी दूरदृष्टि, न्यायप्रियता और करुणा से इतिहास के पन्नों को स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर दिया। यह थीं महारानी अहिल्याबाई होल्कर, जिनका जीवन प्रेरणा का अक्षय स्रोत है।

बाल्यकाल और शिक्षा का प्रारंभ (1725-1748)

महाराष्ट्र के माहूर नामक गाँव में 30 मई 1725 को जन्मीं अहिल्याबाई का बचपन सादगीपूर्ण वातावरण में बीता। उनके पिता मनकोजी छोटे जमींदार थे, लेकिन उनकी माँ धर्मनिष्ठ और सत्यवादी महिला थीं। इन्हीं संस्कारों का प्रभाव अहिल्याबाई पर बचपन से ही पड़ा। उन्हें शास्त्रों और पुराणों को पढ़ने का अत्यधिक शौक था। संस्कृत और मराठी भाषाओं का गहन ज्ञान उन्हें प्राप्त था।

कहा जाता है कि बचपन में एक दिन अहिल्याबाई गाँव के मंदिर में गईं। वहाँ उन्होंने देखा कि मूर्तियों की उपेक्षा की जा रही है। उनके बाल हृदय को यह बात असहनीय लगी। उन्होंने स्वयं मूर्तियों की सफाई की और उनकी पूजा की। यही वह घटना थी जिसने उनके धर्मपरायण स्वभाव की नींव रखी।

विवाह और अप्रत्याशित मोड़ (1748-1754)

1748 में अहिल्याबाई का विवाह खंडेराव होल्कर से हुआ। खंडेराव, मल्हारराव होल्कर के पुत्र और इंदौर रियासत के भावी उत्तराधिकारी थे। विवाह के बाद अहिल्याबाई को राज-परिवार का वातावरण तो मिला, परंतु सुख का समय ज्यादा लंबा न रह सका। मात्र छह साल बाद ही युद्ध के मैदान में खंडेराव वीरगति को प्राप्त हुए। उस समय अहिल्याबाई मात्र 21 वर्ष की थीं। यह उनके जीवन का एक कठिन मोड़ था। युवावस्था में ही पति खो देने का गहरा आघात उन्हें लगा। उस समय समाज में सती प्रथा का प्रचलन था, परंतु अहिल्याबाई ने इस कुरीति का विरोध किया। उन्होंने सती न होने का साहसिक

निर्णय लिया और अपने ससुर, मल्हारराव होल्कर की सहायता से राज्य के कार्यों में योगदान देना शुरू किया।

राजनीति में प्रवेश और प्रशासनिक कुशलता (1754-1767)

अपने ससुर के साथ राज्य संचालन के अनुभव से अहिल्याबाई ने प्रशासन की बारीकियों को बखूबी सीखा। उन्होंने मल्हारराव होल्कर को युद्धों में भी सहायता प्रदान की। युद्धनीति और कूटनीति में उनकी सूझबूझ देखकर मल्हारराव भी उनकी प्रशंसा करते थे।

1767 में मल्हारराव होल्कर के देहांत के पश्चात् इंदौर रियासत की बागडोर संभालने की चुनौती अहिल्याबाई के सामने आई। उस समय समाज में यह धारणा प्रचलित थी कि स्त्रियाँ राज्य का संचालन नहीं कर सकतीं। परंतु अहिल्याबाई ने इस धारणा को तोड़ दिया।

न्यायप्रिय शासन और सुदृढ़ अर्थव्यवस्था (1767-1795)

अहिल्याबाई एक कुशल और न्यायप्रिय शासक थीं। उन्होंने अपराधों को कम करने के लिए कठोर परंतु न्यायसंगत व्यवस्था लागू की। उनकी प्राथमिकता प्रजा की सुख-समृद्धि थी। उन्होंने किसानों को करो में रियायतें दीं और सिंचाई प्रणाली को बेहतर बनाने पर ध्यान दिया। उन्होंने विशेषज्ञों की सहायता से नहरों का निर्माण करवाया और सूखे से होने वाले नुकसान को कम किया।

किसानों के साथ ही उन्होंने व्यापारियों को भी प्रोत्साहन दिया। उन्होंने सड़कों और व्यापारिक मार्गों का निर्माण करवाया, जिससे व्यापार को गति मिली। फलस्वरूप, इंदौर रियासत की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई और राज्य का खजाना भी भरपूर हुआ।

अहिल्याबाई एक कुशल और न्यायप्रिय शासक थीं। उन्होंने अपराधों को कम करने के लिए कठोर परंतु न्यायसंगत व्यवस्था लागू की। उनकी प्राथमिकता प्रजा की सुख-समृद्धि थी। उन्होंने किसानों को करो में रियायतें दीं और सिंचाई प्रणाली को बेहतर बनाने पर ध्यान दिया। उन्होंने विशेषज्ञों की सहायता से नहरों का निर्माण करवाया और सूखे से होने वाले नुकसान को कम किया। किसानों के साथ ही उन्होंने व्यापारियों को भी प्रोत्साहन दिया। उन्होंने सड़कों और व्यापारिक मार्गों का निर्माण करवाया, जिससे व्यापार को गति मिली। फलस्वरूप, इंदौर रियासत की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई और राज्य का खजाना भी भरपूर हुआ।

शिक्षा और संस्कृति का उत्थान (1767-1795)

अहिल्याबाई शिक्षा के महत्त्व को बखूबी समझती थीं। उन्होंने शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक विद्यालयों की स्थापना करवाई। इन विद्यालयों में न सिर्फ धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा दी जाती थी, बल्कि युद्धकला, कूटनीति और प्रशासन जैसे विषयों का भी ज्ञान दिया जाता था। उन्होंने बालिका शिक्षा को भी बढ़ावा दिया, जो उस समय एक क्रांतिकारी कदम था।

कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी अहिल्याबाई का अमूल्य योगदान रहा। उन्होंने कई मंदिरों, धर्मशालाओं और सरोवरों का निर्माण करवाया। इन भवनों की स्थापत्य कला अद्भुत है और आज भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। काशी विश्वनाथ, ओंकारेश्वर और द्वारकाधीश कुछ ऐसे ही प्रसिद्ध मंदिर हैं जिनका निर्माण अहिल्याबाई के शासनकाल में हुआ। उन्हें 'मंदिर निर्माता' की उपाधि भी दी गई।

सामाजिक सुधार और धार्मिक सहिष्णुता (1767-1795)

अहिल्याबाई एक धर्मनिष्ठ महिला थीं, परंतु उनमें कट्टरता नहीं थी। उन्होंने सभी पंथों का सम्मान किया और धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण बनाया। उन्होंने तीर्थयात्रियों के लिए सुविधाएँ बढ़ाईं और अनेक तीर्थस्थानों की यात्रा कर धर्म-दर्शन किया।

सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में भी अहिल्याबाई ने सराहनीय कार्य किए। उन्होंने छुआछूत और जातिभेद जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने समाज में सभी जाति-धर्मों के लोगों के साथ समान व्यवहार करने का प्रयास किया। उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों की सहायता के लिए कई दान दिए। अकाल पड़ने पर उन्होंने जनता को राहत पहुँचाने के लिए विशेष प्रबंध किए।

एक प्रेरक कहानी (1767-1795)

एक बार अहिल्याबाई को सूचना मिली कि उनके राज्य में एक गाँव में डाकुओं का आतंक है। गाँव के लोग डरे हुए थे और डाकू उनकी संपत्ति लूट रहे थे। अहिल्याबाई ने स्वयं उस गाँव का दौरा किया। उन्होंने गाँव वालों से बातचीत की और उनकी समस्याओं को समझा।

यह जानकर कि गाँव के अधिकांश लोग गरीब किसान हैं और उनके पास रोज़गार के साधन नहीं हैं, अहिल्याबाई ने एक योजना बनाई। उन्होंने गाँव में सिंचाई प्रणाली को दुरुस्त करवाया और किसानों को बीज़ तथा कृषि उपकरण प्रदान किए। साथ ही, उन्होंने गाँव में कुछ शिल्प उद्योगों की स्थापना भी करवाई।

कुछ समय बाद गाँव की तस्वीर बदल गई। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलने लगा और शिल्पकारों को भी रोज़गार मिल गया। डाकुओं के पास लूटने के लिए कुछ नहीं बचा था, इसलिए वे उस गाँव से चले गए। गाँव वाले अहिल्याबाई के इस कार्य से अत्यंत प्रसन्न हुए। ❑

The Great Source of Inspiration : Punyashlok Devi Ahilyabai Holkar

Dr. Smita Raosaheb Deshmukh

Principal,
MV Deshmukh
Mahavidyalaya,
Amravati, Maharashtra

Ahilya Bai Holkar's contributions to her kingdom and the nation were multifaceted and profound. Her visionary leadership, administrative acumen, and dedication to public welfare left an indelible mark on Indian history, making her one of the most revered rulers of her time. Philosopher queen Ahilya Bai Holkar-a great administrator and visionary with a spiritual inclination. When we talk about women's empowerment, we often overlook figures from our own history, the brave daughters who contributed towards building the India we see today. The historical glorification of men and their deeds hides the stories of countless women who served their nation. Ahilyabai Holkar, often hailed as the great leader and Queen of Malwa, was frequently compared to historical luminaries such as Margaret I of Denmark, Elizabeth I of England, and Catherine II of Russia. In recognition of her valour and greatness, the Republic of India issued a commemorative stamp on August 25, 1996. That same year, the Indore Government instituted an annual award in her name, to honour exceptional public figures. The Indore domestic airport was renamed Ahilyabai Holkar Airport, and Indore University was rechristened as Devi Ahilya Vishwavidyalaya in her honour. Her enduring reputation as a saintly figure in Malwa and Maharashtra, transcending her role as a warrior queen, is evidenced by the timeless testimonies of her benevolence. She was also revered as a Karma Yogi and a Raja Yogi. Her devoutness, profound concern for her people, administrative acumen, and the monuments she erected across the country will be remembered with gratitude for generations to come. Her connection to nature, which seemed boundless, concluded with her, leaving an imprint on future rulers and governance. The extent to which this legacy is upheld

remains a subject for introspection.

The most visionary female rulers of India

Devi Ahilyabai Holkar, one of the most visionary female rulers of India, who emerged as a beacon of enlightened governance, cultural renaissance. A country which witnessed many queens of valour but the legacy of Devi Ahilyabai Holkar stands nonparallil for her remarkable reign of 30 years, leaving an impeccable impression and inspiration for eternity. Great administrator with spiritual inclination of Devi, her enduring impact on Indian society and embodied principles continue to resonate with us, till today.

"In latter days from Brahma came,
To rule our land, a noble dame,
Kind was her heart and
bright her fame,
Ahilya was her honoured name,"

The poet Joanna Baillie writes in 1849 in honour of one of the greatest visionary female rulers of Malwa, a great pioneer and builder of Hindu Temples, widely known for her wisdom, courage, and administrative skills. Her notable contribution, landmark decisions during her reign, the capital turned into an oasis of literary, musical, artistic and industrial pursuits and enjoyed peace, prosperity and stability. She was instrumental in spreading the message of dharma and propagating industrialization.

Ahilya Bai established an efficient and just administrative system. Her governance was marked by transparency, fairness, and an emphasis on public welfare. She appointed capable and honest officials to key positions, ensuring that her kingdom was well-managed and corruption-free.

Ahilya Bai invested heavily in building and maintaining infrastructure. She constructed roads, bridges, wells, tanks, and rest houses, which facilitated trade, improved connectivity, and enhanced the quality of life for her subjects. Her contributions in this area extended beyond her kingdom to various parts of India.

Under her rule, the Malwa region saw significant economic growth. She promoted agriculture by improving irrigation systems, supporting farmers, and encouraging the cultivation of new crops. Her policies also boosted trade and industry, leading to economic stability and prosperity.

Brief introduction to Family life

Ahilyabai was born on 31 May 1725 in the village of Chaundi, in the present-day Ahmednagar district in Maharashtra. Her father, Mankoji Rao Shinde, was the Patil of the village. Despite women's education being a far cry in the village, her father homeschooled her to read and write. While Ahilya did not come from a royal lineage, most believe her entry into history a twist of fate. It dates back to when the acclaimed Lord of the Malwa territory, Malhar Rao Holkar, spotted an eight-year-old Ahilyabai at the temple service feeding the hungry and poor, on his stop in Chaundi while travelling to Pune. Moved by the young girl's charity and strength of character, he decided to ask her hand in marriage for his son Khanderao Holkar. She was married to Khanderao Holkar in 1733 at the tender age of 8. But distress was quick to befall the young bride when her husband Khanderao was killed in the battle of Kumbher in 1754, leaving her a widow at only 29. When Ahilyabai was about to commit Sati, her father-in-law Malhar Rao refused to let it happen. He had been her strongest pillar of support at the time. But a young Ahilyabai could see her kingdom fall like a pack of cards after her father-in-law passed away in 1766, only 12 years after the death of his son Khanderao. The old ruler's death led to his grandson and Ahilyabai's only son Male Rao Holkar ascending the throne under her regency. The last straw came when the young monarch Male Rao too died, a few months into his rule, on 5 April 1767, thus creating a vacuum in the power structure of the kingdom. Ahilya Bai's rule serves as an example of inclusive policymaking. She worked to develop her state and uplift her subjects on various levels. Her legacy is not only remembered for her administrative acumen but also for paving the way for future generations of the Holkar dynasty towards effective governance that transcends gender norms. To bind her legacy only to her contribution to temple renovation would also be unjust. In assessing her impact, it is impossible to overlook her overall governance, which helped bring samajik samrasta (social harmony) in the truest sense and provided a blueprint for what Ram Rajya in today's era would look like.

Military-trained Ahilyabai protect her kingdom

Despite her peaceful nature, Ahilya Bai maintained a strong and disciplined army to protect her kingdom from external threats. Her military acumen ensured the safety and stability of her realm, allowing her to focus on

development and welfare activities.

Ahilya Bai Holkar's legacy as a just, benevolent, and capable ruler has inspired generations. Her life and achievements are celebrated in Indian history, serving as a model of good governance, compassion, and visionary leadership. One can imagine how a woman, royalty or not, would suffer after losing her husband, father-in-law and only son. But Ahilyabai stood undeterred. She did not let the grief of her loss affect the administration of the kingdom and the lives of her people. While there was indeed a section of the kingdom that objected to her assumption to the throne, her army of Holkars stood by her and supported their queen's leadership. Just a year into her rule, one saw the brave Holkar queen protect her kingdom – fighting off invaders tooth and nail from plundering Malwa. Armed with swords and weapons, she led armies into the battlefield. There she was, the queen of Malwa, slaying her enemies and invaders on battlefronts with four bows and quivers of arrows fitted to the corners of the howdah of her favourite elephant. Her confidante on military matters was Subhedar Tukojirao Holkar (also Malhar Rao's adopted son) whom she appointed the head of the military.

Proficient Queen of Malwa

Ahilya Bai was renowned for her charitable nature. She provided aid to the poor and needy, supported widow remarriage, and worked to improve the status of women in society. Her charitable works extended beyond her kingdom, benefiting people across India.

Facing the daunting task of assuming leadership in the male dominant society she exhibited a remarkable resilience and determination in betterment of Malwa region and Holkar kingdom in the 18th century which later proved to remain a paradigm of benevolent and effective governance. The Queen of Malwa, apart from being a brave queen and proficient ruler, was also an erudite politician. She observed the bigger picture when the Maratha Peshwa couldn't pin down the agenda of the British.

In her letter to the Peshwa in 1772, she had warned him, calling the British embrace a bear-hug: "Other beasts, like tigers, can be killed by might or contrivance, but to kill a bear it is very difficult. It will die only if you kill it straight in the face, or else, once caught in its powerful hold; the bear will kill its prey by tickling. Such is the way of the English. And given this, it is difficult to triumph over them."

The Holkar queen also embellished and beautified various sites including Kashi, Gaya, Somnath, Ayodhya, Mathura, Haridwar, Kanchi, Avanti, Dwarka, Badrinarayan, Rameshwar and Jagannathpuri as recorded by the Bharatiya Sanskritikosh. Her capital at Maheshwar was a melting pot of literary, musical, artistic and industrial achievements. She opened her capital's doors to stalwarts like Marathi poet Moropant, Shahir Anantaphandi and Sanskrit scholar, Khushali Ram. Her capital was known for is its distinct craftsmen, sculptors and artists who were paid handsomely for their work and kept in high regards by the Queen. She also moved on to establishing a textile industry in the city. She moved the capital to Maheshwar south of Indore on the Narmada River.

Renowned female leader

Looking back at the realms of history, lost in the passage of time, are the stories of valour and compassion of women who were fenced with barriers and traditions. Yet they fought the odds of life, and remained determined to serve our land, mother India will remind every generation, of the footprints that they have left behind. One such legend today is a brave warrior and a great leader revered as Rajmata and Devi, the Queen of Malwa, "Punyashlok, Devi Ahilyabai Holkar". Her countless accomplishments, overcoming the strong gender barriers and beliefs that existed in the 18th century making an inspiration for many generations to womankind

Ahilyabai Holkar was one of India's most renowned female leaders. She reigned for nearly three decades and reached unprecedented heights of prosperity. Maharani Ahilya Bai Holkar was bestowed upon the title 'The Philosopher Queen' by British historian John Keyes. The Queen of Malwa, apart from being a brave queen and proficient ruler, was also an erudite politician. Ahilyabai held public audiences every day to help address the grievances of her people. She was always available to anyone who needed her help. Historians write how she encouraged all within her realm and her kingdom to do their best. During her reign, the merchants produced their most elegant clothes and trade flourished to no end. No more was the farmer a mere victim of oppression but a self-sufficient

man in his own right.

"Far and wide the roads were planted with shady trees, and wells were made, and rest-houses for travellers. The poor, the homeless, the orphaned were all helped according to their needs. The Bhils, who had long been the torment of all caravans, were routed from their mountain fastnesses and persuaded to settle down as honest farmers. Hindu and Muslim alike revered the famous Queen and prayed for her long life," writes Annie Besant.

Universe operates on its own timetable and events unfold precisely as intended. The entrance of Devi onto the stage of Indian history is marked accidental by the history but as always stamped in the royal seal of her reign 'Shankar Adnyevarun' (as per the orders of the Shiva) the encounter of Malhar Rao Holkar and little Ahilya was conspired by the Almighty. Since a tender age, Devi has displayed a satvik tendency, leading to her marriage with Khandoji (son of Malharji) at a very young age due to her appreciation for simplicity and humble character. As fortune consistently favored Malharji on the various fronts of the battlefield, an unexpected tragedy struck him, causing all aspirations to momentarily halt. Khandoji's demise from a cannon-ball during the siege of Kumbher on March 24, 1754, Which left Devi engulfed in despair and sorrow, contemplating the practice of sati. However, Malhar Rao intervened, guiding her away from this path and instead, he mentored her in administrative and military affairs. Through his guidance, Devi emerged as a significant figure in Indian history, her potential unlocked, reshaping the narrative of the era. This exemplifies a remarkable instance of governance under a capable woman, marking a pivotal transition in the historical landscape. A woman ahead of her times, Ahilyabai's greatest sorrow continued to remain the irony that her daughter jumped into the funeral pyre and became a Sati upon the death of her husband, Yashwantrao Phanse.

Skilful Architect and Leader

Other than being a courageous princess and a capable ruler, the Empress of Malwa was also a learned diplomat. When Marathi Peshwa couldn't narrow down the English objective, she saw the wider issue. Throughout her 30-year reign, Indore grew from a small hamlet to a thriving metropolis. She was well-known in Malwa for erecting several fortresses and roadways and supporting festivals and donating to various Sanctuaries. Ahilyabai proved to be a great warrior. As a skilled archer, she even fought with Bhils (tribes of Rajasthan) and Gonds (tribes of central India).

Ahilya Bai was not unaware of the fact that her identity as a woman and a widow deemed her unfit for certain administrative and political tasks, given the time's social and cultural context. Devi Ahilya, who helped preserve and encourage India's spiritual integrity and displayed administrative ingenuity and political impartiality. Breaking the shackles of patriarchy, she took over the role of monarch after her husband's death. Her exceptional leadership skills were evident in the 30 years of peace and financial stability that her kingdom experienced under her reign.

Encouraging Spirituality

She promoted religious tolerance and harmony, supporting the construction of temples, mosques, and other religious structures. Her inclusive approach helped foster a sense of unity and mutual respect among her subjects. Outside of her realm, her generosity was evident in the creation of hundreds of shrines and rest areas spanning from the Great Himalayas to religious sites in the south. According to the Bharatiya Sanskritikosh, the Holkar princess also enriched and adorned many locations. Maheshwar, her capital, was a mosaic of scholastic, spiritual, creative, and economic triumphs. She welcomed luminaries such as Marathi poet Mo in her kingdom. As a ruler she led a very simple life. Ahilyabai lived on the banks of Narmada River at a pilgrimage site known as 'Maheshwar'. There were very few leaders who gave up on luxuries and followed such a simple lifestyle.

A Woman Ahead of Her Time

She initiated several social welfare programs aimed at improving the living conditions of her subjects. Her contributions to public health included the establishment of clinics, distribution of free medicines, and support for healthcare initiatives.

Ahilyabai, a lady way progressive for her time, broke several traditions for the betterment of her family. She

married her daughter Muktabai to Yashwantrao, a brave but poor man after he succeeded in defeating the dacoits. She was also military trained and was considered capable enough to run civil and military affairs. Her father-in-law wrote her a letter in 1765, illustrating her abilities. Here are the lines that it mentioned:

"…proceed to Gwalior after crossing the Chambal. You may halt there for four or five days. You should keep your big artillery and arrange for its ammunition as much as possible… The big artillery should be kept at Gwalior and you should proceed further after making proper arrangements for it's expenses for a month. On the march, you should arrange for military posts being located for protection of the road."

Devi embodied the principles of dharma and righteousness through her actions, policies and judgments. Following the demise of her father-in-law she was recognized as the successor of the Holkar family by the Peshwas. She diverted her void by taking numerous projects for the betterment of society, including the construction and renovation of temples (which were subjected to cruelty by the Mughals), of Ghats, wells, educational and health institutions.

On December 11, 1767 she was duly authorized as the Queen of Indore but the charities of Devi were in her own territory as well as throughout Bharat-Khand are too well known to need any special remarks. Wherever there stands temple, ghats and other charitable institutions or buildings un-named and un registered, the thought used trace Devi's name.

Enrich cultural Heritage

Ahilya Bai was a devout and religious woman who supported the construction and renovation of numerous temples and other religious structures across India. Notable examples include the Kashi Vishwanath Temple in Varanasi and the Somnath Temple in Gujarat. Her support for religious activities helped preserve cultural heritage and promote spiritual growth.

Her patronage of the arts, literature, and architecture enriched the cultural landscape of central India and left an indelible mark on the heritage of Malwa. Recognising the potential of commerce, she implemented policies fostering entrepreneurship and innovation, transforming Maheshwar into a thriving centre of trade and industry. Infrastructure development under her reign facilitated trade routes, laying the groundwork for economic prosperity. he spearheaded the establishment of a textile industry within the city, introducing the tradition of Maheshwari sarees. This thriving handloom industry has undergone a remarkable transformation, with women taking centre stage at the loom while men contribute to ancillary and external aspects of the craft. Devi's unwavering support for merchants and traders served as a catalyst for entrepreneurship and innovation, paving the way for Maheshwar's evolution into bustling commercial centre.

Social work for women:Progressive in female Education She established schools and supported educational institutions, fostering a culture of learning and intellectual growth. Her patronage of scholars, poets, and artists helped preserve and promote knowledge, literature, and arts.

She was remarkably progressive for her era. Despite prevailing the norms which used to forbid women from education, she was well educated and she emerged as inspiration in the 18th century for advocating the introduction of female education in the society. Her reign was not merely theoretical but practical, aimed at enhancing the lives of her subjects. She was swiftly and impartially available for her people despite of her busy schedule to ensure that justice is dispensed.

Despite facing encirclement by invaders presuming the kingdom's vulnerability, Ahilyabai displayed remarkable courage in defending her homeland. Leading her soldiers into battle, she repelled enemy forces, earning the adoration of her people. Stories of her care for her people abound. She helped widows to retain their husbands' wealth. She made sure that a widow was allowed to adopt a son. In one instance, when her minister refused to allow an adoption unless he was suitably bribed, she sponsored the child herself and gave him clothes and jewels as part of the ritual.

Indian rulers patronized their works to the sacred spots of their own limited territory but were more or less provincialized: Devi 'Nationalized' them. The vision of the nation from her view was broadened and even though India was geographically and politically divided, Devi achieved unity without resorting to conquest or coercion. Devi bestowed on an India that was partitioned

politically, spiritually and geographically for over 10 centuries (830 A.D. onwards). Their charitable efforts primarily focused on two main aspects:

1)Restoring and revitalizing sacred sites and pilgrimage centers.

2) Supporting and promoting Indian architectural revival and development,

Devi tries to plant her charities in and about the newly conquered provinces. Her efforts at Gaya, Banaras, Ayodhya, Pandharpur, and Jagannath puri speaks about her nature of "re-construction". Even the buildings speak about the out- posts of the "New spirit" that was awaken from the companionship of Maratha movement. The new temples erected were surrounded and served by learned shastri who were invited from all parts of India, and were supported by Devi; and they, in return, used to work as missionaries of the Hindu religion in all its aspects.

Significant Amicable relations

Her steps brought about amicable relations between distant and divided Hindu rulers; and united their hearts, though not their territories; The Nizam and Tippu revered her, and respected her word, the whole of India lived in peace and love under the magic of her name. Her territorial rule was, indeed, limited; but her spiritual rule on people's heart was unlimited.

Thus, we see her humane to all human beings, with no distinction of caste, colour or creed. the birds of the air, the beasts of forests, and the fish of the waters had their own shares of her humanity. Devi through her charities, became in tune with the infinite. The charities were, then, a means, and not an end in themselves.

Faith in Religion

Ahilya Bai is believed to be the great ruler that she was due to her undying faith in Hinduism. She regularly attended Purana recitals and yagnas, believing that the spiritually charged environment would help her stand firm on her principles. It was her immersion in the philosophy of Hinduism that eventually led to a monumental change in the architectural expression of the faith. Ahilya Bai resurrected the jyotirlingas across the country as a tribute to Lord Shiva. Renovations in Somnath, Varanasi, Trambak, Gaya, Pushkar, Vrindavan, Nathdwara, Haridwar, Badrinath, Kedarnath and many other sacred sites were undertaken during her reign. To defend against attacks and iconoclasm, she came up with the idea of installing the idols in secret shrines under the temples, providing an additional layer of security. Ahilya Bai's tireless attempts to resurrect these temples were, on the one hand, an act of defiance against Mughal autocracy and, on the other, bound her subjects together with the thread of civilisational ethos, irrespective of their social-religious identity.

If true Ram Rajya was attained by any ruler, it was under Ahilya Bai's graceful reign where farmers flourished, faiths were restored, and inclusivity found its rightful place. Her efforts in mainstreaming the Bhil and Gond castes are less talked about but remain an important achievement. She commanded respect not just from her contemporaries but from later historians and intellectuals too, such as Jadunath Sarkar, Annie Besant and John Keay. It is a travesty that Ahilya Bai Holkar is not nearly as celebrated nationally as she is regionally. Her localisation reveals how the rest of the nation conveniently forgets a woman of her stature due to an inbuilt gender bias. Ahilyabai passed away in 1795 after serving as a ruler for 30 years. This period of time was legendary for Indore where the government was functional and the city had prospered. She was considered as a saint by many people for her work.

Conclusion

Ahilya Bai was not unaware of the fact that her identity as a woman — and a widow — deemed her unfit for certain administrative and political tasks, given the time's social and cultural context. Devi Ahilya, who helped preserve and encourage India's spiritual integrity and displayed administrative ingenuity and political impartiality. Breaking the shackles of patriarchy, she took over the role of monarch after her husband's death. Her exceptional leadership skills were evident in the 30 years of peace and financial stability that her kingdom experienced under her reign. The course of life, marked by prayer, abstinence, a nd labour knew little variation. Nature, however stronger than nurture, the life span was slowly but surely approaching its culmination. A life followed with pain and obstructions in way of her personal happiness, she brought life and joy in lives of countless people. Ahilya Bai Holkar's contributions to her kingdom, which had a far-reaching impact on the nation as a whole, are noteworthy for their depth and lasting influence. ❑

Educational and Societal Contributions of Devi Ahilyabai and Their Relation to India's National Education Policy

Dr. Anupam Jash

Professor of Philosophy, Bankura Christian College, West Bengal

Revisiting the past reveals a plethora of great warriors and leaders dedicated to protecting India's independence, and among them, the mighty Marathas stand out, particularly in Central India. One prominent figure among women warriors is Rani Ahilyabai Holkar of the Holkar clan, who ruled the princely state of Indore.

Early Life

Born on May 31, 1725, in the village of Chaundi, Ahmednagar, Maharashtra, Ahilyabai's father, Mankoji Shinde, was the village Patil, and her mother, Sushilabai Shinde, was known for her piety. Despite societal norms that restricted women from formal education, Ahilyabai's father taught her to read and write. Although not of royal lineage, her life changed when Malhar Rao Holkar, a commander in the Maratha Peshwa's service, saw her charitable deeds and arranged her marriage to his son, Khande Rao Holkar.

Ascension to Power

Following the deaths of her husband and father-in-law, Ahilyabai was prepared to lead. Despite opposition, she gained support from many in the Holkar army and was granted permission to rule by the Peshwa. On December 11, 1767, she ascended the throne and became the ruler of Indore. Rejecting the purdah system, she remained accessible to her people, addressing their grievances and ruling with wisdom and bravery.

Military Prowess and Administration

Ahilyabai's reign was marked by her defense of her kingdom against invaders, utilizing her skills as a versatile fighter and archer. She appointed Tukoji Rao Holkar as her commander-in-chief, who remained loyal and efficient throughout her reign. Her leadership ensured a stable and peaceful Malwa region, transforming Indore from a small village into a prosperous city and making Maheshwar the capital of the Holkar state.

Contributions and Legacy

A devout follower of Lord Shiva, Ahilyabai constructed numerous temples, forts, and public works across India. Her charitable efforts included building wells, tanks, ghats, and rest houses from the Himalayas to southern pilgrimage centres. She also established a textile industry in Maheshwar, which continues to thrive today, thanks to the efforts of the Rewa Society.

Ahilyabai's policies aimed at unifying the country, and she sent Gangajal to 34 shrines annually. She held daily public audiences, encouraging her people to excel in their pursuits. Her reign saw flourishing trade, self-sufficient farmers, and improved infrastructure, making her a ruler ahead of her time.

Cultural and Architectural Impact

Maheshwar Fort, constructed under her patronage, remains a prime attraction with its mix of

Maratha, Mughal, and French architectural styles. The fort houses the Rajwada, a testament to her simple yet impactful life, and stands as a cultural hub that fostered literary, musical, and artistic endeavours.

Recognition and Tribute

Ahilyabai passed away at the age of 70, but her legacy endures. Her rule is remembered as a period of prosperity and good governance, earning her respect during her lifetime and sainthood after her death. Even the Nizam of Hyderabad praised her unparalleled leadership. In her honour, Indore's airport and university bear her name, and an annual award was instituted in 1996 to recognize outstanding public figures.

Legacy and Contribution of Devi Ahilyabai Holkar

The reign of Ahilyabai Holkar of Indore in central India, lasting for thirty years, is legendary for the perfect order, good governance, and prosperity it brought to her people. Her remarkable abilities as a ruler and organizer earned her immense respect during her lifetime, and she was considered a saint by her grateful subjects after her death.

Jawaharlal Nehru on Ahilyabai Holkar

Jawaharlal Nehru, in his book "The Discovery of India," wrote:"The reign of Ahilyabai, of Indore in central India, lasted for thirty years. This has become almost legendary as a period during which perfect order and good government prevailed and the people prospered. She was a very able ruler and organizer, highly respected during her lifetime, and considered as a saint by a grateful people after her death."

Nehru's portrayal highlights her exceptional governance and enduring legacy. He recounts her thirty-year reign as a golden era marked by "perfect order and good government," during which her subjects flourished under her stewardship.Nehru emphasizes Ahilyabai's prowess as a ruler and organizer, acknowledging the respect she commanded throughout her lifetime. Her administration was characterized by stability and prosperity, earning her a revered status. Nehru also notes that Ahilyabai was venerated as a saint by her people, reflecting the deep admiration and gratitude they felt for her benevolent rule.Nehru's description of Ahilyabai Holkar not only underscores her remarkable leadership but also cements her place in history as an exemplary monarch whose impact was felt long after her reign.

Joanna Baillie's Poem

The English poet Joanna Baillie paid tribute to Ahilyabai in 1849:

"For thirty years her
reign of peace,
The land in blessing
did increase;
And she was blessed
by every tongue,
By stern and gentle,
old and young.
Yea, even the children
at their mother's feet,
Are taught such homely
rhyming to repeat.
In latter days from
Brahma came,
To rule our land,
a noble Dame,
Kind was her heart
and bright her fame,
And Ahilya was her
honored name."

Sir John Malcolm's Admiration

British official Sir John Malcolm, who documented her legacy in the 1820s, was deeply impressed by her:"Ahilyabai's extraordinary ability won her the regard of her subjects and of the other Maratha confederates, including Nana Phadnavis. With the natives of Malwa ... her name is sainted and she has styled an avatar or Incarnation of the Divinity. In the soberest view that can be taken of her character, she certainly appears, within her limited sphere, to have been one of the purest and most exemplary rulers that ever existed."

Annie Besant's Observations

Annie Besant, in her writings, highlighted Ahilyabai's fair and prosperous rule :

"This great ruler in Indore encouraged all within her realm to do their best, Merchants produced their finest clothes, trade flourished, the farmers were at peace and oppression ceased, for each case that came to the queen's notice was dealt with severely. She loved to see her people prosper, and to watch the fine cities grow, and to watch that her subjects were not afraid to display their wealth, lest the ruler should snatch it from them. Far and wide the roads were planted with shady trees, and wells were made, and rest-houses for travelers. The poor, the homeless, the orphaned were all helped according to their needs. The Bhils who had long been the torment of all caravans were routed from their mountain fastnesses and persuaded to settle down as honest farmers. Hindu and Musalman alike revered the famous Queen and prayed for her long life. Her last great sorrow was when her daughter became a Sati upon the death of Yashwantrao Phanse. Ahalya Bai was seventy years old when her long and splendid life closed. Indore long mourned its noble Queen, happy had been her

reign, and her memory is cherished with deep reverence unto this day".

Annie Besant's Analysis of Devi Ahilyabai Holkar

Annie Besant's portrayal of Devi Ahilyabai Holkar, the revered queen of Indore, paints a vivid picture of her remarkable leadership and lasting impact. Besant's analysis highlights several key aspects of Ahilyabai's rule :

1. Encouragement and Prosperity : Ahilyabai's reign is characterized by her ability to inspire and encourage those within her domain. Merchants were motivated to produce their finest goods, trade flourished, and agriculture thrived under her rule. This environment of encouragement and prosperity was a hallmark of her governance.

2. Justice and Fairness : The queen's commitment to justice is evident from her stringent handling of cases that came to her attention. She maintained law and order by dealing severely with offenders, thereby ensuring that oppression ceased and justice prevailed.

3. Development and Welfare : Ahilyabai's vision extended to the development of infrastructure and welfare of her people. She facilitated the creation of roads lined with shady trees, built wells, and established rest-houses for travelers. Her concern for the poor, homeless, and orphaned was evident in the assistance provided according to their needs.

4. Social Harmony : Her rule fostered social harmony, as seen in her efforts to integrate the Bhils, previously a threat to caravans, into settled farming communities. The queen's efforts to bring different communities together under her benevolent rule earned her the respect and reverence of both Hindus and Muslims.

5. Personal Sorrow and Legacy : Ahilyabai's personal life was marked by profound sorrow, notably with the tragic event of her daughter becoming a Sati upon the death of Yashwantrao Phanse. Despite such personal trials, Ahilyabai's reign was largely marked by happiness and prosperity. Her passing at the age of seventy brought deep mourning to Indore, and her legacy is cherished with great reverence.

Annie Besant's analysis underscores Devi Ahilyabai Holkar's exceptional qualities as a ruler-her dedication to justice, development, social welfare, and harmony. Ahilyabai's reign left a lasting positive impact on Indore and its people, securing her place in history as a beloved and revered queen. Her leadership is remembered with admiration, reflecting the profound influence she had on her realm and beyond.

Devi Ahilyabai Holkar's educational and societal contributions have left an indelible mark on Indian history, serving as a testament to the transformative power of visionary leadership. Her efforts to promote education, inclusivity, and social welfare continue to inspire and provide valuable lessons for contemporary educational reforms. Her commitment to making education accessible to all, especially women, was groundbreaking in an era when such opportunities were limited. By establishing schools, supporting scholars, and fostering an environment that valued learning and cultural pursuits, she laid the groundwork for a more educated and equitable society.

Judunath Sarkar's observations

Historian JudunathSarkar says, "From the original papers and letters, it becomes clear that she was the first-class politician, and that was why she readily extended her support to Mahadji Shinde. I have no hesitation in saying that without the support of Ahilyabai, Mahadji would never have gained so much importance in the politics of northern India."

Historian Judunath Sarkar's assertion that Ahilyabai Holkar was pivotal in shaping the political landscape of northern India highlights the profound influence she wielded. Sarkar's reflections are based on original papers and letters, which shed light on her exceptional political acumen and strategic alliances.

Ahilyabai Holkar, the revered Maratha queen of Indore, was more than a ruler; she was a formidable stateswoman. Her support for Mahadji Shinde, a significant figure in the politics of northern India, underscores her deep understanding of political dynamics. Sarkar's observation that Mahadji Shinde's rise to prominence was inextricably linked to Ahilyabai's endorsement reveals the depth of her political insight.

Without Ahilyabai's backing, Mahadji Shinde might not have achieved the same stature. Her support was not merely a political maneuver but a testament to her

vision and strategic prowess. Ahilyabai's endorsement of Shinde was instrumental in his ascendancy, reflecting her ability to influence and shape the political terrain of her time.

Devi Ahilyabai Holkar : A Visionary Leader of education

Devi Ahilyabai Holkar's educational contributions were pioneering and transformative for her time. As the ruler of the Malwa kingdom, she established numerous schools and learning centers, ensuring that education was accessible to all segments of society, irrespective of their socio-economic background. Her emphasis on female education was particularly revolutionary, as she advocated for the empowerment of women through learning, recognizing their potential to contribute meaningfully to society. Ahilyabai's patronage of scholars, poets, and artists fostered an environment of intellectual and cultural growth, making her court a hub of knowledge and creativity. Her visionary efforts in promoting education laid a robust foundation for a more inclusive, educated, and progressive society, leaving an enduring legacy that continues to inspire educational reforms in India today.

Promotion of Education

Ahilyabai Holkar's reign was marked by her unwavering commitment to education. She established numerous schools and learning centres across her kingdom, ensuring that education was accessible to all, regardless of socio-economic background. Her efforts laid the foundation for a more inclusive and equitable society, empowering individuals to improve their lives through education.

Advocacy for Female Education

In an era when female education was largely neglected, Ahilyabai took significant steps to promote the education of girls. She believed that educated women could contribute immensely to society and play a crucial role in its development. Her advocacy for female education was revolutionary and laid the groundwork for the empowerment of women in her kingdom.

Patronage of Scholars and Intellectual Pursuits

Ahilyabai was a patron of scholars, poets, and artists. She invited learned individuals to her court, providing them with the resources and support needed to pursue their scholarly endeavours. Her patronage created an environment where intellectual and cultural pursuits were valued and encouraged, leading to the flourishing of arts, literature, and sciences in her kingdom.

Societal Contributions of Devi Ahilyabai Infrastructure Development

Ahilyabai's contributions extended beyond education to infrastructure development. She built numerous temples, dharamshalas (rest houses), wells, and ghats (riverfront steps), improving the quality of life for her subjects. These projects not only facilitated religious and cultural activities but also provided essential services and amenities to the people.

Welfare and Social Justice

Ahilyabai was deeply committed to the welfare of her people. She provided financial assistance to the poor, homeless, and orphaned, ensuring that their basic needs were met. Her administration was characterized by a strong sense of justice, and she took steps to eliminate corruption and oppression. Ahilyabai's focus on social justice and welfare created a more equitable and just society.

Agricultural and Economic Reforms

Under Ahilyabai's rule, agriculture and trade flourished. She implemented various agricultural reforms, including the construction of canals and irrigation systems, to improve crop yields and support farmers. Her policies encouraged trade and commerce, contributing to the economic prosperity of her kingdom.

National Education Policy 2020: A Modern Vision for Education

The National Education Policy 2020 represents a comprehensive framework aimed at transforming and modernizing India's education system. It emphasizes inclusivity, creativity, and critical thinking, moving away from rote learning. Key aspects of the policy include:

Holistic and Multidisciplinary Education

One of the central tenets of the NEP 2020 is the promotion of holistic and multidisciplinary education. The policy advocates for the integration of arts, sciences, and vocational subjects, enabling students to develop a well-rounded understanding and skillset. This approach aligns with Ahilyabai's vision of fostering intellectual and cultural pursuits, creating well-rounded individuals equipped with diverse skills.

Early Childhood Care and Education (ECCE)

The policy emphasizes the importance of early childhood education, aiming to provide universal access to quality ECCE. It seeks to ensure that all children between the ages of 3 to 6 receive foundational education, preparing

them for formal schooling. Ahilyabai's efforts to establish schools and promote literacy from a young age resonate with this objective.

Flexible Curriculum and Reduced Exam Stress

The NEP 2020 introduces a flexible curriculum structure, allowing students to choose subjects based on their interests and career aspirations. It also aims to reduce the emphasis on high-stakes examinations, promoting a more continuous and comprehensive evaluation system. This student-centric approach echoes Ahilyabai's inclusive educational initiatives.

Emphasis on Foundational Literacy and Numeracy

The NEP 2020policy prioritizes achieving foundational literacy and numeracy for all students by Grade 3, implementing targeted programs and interventions to ensure that all children develop essential reading, writing, and arithmetic skills. Ahilyabai's focus on providing free education to all children laid the groundwork for such initiatives.

Teacher Training and Professional Development

Recognizing the critical role of teachers, the NEP 2020 emphasizes the need for continuous professional development and training. It proposes creating robust systems for teacher education, mentoring, and support to enhance teaching quality. Ahilyabai's support for scholars and educators reflects a similar understanding of the importance of nurturing educational talent.

Inclusivity and Equity

The policy underscores the importance of inclusivity and equity in education, aiming to bridge the gap between different socio-economic groups and ensure that all children have access to quality education. Ahilyabai's initiatives to provide free education and scholarships to deserving students mirror this commitment to inclusivity and equity.

Relevance of Ahilyabai's Contributions to NEP 2020

Inclusivity and Accessibility

Ahilyabai's emphasis on making education accessible to all resonates with the NEP 2020's focus on inclusivity and equity. Her efforts to provide free education and financial aid to students from diverse backgrounds align with the policy's aim to bridge the educational divide and ensure that every child has the opportunity to learn and succeed.

Empowerment through Education

Ahilyabai's belief in the transformative power of education for women is reflected in the NEP 2020's emphasis on gender equality and empowerment. By promoting female education and encouraging girls to pursue their studies, Ahilyabai laid the foundation for a more inclusive and progressive society. The NEP 2020 continues this legacy by prioritizing the education and empowerment of women and girls.

Holistic Development

Ahilyabai's support for scholars and educators, as well as her patronage of arts and culture, align with the NEP 2020's vision of holistic and multidisciplinary education. Her efforts to create an environment where intellectual and cultural pursuits thrived underscore the importance of fostering creativity, critical thinking, and a well-rounded education.

Conclusion

Devi Ahilyabai Holkar's educational and societal contributions have left an indelible mark on Indian history, serving as a testament to the transformative power of visionary leadership. Her efforts to promote education, inclusivity, and social welfare continue to inspire and provide valuable lessons for contemporary educational reforms. Her commitment to making education accessible to all, especially women, was groundbreaking in an era when such opportunities were limited. By establishing schools, supporting scholars, and fostering an environment that valued learning and cultural pursuits, she laid the groundwork for a more educated and equitable society. Beyond education, her infrastructural development, agricultural reforms, and focus on social welfare demonstrated her holistic approach to governance, ensuring the well-being of her subjects. Ahilyabai's legacy transcends her time, resonating with contemporary efforts to create an inclusive and empowered society. Her life and work exemplify the enduring impact of visionary leadership on education and societal development, offering timeless lessons for future generations.The National Education Policy 2020, with its focus on inclusivity, holistic development, and empowerment, resonates with Ahilyabai's visionary approach, highlighting the enduring relevance of her contributions. As India moves forward with the implementation of the NEP 2020, the legacy of Devi Ahilyabai Holkar serves as a guiding light, reminding us of the enduring power of education to transform lives and societies. ❑

Ahilyabai Holkar : Her Early Life and Struggle

Dr. Anjali K. Patil

Assistant Professor of English, Dadasaheb Devidas Namdeo Bhole College, Bhusawal

Ahilyabai Holkar is a name synonymous with enlightened rule and benevolent leadership in Indian history. As the queen of the Malwa kingdom, she is celebrated for her wisdom, administrative acumen, and deep commitment to the welfare of her people. Her early life and the struggles she overcame to ascend to power form a compelling narrative of resilience and determination. This paper explores Ahilyabai Holkar's early life, the challenges she faced, and her eventual rise to prominence, setting the stage for her remarkable reign.

Early Life

Ahilyabai also known as the "Warrior Queen" and popularly known as Rajmata Ahilyadevi Holkar was born on May 31, 1725, in the village of Chondi in present-day Maharashtra. Her father, Mankoji Shinde who belonged to a Dhangar community was a village headman, a position that offered some status but limited power. From a young age, Ahilyabai exhibited qualities that set her apart. She was intelligent, and compassionate, and showed a keen interest in learning, traits not commonly encouraged in women of her time. Her education was unconventional; unlike most girls of her era, she was taught to read and write, which later proved crucial in her administration. Ahilyabai's life took a significant turn when she caught the attention of Malhar Rao Holkar, the noble Subhedar of the Malwa region under the Maratha Empire. Malhar Rao was impressed by Ahilyabai's demeanor and intelligence and decided to marry her to his son, Khanderao Holkar. This union brought Ahilyabai into the Holkar family, marking the beginning of her journey towards becoming one of the most respected rulers in Indian history.

Marriage and Early Struggles

Married at a young age, Ahilyabai faced the challenges of adapting to a new environment and fulfilling her duties as a wife and daughter-in-law. The Holkar family was a prominent one, and the responsibilities were immense. However, Ahilyabai's innate qualities helped her navigate these early challenges with grace. She quickly gained the respect of her

Ahilyabai Holkar's early life and struggles are a testament to her extraordinary resilience and leadership. From a village girl to a revered queen, her journey is one of overcoming personal and political challenges with grace and determination. Her reign was marked by progressive governance, economic development, and cultural patronage, leaving a lasting legacy. Ahilyabai's story is a powerful example of how individual strength and vision can transform societies, making her one of the most remarkable figures in Indian history.Thus, "Ahilyabai Holkar was not only a great ruler but also an exemplary queen. Her rule is often remembered as the golden period in the history of Malwa"

new family and the people around her due to her intelligence, compassion, and dedication. Tragedy struck when Khanderao Holkar was killed during the siege of Kumher in 1754. This loss was a severe blow to Ahilyabai, who was left widowed at a young age with the responsibility of raising their son, Male Rao. The period following Khanderao's death was one of deep personal grief for Ahilyabai, but it was also a time that tested her resilience and strength. Despite the societal expectations and pressures, she chose to immerse herself in the welfare of the Holkar dynasty and the administration of the state.

Ascendancy to Power

The death of Malhar Rao Holkar in 1766 was another pivotal moment in Ahilyabai's life. With her son Male Rao succeeding his grandfather, Ahilyabai found herself in a position of considerable influence. However, Male Rao's reign was short-lived due to his untimely death, which once again plunged Ahilyabai into personal and political turmoil. Amidst this crisis, Ahilyabai was urged by the people and the Holkar court to take the reins of the administration. Her initial reluctance was overcome by her sense of duty and the pressing need for a stable leadership to guide the state. Thus, Ahilyabai Holkar ascended to power, marking the beginning of a reign that would be characterized by progressive governance, economic development, and cultural patronage. "Her reign was marked by a combination of administrative efficiency, prosperity, and cultural development. She was revered as a Goddess by her subjects, who benefitted immensely from her just and compassionate rule" (Sharma, 89). Her assumption of power was a significant departure from the norm, as women rulers were rare and often faced resistance. Ahilyabai, however, was an exception, owing to her capability and the respect she commanded.

Administrative Reforms and Governance

One of Ahilyabai Holkar's most notable contributions was her administrative reforms. She restructured the revenue system, ensuring fair and efficient tax collection. Her governance model was inclusive, focusing on the welfare of her subjects. She initiated several public works projects, including the construction of roads, wells, and fortifications, which significantly improved the infrastructure of her kingdom. Ahilyabai's approach to governance was holistic,

integrating economic, social, and cultural aspects. She was a patron of arts and culture, and her reign saw the construction of numerous temples and public buildings. Her policies were progressive, particularly concerning women's rights and education, reflecting her vision for a just and prosperous society. During her reign, she promoted gender equality. "Ahilyabai's administration was known for its inclusiveness and fairness. She encouraged the participation of women in various social and administrative roles and was ahead of her time in promoting gender equality" (Desai, 67)

Military Leadership and Diplomatic Acumen

Ahilyabai's reign was not just marked by administrative reforms but also by her military leadership and diplomatic skills. She personally led her troops in several battles, defending her kingdom from external threats. Her military acumen was complemented by her diplomatic strategies, which ensured the stability and expansion of her kingdom. Ahilyabai maintained cordial relations with neighboring states and sought to resolve conflicts through dialogue and negotiation whenever possible. Her ability to balance military strength with diplomatic finesse was instrumental in maintaining the stability of the Malwa kingdom. Ahilyabai's reign was a period of relative peace and prosperity, a testament to her leadership and vision.

Challenges and Struggles

Despite her many successes, Ahilyabai's reign was not without challenges. She faced opposition from within her court and from external forces. The patriarchal society of her time often questioned her authority and decisions. However, Ahilyabai's resolve and the respect she commanded from her people enabled her to overcome these obstacles. Her leadership style, characterized by empathy and firmness, helped her navigate these challenges effectively. One of the most significant struggles of her reign was the constant threat from rival factions within the Maratha Empire and from external invaders. Ahilyabai's strategic acumen and the loyalty of her subjects were crucial in defending her kingdom. She also had to contend with the economic challenges posed by frequent wars and natural calamities. Through judicious financial management and pragmatic policies, Ahilyabai ensured the economic stability of her state.

Legacy

Ahilyabai Holkar's legacy is one of enlightened leadership and benevolent rule. Her contributions to the welfare of her subjects, her administrative reforms, and her patronage of arts and culture have left an indelible mark on Indian history. She is remembered as a ruler who prioritized the welfare of her people over personal gain and as a leader who defied the conventions of her time to establish a just and prosperous society. Her life and reign continue to inspire generations, serving as a testament to the power of resilience, wisdom, and compassion in leadership. Ahilyabai Holkar's story is a reminder that true leadership transcends gender and societal norms, and that the qualities of empathy, intelligence, and dedication are timeless and universal.

Conclusion

Ahilyabai Holkar's early life and struggles are a testament to her extraordinary resilience and leadership. From a village girl to a revered queen, her journey is one of overcoming personal and political challenges with grace and determination. Her reign was marked by progressive governance, economic development, and cultural patronage, leaving a lasting legacy. Ahilyabai's story is a powerful example of how individual strength and vision can transform societies, making her one of the most remarkable figures in Indian history.Thus, "Ahilyabai Holkar was not only a great ruler but also an exemplary queen. Her rule is often remembered as the golden period in the history of Malwa". ❑

Ahilyabai Holkar :
Malwa's Legendary and Kind-Hearted Queen

Ankita Satapathy

Assistant Professor
Dept. of Linguistics
Central University of Karnataka
Kadaganchi, Kalaburagi

Ahilyabai Holkar, also known as Ahilya Bai, inhabits a significant place in Indian history. Born on May 31, 1725, in the Marathi Hindu community of Chaundi village (now part of Ahmednagar district, Maharashtra), she emerged as the renowned Queen of Indore within the Maratha Confederation. Her administrative insight, philanthropic endeavours, and unwavering commitment to her people have left an unforgettable mark.

From Childhood to Marriage : The Formative Years

Ahilyabai came from a modest background. Her father, Mankoji Shinde, was the village headman. Despite customary traditions that limited women's education, Ahilyabai's father made sure she got an education which was an unusual decision that would later be acute to her leadership. Malhar Rao Holkar, a well-known Maratha aristocrat, was impressed by her virtue and intelligence. Malhar Rao was impressed by her qualities and arranged her marriage to his son, Khanderao Holkar, in 1733. However, Ahilyabai experienced tragedy early in her life. Her spouse, Khanderao, was killed in the Kumbher War of 1754. The deaths of her father-in- law, Malhar Rao, in 1766, and her son, Male Rao, added to her agony. Ahilyabai became queen in the absence of a male heir. In defiance of prevailing patriarchal conventions, her devoted countrymen and officials supported her as she ascended to the throne. Ahilyabai Holkar's enduring legacy is proof of her resilience, compassion, and leadership. Her rule has served as a source of inspiration and hope for future generations and will continue to do so.

Pioneering Change : Administrative Reforms and Acts of Humanity

Ahilyabai Holkar’s rule was marked by administrative competence and progressive governance. She implemented

reforms that improved the welfare of her subjects, addressing their complaints personally. Her tax system restructuring washed out the burden on farmers and ensured judicious use of state funds for public welfare. Under her guidance, Malwa's agricultural productivity increased significantly, contributing to overall prosperity. Additionally, Ahilyabai's humanitarian efforts, including charitable institutions and disaster relief, laid the foundation for a more equitable society.

Ahilyabai Holkar, the ruler of enlightenment, was a humanitarian who built numerous temples and ghats across India. She restored the Kashi Vishwanath Temple and Vishnupad temple, preserving sacred heritage. She also constructed wells and tanks for community well- being. She established rest houses (dharamshalas) for travelers and pilgrims, and emphasized education for her subjects' well-being. Her legacy is synonymous with charitable institutions in India, and her compassion, administrative prowess, and commitment to religious tolerance continue to inspire generations.

Art, Culture, and Virtue : The Spiritual Patron

Ahilyabai Holkar, the revered ruler of the Maratha Malwa kingdom, left an indelible legacy as a patron of art, culture, and religion. Her multifaceted contributions spanned religious structures, public infrastructure, and personal virtues. Let's dive deeper into her remarkable endeavors:

Ahilyabai's devotion to Hinduism led her to commission the construction and restoration of numerous temples. Among these, the Kashi Vishwanath Temple in Varanasi stands out. This sacred shrine, dedicated to Lord Shiva, had suffered damage over the centuries. Ahilyabai's unwavering commitment prompted her to restore it in 1780, ensuring its preservation for future generations. Similarly, she played a pivotal role in rebuilding the Somnath Temple in Gujarat, emphasizing the revival of India's rich cultural heritage. Beyond mere construction, Ahilyabai actively supported local artisans, sculptors, and craftsmen. Her patronage encouraged the flourishing of traditional art forms, including intricate stone carving, temple architecture, and exquisite sculptures. Ahilyabai recognized the importance of connectivity and trade. She invested in road networks, linking towns and villages within her kingdom. These well-maintained roads facilitated commerce, travel, and communication. Along the banks of rivers, Ahilyabai sponsored the construction of ghats. These riverfront steps served as bathing and worship areas, fostering community gatherings and religious rituals. The Ahilya Ghat in Varanasi remains a testament to her benevolence. Water scarcity was a pressing issue in agrarian societies. Ahilyabai's initiatives included the creation of wells and tanks, ensuring a reliable water supply for both agricultural needs and daily life.

Ahilyabai's devoutness was evident in her daily life. She began her mornings with prayers and meditation, seeking divine guidance. Her unwavering faith shaped her decisions as a ruler. Despite her exalted position, Ahilyabai maintained simplicity. She dressed modestly and lived frugally, emphasizing humility

and accessibility. Ahilyabai's commitment to dharma guided her governance. She upheld justice, fairness, and ethical conduct. Her administration was characterized by transparency and concern for her subjects' welfare.

Ahilyabai Holkar's legacy extends beyond architectural marvels; it embodies a harmonious blend of spirituality, cultural preservation, and compassionate leadership. Her impact reverberates through the annals of Indian history, inspiring generations to uphold values that transcend time and boundaries.

The Legacy of Resilience : Leadership Against All Odds

Ahilyabai Holkar's leadership style was characterized by humility, wisdom, and an unwavering commitment to her duties. She led by example, often participating in state affairs personally and maintaining a simple lifestyle despite her royal status. Her ability to balance administrative responsibilities with her humanitarian and cultural endeavors earned her immense respect and admiration.

Her reign set a precedent for future rulers, demonstrating that effective governance could be achieved through compassion, justice, and a focus on public welfare. Ahilyabai's legacy is not only reflected in the monuments she built and the reforms she implemented but also in the lasting impact she had on the hearts and minds of her people.

Ahilyabai Holkar's rule was marked by administrative competence and progressive governance. She implemented reforms that improved the welfare of her subjects, addressing their complaints personally. Her tax system restructuring washed out the burden on farmers and ensured judicious use of state funds for public welfare. Under her guidance, Malwa's agricultural productivity increased significantly, contributing to overall prosperity. Additionally, Ahilyabai's humanitarian efforts, including charitable institutions and disaster relief, laid the foundation for a more equitable society.

Ahilyabai's reign was not without challenges. She faced opposition from within her court and external threats from rival kingdoms and factions. However, her diplomatic acumen and strategic alliances helped her navigate these challenges successfully. Her ability to maintain stability and prosperity in Malwa during turbulent times is a testament to her resilience and leadership skills.

Closing Remarks: The End Note

Ahilyabai Holkar's life and reign epitomize the ideals of benevolent leadership, progressive governance, and humanitarianism. Her ability to rise above personal tragedies and societal norms to become one of India's most revered rulers is a remarkable story of strength and resilience. Ahilyabai's legacy continues to inspire and serve as a beacon of virtue, wisdom, and compassion.

In an era dominated by patriarchal norms, Ahilyabai Holkar's reign stands out as a testament to the potential of enlightened and compassionate leadership. Her contributions to administration, social welfare, cultural preservation, and religious devotion have left an indelible mark on Indian history. As we reflect on her life, we are reminded of the timeless values she embodied values that remain relevant and inspiring in our contemporary world. ❑

Life Sketch of Ahilyabai Holkar

Gulshan Raina

Teacher,
Department of School Education,
Jammu and Kashmir

Maharani Ahilyabai Holkar was the Holkar Queen of the Maratha Malwa kingdom, India. Rajmata Ahilyabai was born in the village of Chondi in Jamkhed, Ahilya agar (eartswhile Ahmednagar), Maharashtra. She moved the capital to Maheshwar south of Indore on the Narmada River.

Her father, Mankoji Rao Shinde, was the Patil of the village. Women then did not go to school, but Ahilyabai's father taught her to read and write.

She married Khande Rao in 1733. Ahilya accompanied Khande Rao on many campaigns. Throughout her married life, she was brought up by her mother-in-law, Gautama Bai, who is credited today for the values instilled in Ahilya. She trained her in administration, accounts, and politics, and eventually handed over her Khasgi Jagir in 1759.

In 1754, Khande Rao, alongside his father Malhar Rao Holkar, laid the siege of Kumher fort of Jat Raja Suraj Mal of Bharatpur on request of support from Imad-ul-Mulk and the Mughal emperor Ahmad Shah Bahadur's general Mir Bakhshi. Suraj Mal had sided with the Mughal emperor's rebellious wazir Safdar Jang. Khande Rao was inspecting his troops in an open palanquin during the battle when a cannonball fired from the Jat army hit him, leading to his death. After her husband Khande Rao's death, Ahilyabai had given up all desires of life and decided to perform Sati to accompany her husband at his funeral pyre. People requested her not to commit Sati, but she said her husband had pledged to accompany her lifelong, and now he has left midway. When she had made up her mind to perform Sati and was not relenting, it was finally her father-in-law Malhar Rao who made fervent emotional appeals to stop her.He said:

"Daughter, my son left me whom I raised with a hope that he would support me in my old age.

Now, will you also leave me, an old man, alone to be drowned in the fathomless ocean? ... Will you also leave me without any support? Still, if you don't want to change your mind, let me die first."

Twelve years later, her father-in-law, Malhar Rao Holkar, died. A year after that she was crowned as the queen of the Malwa kingdom. She tried to protect her kingdom from plundering invaders. She personally led armies into battle. She appointed Tukojirao Holkar as the Chief of Army.

Rani Ahilyabai was a great pioneer and builder of Hindu temples. She built hundreds of temples and Dharmashalas throughout India.

A letter to her from Malhar Rao in 1765 illustrates the trust he had in her ability when sending her on a military expedition to Gwalior with a huge artillery:

"...proceed to Gwalior after crossing the Chambal. You may halt there for four or five days. You should keep your big artillery and arrange for its ammunition as much as possible... The big artillery should be kept at Gwalior and you should proceed further after making proper arrangements for its expenses for a month. On the march you should arrange for military posts to be located for protection of the road."

This letter clearly shows that not only was Ahilyabai militarily trained, she was also considered capable enough to run civil and military affairs. When Ahmad Shah Durrani invaded Punjab in 1765, Malhar Rao was busy fighting the Abdali-Rohilla army in Delhi. During the same time, Ahilyabai captured the Gohad fort (near Gwalior).

Already trained to be a ruler, Ahilyabai petitioned Peshwa Madhav Rao I after Malhar Rao and her son's death to grant her the administration of the Holkar dynasty. Some in Malwa objected to her assumption of rule, but the Holkar faction of Maratha army sided with her. The Peshwa granted her permission on 11 December 1767, with subhedar Tukoji Rao Holkar (Malhar Rao's adopted son) as her military head. She proceeded to rule Malwa in the most enlightened manner, even reinstating a Brahmin who had previously opposed her. Ahilyabai paid regular visits to her subjects, being always accessible to anyone needing her help.

The order of Shivabhot Ahilyabai was considered to be the order of Lord Shiva, the rare seal of silver, which was made in the rule of the state and the rule of Goddess Ahilyabai, is still kept in the sanctum of Malhar Martand Temple. These seals were used in the time of Ahilya. After the order of Ahilya was stamped, the order letter was considered to be the order of Shiva. Four types of seals are still safe in the temple. Therefore saying Ahilya (1737 to 1795) ruled as a queen of Malwa for 28 years. In the reign of Ahilyabai, the entire people were happy with happiness and peace and prosperity. There was a lot, so people used to call them Lokmata.

Among Ahilyabai's accomplishments was the transformation of Indore from a small village to a prosperous and beautiful city; her own capital, however, was in the nearby Maheshwar, a town on the banks of Narmada River. She also commissioned several infrastructure projects in Malwa, sponsored festivals and gave donations for regular worship in many Hindu temples. Outside Malwa, she built numerous Hindu temples, Ghats, wells, tanks and rest-houses throughout the Indian subcontinent, stretching from the Himalayas to pilgrimage centres in southern India. The Bharatiya Sanskriti Kosh lists the sites she embellished as Kashi, Gaya, Somnath, Ayodhya, Mathura, Haridwar, Kanchi, Avanti, Dwarka, Badrinath Temple, Rameshwaram and Jagannath Puri. Ahilyabai also supported the rise of merchants, farmers and cultivators to levels of affluence and did not consider that she had any legitimate claim to their wealth, be it through taxes or feudal right.

There are many stories of her care for her subjects. In one instance, when her minister refused to allow the adoption of a child unless he was suitably bribed, she is said to have sponsored the child herself and given him clothes and jewels as a part of the adoption ritual.

Ahilyabai's capital at Maheshwar was the scene of literary, musical, artistic and industrial enterprise. She patronized the famous Marathi poet Moropant and the shahir Anantaphandi from Maharashtra, and also patronised the Sanskrit

scholar, Khushali Ram. Craftsmen, sculptors and artists received salaries and honours at her capital and she even established a textile industry in Maheshwar.

Ahilyabai repealed a traditional law that had previously empowered the state to confiscate the property of childless widows.

Accordig to Nehru,"The reign of Ahilyabai, of Indore in central India, lasted for thirty years. This has become almost legendary as a period during which perfect order and good government prevailed and the people prospered. She was a very able ruler and organizer, highly respected during her lifetime, and considered as a saint by a grateful people after her death."

Ahilyabai's extraordinary ability won her the regard of her subjects and of the other Maratha confederates, including Nana Phadnavis. With the natives of Malwa ... her name is sainted and she has styled an avatar or Incarnation of the Divinity. In the soberest view that can be taken of her character, she certainly appears, within her limited sphere, to have been one of the purest and most exemplary rulers that ever existed.

This great ruler in Indore encouraged all within her realm to do their best, Merchants produced their finest clothes, trade flourished, the farmers were at peace and oppression ceased, for each case that came to the queen's notice was dealt with severely. She loved to see her people prosper, and to watch the fine cities grow, and to watch that her subjects were not afraid to display their wealth, lest the ruler should snatch it from them. Far and wide the roads were planted with shady trees, and wells were made, and rest-houses for travelers. The poor, the homeless, the orphaned were all helped according to their needs. The Bhils who had long been the torment of all caravans were routed from their mountain fastnesses and persuaded to settle down as honest farmers.

Once Ahilyabai's son Malojirao was passing on his chariot, passing through Rajbara. At the same time, the small calf of the cow was standing along the path. As soon as the chariot of Malorav passed away from there, the jumping and the talakata calf came in the grip of the chariot and was badly injured. In a while, he died and died there. By ignoring this incident, Malojirao moved forward. After this the cow sat on the death of her calf. She was not leaving her calf. After a while Ahilyabai was also going through there. Then she saw a cow sitting near the calf, she stopped. They were given information. No one was ready to tell. Eventually someone dared that the calf in the grip of the chariot of Maloji died. After knowing this developments, Ahilya called the Dharmapati Menabai in the court and asked if a person kills his son in front of someone's mother, what is the penalty? Menabai responded immediately that he should be given death penalty. After this Ahilyabai ordered that his son should be tied to the hands and feet of Malojira and he would be kept in the same way by crushing the chariot, the cow's calf was killed. The son had climbed the chariot himself. Devi Ahilyabai After this order, no person was ready to become a charioteer. When no one was stuck in that chariot, Ahilyabai himself came and sat on the chariot. When he was moving forward, there was such an incident, which surprised everyone. The same was standing in front of the cow chariot. When the cow was removed after the order of Ahilyabai, he would have been standing in front of the chariot again and again. This country court ministers urged the Queen that it does not even want a cow that there is such a incident with the son of another mother. So this cow is also demanding mercy. The cow was in his place and the chariot was stuck there. In the place where the incident took place near Rajbada, all the people know in the name of 'Haad Bazar'. The order of Shivabhot Ahilyabai was considered to be the order of Lord Shiva, the rare seal of silver, which was made in the rule of the state and the rule of Goddess Ahilyabai, is still kept in the sanctum of Malhar Martand Temple. These seals were used in the time of Ahilya. After the order of Ahilya was stamped, the order letter was considered to be the order of Shiva. Four types of seals are still safe in the temple. Therefore saying Ahilya (1737 to 1795) ruled as a queen of Malwa for 28 years. In the reign of Ahilyabai, the entire people were happy with happiness and peace and prosperity. There was a lot, so people used to call them Lokmata. He always gave his kingdom and his people to move forward. Due to being passed and revered to Narmada due to Narmada, he made Maheshwar his capital. ❑

Maharani Ahilyabhai Holkar and Bharat

Prof. TS Girish Kumar

Retd. Professor in Philosophy, MSU, Vadodara, Gujrat.

Dr. Harsh Narain of Lucknow, who was my professor, taught us that "MulyamvaiBharatam…", that Bharat is not simply any geo-political entity but is a 'Mulya' and a 'Sanskriti'. These apart, I would add that Bharat also has an auto – built in – method of correction, self-correction as well as refinement technique, which spontaneously goes on from time to time as required. This, precisely is what Bhagavad Gita teaches also through the famous expression "….sambhavamiyugeyuge". let us make a trip through history to get this demonstrated to us with real vivacity and strength, given the hardships befell on our mother land and the reactions to them by archetype Bharatiyas.

Some autochthones of Bharat

Let me narrate three 'epochs' in the history of Bharat those made much differences and impacts. The first autochthone who re-established the glory of Santana Dharma in Bharat is Adi Shankaracharya, who, without any disturbances to anyone or anything completed the process. He lived only thirty-two years, but brought back the authority and authenticity of Hindu Dharma. Established four Mutts in four corners of Bharat for the four Vedas, and changed Bharat so completely in a manner that no one could have imagined. That was intellectual invasion by Shankara and the Shankara Digvijaya.

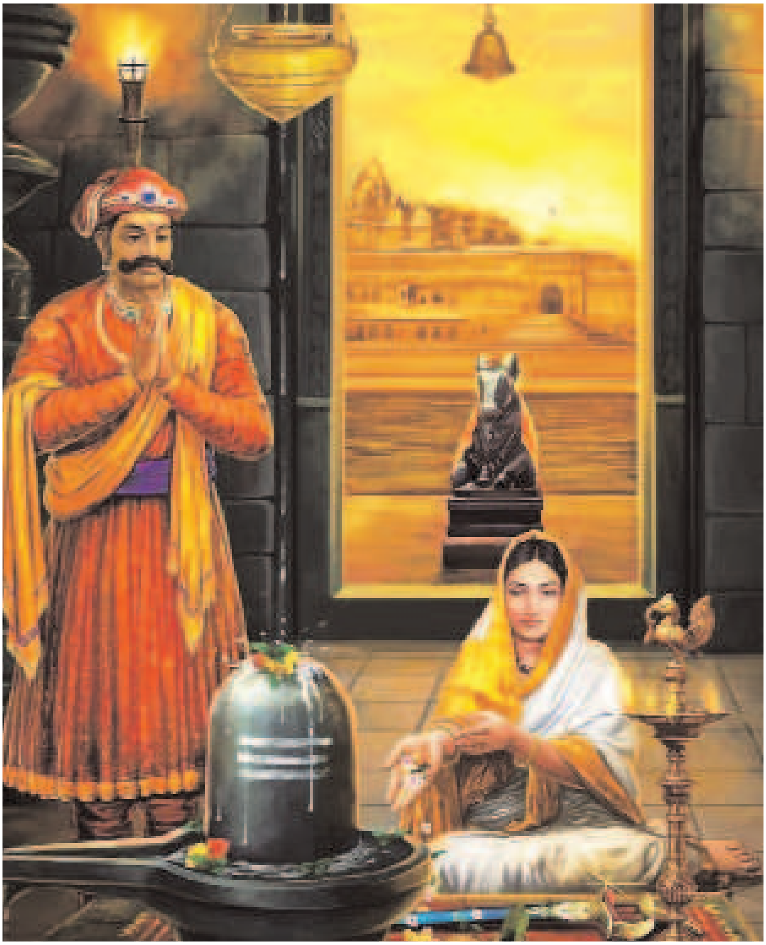

The second autochthone is Chhatrapati Shivaji Maharaj. When the Hindus were reeling under the unscrupulously oppressive Muslim pressure and torture, it was Shivaji Maharaj who gave strength and vitality to the Hindus of Bharat. He could give them in their own style, he fought them with valor and spirit and brought them down. With Shivaji Maharaj, the mighty Marathas started taking the Hindu cause seriously and the result is available to us through history.

It is after the Maratha rise, the empire widened, many places came under the Hindu rule through the Marathas and for the second time, Hindu glory was getting re-established. For instance, we have the Gaikwads in Baroda, Sindhias in Gwalior as well as the Holkars in Indore. Apart from these, there were the Peshwas and many others who became very powerful Hindu kings against the Muslim invasions. But the Marathas became one with the places and

people wherever they went, their simple concern was the Hindu Dharma.

The third autochthones are many in numbers, but I would mention two, namely Maharishi Aurobindo and Swami Vivekananda who made the people of Bharat conscious Hindus. Shri Aurobindo was more intellectual and political, but Swami Vivekananda was more practical.

The Holkars

The Holkars of Maheswar (Indore) have the same legacy from Shivaji Maharaj. Among the Holkars, Maharani Ahilyabhai's name is most prominent and powerful. She is like Maharaja Sayajirao of Baroda, who had really been a great visionary in making Baroda what it is now. His innovations did not confine to development and education; he had also brought cooking gas through pipelines during those days itself (unimaginable then) apart from planning water supplys, sewages etc.

Maharani Ahilyabhai Holkar

She was born on the 31st of May, 1725 in Chaudi, Ahammadnagar, Maharashtra. The then Holkar king of Indore finds her in a temple while travelling, and after finding her special and spiritual, brings her as his daughter in law by getting her married to his son Khanderao Holkar. Unfortunately, Khanderao gets killed in a battle at Kumbher in 1754, and Ahilyabhai was widowed. When Malharrao dies after twelve years, in time, Ahilyabhai had to become the queen of the Malwa Maratha kingdom. She ruled for a long 28 years, and died at the age of seventy, on 13th of August, 1795. Her rule was the glorious period for Indorians. The famous Maheswari sarees and textiles are her creation apart from many roads and other institutions for society apart from her focus on women empowerment through education also.

She also had to fight battles against the Muslims and she herself went to battle. The most important contribution of Maharani Ahilyabhai is her contributions to the Hindu Dharma. By her time, the Muslims had already destroyed many Hindu temples ruthlessly. She had made it a point to reconstruct many of them, in whichever possible manner. The Kashi Viswanath temple also is reconstructed by Maharani Ahilyabhai, and in spite of her noble efforts, we all had seen the plight of Varanasi before BJP government. One has to say, that it took a Narendra Modi to continue the efforts of Maharani Ahilyabhai Holkar – such were the visions of the Maharani.

The most important contribution of Maharani Ahilyabhai is her contributions to the Hindu Dharma. By her time, the Muslims had already destroyed many Hindu temples ruthlessly. She had made it a point to reconstruct many of them, in whichever possible manner. The Kashi Viswanath temple also is reconstructed by Maharani Ahilyabhai, and in spite of her noble efforts, we all had seen the plight of Varanasi before BJP government. One has to say, that it took a Narendra Modi to continue the efforts of Maharani Ahilyabhai Holkar – such were the visions of the Maharani.

In short, Maharani Ahilyabhai Holkar is yet another epoch in the history of Bharat and Hindu Dharma. We owe inexpressible gratitude to such persons – and quoting Shakespeare, our gratitude to such Bharatiyas are "beyond words to surrender…" ❑